प्रकाशक:—

सम्यग्-ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

सम्पादकः—

उपाध्याय पं० रत्न श्री हस्तीमलजी महाराज

प्रकाशन मे प्रूफ देखने मे सहायकः—

१. पं० श्री पारसमुनि म० सा०

२. बस्तीमलजी चोरडिया भोपालगढ

मूल्य—एक रुपया

प्रतियां—७००

द्रव्य सहायकः--

श्रीमान् कल्याणमलजी भूरालालजी पारलेचा धनोप

पर्यूषण पर्व सं. २०२२ सन् १९६५

मुद्रक —

जिनवाणी प्रिन्टर्स. कोटेवालों का रास्ता, जयपुर

फोन ७५९९७

प्रारंभिक उद्गार

धर्म शास्त्र की महिमा

शब्द शास्त्र के नियमानुसार शासन करने वाले या मानव मन को अनुशासित बनाने वाले ग्रन्थ को शास्त्र कहते हैं जो तद् तद् विषयानुकूल अनेक प्रकार के होते हैं—जैसे अर्थ शास्त्र, काम शास्त्र, भाषा शास्त्र, समाज शास्त्र, व्याकरण शास्त्र, वास्तु शास्त्र, रसायन शास्त्र, नीति शास्त्र और धर्म शास्त्र आदि। उपर्युक्त अन्य शास्त्र जहा मनुष्य की भौतिक इच्छा, शाब्दिक ऊहा पोह, रस परिज्ञान एव कामादि लालसा को जागृत कर उसे स्वार्थ परायण और संघर्षशील बनाते हैं, वहा धर्म शास्त्र मानव को भौतिक प्रपच से मोडकर कर्त्तव्य-परायण, आत्माभिमुखी और विश्व हितैषी बनाता है। वह मानव की कलुषित बहिर्मुखी मनोवृत्ति को दबाकर उसे पुण्यानुबन्धी अन्तर्मुखी बनने की प्रेरणा देता है। जैसे पारस का सम्पर्क लोह को बहुमूल्य सुवर्ण बना देता है, वैसे धर्म शास्त्र भी आत्म परायण नर को नारायण बना देता है, इसलिए किसी अनुभवी विद्वान् ने ठीक ही कहा है कि—

श्लोको वरं परम तत्त्व-पथ प्रकाशी,
न ग्रन्थ-कोटि-पठनं जन-रंजनाय।
सजीवनीति वर मौषधमेकमेव,
व्यर्थ श्रमस्य जननो नतु मूल-भार।

अर्थात् परम तत्व के मार्ग को बताने वाला एक श्लोक भी अच्छा किन्तु जन रंजन के लिए करोडो ग्रन्थो का पढना श्रेष्ठ नही। सजीवनी जड़ी

का एक टुकडा भी अच्छा किन्तु व्यर्थ में भार वहन कराने वाला मूले का भार हितकर नही।

धर्म शास्त्र की इस महिमा के कारण ही महर्षियो ने इसकी श्रुति दुर्लभ वतायी है। जैसा कि—

"सुई धम्मस्स दुल्लहा" वस्तुत ससार को सन्मार्ग पर ले चलने का सारा श्रेय धर्म शास्त्र को ही है।

धर्म शास्त्र और द्वादशांगी

महिमाशाली होकर भी साधारण धर्म शास्त्र मानव जगत का उतना कल्याण नही कर पाते जितना कि उनसे अपेक्षित है। जिनके गायक या रचयिता स्वय ही सरागी, स्वार्थी एव अज्ञान युक्त हैं, वे ग्रन्थ भला मानव का अभिलपित उपकार कहा तक कर सकते हैं ? अत वीतराग। आप्त पुरुषो की वाणी या तदनुकूल सत्पुरुपो की वाणी ही मानव-कल्याण मे समर्थ मानी गई हैं। अनादिकाल की नियत मर्यादा है कि तीर्थ कर भगवान को जव केवल ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तव वे श्रुत धर्म और चारित्र धर्म की देशना देकर चतुर्विध सघ की स्थापना करते हैं। उस समय उनके परम प्रमुख शिष्य गणधर प्रत्यक्षदर्शी तीर्थ करो की अर्थ रूपी वाणी को ग्रहण कर उसे सूत्र रूप मे गू थते जैसे चतुर माली लता से गिरे हुए फूलो को एकत्र कर हार वनाता और उससे मानव का मनोरजन करता है।

इसी प्रकार गणधर द्वारा रचे गए वे प्रमुख शास्त्र ही द्वादशागी के नाम से कहे जाते है—जैसा कि कहा है—

अत्थ भासइ अरहा, सुत्त गथति गणहरा निउणं।
सासणस्स. हियट्ठाए तओ सुत्त पवत्तइ ।

अर्थात् तीर्थ कर भगवान अर्थ रूप वाणी फरमाते और गणधर उसको ग्रहण कर शासन हित के लिए निपुणता पूर्वक सूत्र की रचना करते हैं।

तब सूत्र की प्रवृत्ति होती है। शब्दरूप से सादि सात होकर भी यह द्वादशागी श्रुत अर्थ रूप से नित्य एव अनादि अनन्त कहा गया है। देखिये नन्दी सूत्र—

से जहा नामए पच अत्थि काया न कयाइ नासी न कयाइ न भवइ. न कयाइ न भविस्सइ, भुविंच, भवइय, भविस्सइय, धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे, एवामेव दुवालसगे गणिपिडगे न कयाइनासी।

अर्थात् पचास्तिकाय की तरह कोई भी ऐसा समय नही था, नही है, और नही होगा जबकि द्वादशागी श्रुत नही था, नही है या नही रहेगा। अत यह द्वादशागी नित्य है। जैसाकि पहले कह गए है-शब्द रूप से द्वादशागी सादि सान्त है। प्रत्येक तीर्थ कर के समय गणधरो द्वारा इसकी रचना होती है। फिर भी अर्थरूप मे यह नित्य है। इस प्रकार महर्षियो ने शास्त्र की अपौरुषेयता का भी समाधान कर दिया है। उन्होने अर्थरूप से शास्त्र ज्ञान को नित्य अपौरुषेय एव शब्द रूप मे सादि पौरुषेय कहा है।

श्वेताम्वर परम्परा के अनुसार अब भी द्वादशागी के ग्यारह अग शास्त्र विद्यमान है। और सुधर्मा स्वामी की वाचना प्रस्तुत होने से- इनके रचनाकार भी सुधर्मा स्वामी माने गए हैं। आचाराग १, सूत्रकृताग २, स्थानाग ३, समवायाग ४, विवाह प्रज्ञप्ति ५, ज्ञाताधर्म कथा ६, उपासक दशा ७, अतकृत दशा ८, अनुत्तरौपपातिक दशा ६, प्रश्न व्याकरण १०, और विपाक सूत्र ११। इनमे अन्तकृत दशा का आठवा स्थान है। उपाग, मूल, छेद और प्रकीर्ण सूत्रो की अपेक्षा प्रधान होने से इनको अग शास्त्र माना गया है।

नाम और महत्व

प्रस्तुत शास्त्र "अ तगडदसा" के नाम की सार्थकता स्वयं इसके अध्ययन से विदित हो जाती है। यद्यपि मोक्षगामी पुरुषो की गौरव गाथा तो अन्य शास्त्रो मे भी प्राप्त होती है, पर इस शास्त्र में केवल उन्ही सत सतियो के जीवन परिचय हैं, जिन्होने इसी भव से जन्म-जरा-मरण रूप भवचक्र

का अ त कर दिया अथवा अष्ट विध कर्मों का अन्त कर जो सिद्ध–बुद्ध–मुक्त हो गए। सदा के लिए ससार लीला को अन्त करने वाले 'अ तगड' जीवो की साधना दशा का वर्णन करने से ही इसका 'अ तगड दसाओ, नाम रक्खा गया है।

इसके पठन पाठन और मनन से हर भव्य जोव को अन्त क्रिया की प्रेरणा मिलती है, अत यह परम कल्याणकारी ग्रन्थ है। उपासक दशा में एक भव से मोक्ष जाने वाले श्रमणोपासको का वर्णन है, किन्तु इस आठवें अङ्ग 'अंन्तकृत दशा' में इसी जन्म से सिद्धि मिलाने वाले उत्तम श्रमणो का वर्णन है। अत लोक जीवन में परम-मगलमय होने से इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

वर्णन शैली

ग्रन्थो की रोचकता उसकी र्णन शैली से भी आकने की प्रथा है। अच्छी से अच्छी बाते भी अरोचक ढग से कहने पर उतना असर नही डालती जितना कि एक साधारण बात भी सुन्दर और सुव्यवस्थित ढग से कहने पर श्रोतृ–चित्त को आकृष्ट कर लेती है। प्रस्तुत ग्रन्थ की वर्णन शैली भी व्यवस्थित है। इसमे प्रत्येक साधक के नगर, उद्यान, चैत्य–व्यतरायतन, राजा, माता-पिता, धर्माचार्य, धर्मकथा, इहलोक एव परलोक की ऋद्धि, पाणिग्रहण और दाति-प्रीतिदान, भोगों का परित्याग, प्रव्रज्या, दीक्षाकाल, श्रुतग्रहण, तपोपधान, सलेखना और अन्त क्रिया स्थान का उल्लेख किया गया है।

'अन्तगडदशा' मे वर्णित साधक पात्रो के परिचय से प्रगट होता है कि श्रमण भगवान महावीर के शासन में विभिन्न जाति एव श्रेणी के व्यक्तियो को साधना में समान अधिकार प्राप्त था। एक ओर जहा बीसियो राजपुत्र-राजरानी और गाथापति साधना-पथ मे चरण से चरण मिला कर चल रहे हैं, दूसरी ओर वही कतिपय शूद्र, और हत्यारा माली आदि भी ससम्मान आगे बढ रहे हैं। कर्मक्षय कर सिद्ध–बुद्ध एव मुक्त होने मे किसी को कोई रुकावट नही, बाधा नही। "हरि को भजे सो हरि को होई" वाली लौकिक नीति अक्षरश चरितार्थ

हुई है। कितनी समानता-समता और आत्मीयता भरी थी उन सूत्रकारो के मन मे ? वय की दृष्टि से अतिमुक्त जैसे बाल मुनि और गज सुकुमार जैसे राजप्रासाद के दुलारे भी सिद्धि मिला सके। शास्त्रकार की वह रचना शैली विश्व के मानव मात्र को कल्याण साधन मे पूर्णरूप से प्रेरित एवं उत्साहित करती है।

परिचय

समवायाग मे "अन्तगडदसा" का परिचय इस प्रकार मिलता है—अन्तगडदशा मे अन्तकृत आत्माओ के नगर, उद्यान, चैत्य—व्यतरालय, वनखड, राजा, माता पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, लौकिक और पारलौकिक ऋद्धि, भोग परित्याग, प्रव्रज्या, श्रुतग्रहण, उपधान—तप, प्रतिमा, बहुत प्रकार की क्षमा, आर्जव, मार्दव, शौच और सत्य सहित १७ प्रकार का सयम, उत्तम ब्रह्मचर्य अकिंचनता, तपः क्रिया और समिति गुप्ति तथा अप्रमाद योग, उत्तम सयम प्राप्त पुरुषो के स्वाध्याय—ध्यान का लक्षण। चार प्रकार के घाति कर्म क्षय करने पर जैसे केवल ज्ञान की प्राप्ति। जितना जिन्होंने सयम का पालन किया—पादोपगमन सथारा और जहा जितने भक्त का छेदन करके अन्तकृत मुनिवर अज्ञान रूप अन्धकार से मुक्त हो सर्व श्रेष्ठ मुक्तिपद प्राप्त किए। ऐसे अन्यान्य वर्णन भी इसमे विस्तार के साथ कहे गए हैं।

अन्तकृतदशा सूत्र की परिमित वाचना एव सख्येय अनुयोग द्वार हैं, यावत् सख्येय सग्रहणी है। अङ्ग की अपेक्षा यह आठवा अङ्ग है इसके एक श्रुत स्कन्ध—दश अध्ययन और सात वर्ग हैं। दश उद्देशन काल और दश ही समुद्देशन काल बतलाए है। सम० पृ० २५१ (हैदराबाद वाला)

नन्दी सूत्र गत परिचय से समवायाग के इस परिचय मे यह विशेषता है कि यहां क्षमा, आर्जव, मार्दव, शौच आदि यति धर्म का स्वरूप बताने के साथ स्वाध्याय और ध्यान का लक्षण बताया गया है। सम्भव है आज का 'अन्तगड-दशा' कोई भिन्न वाचना का हो। इसमे स्त्री पुरुष, बालक और वृद्ध साधको

की कठोर साधना गायी गई है। महामुनि गज सुकुमाल के आत्मध्यान का भी वर्णन है। पर उसमे ध्यान की विशेष परिपाटी या लक्षण का पृथक् कोई अस्तित्व नही मिलता। कदाचित् नक्षेपीकरण के समय देवर्द्धिगणी ने कम कर दिया हो, अथवा प्राप्त वाचना मे इसी प्रकार का पाठ हो।

अध्ययन और वर्ग का परिचय भी समवायाग सूत्र मे भिन्न प्रकार से है, नन्दीकार जहा "अन्तगडदसा" का एक श्रुत स्कन्ध, आठ वर्ग और आठ ही उद्देशन काल बताते है, वहा समवायाग मे एक श्रुत स्कन्ध, दश अध्याय तथा ७ वर्ग बतलाए हैं। आचार्य श्री अमोलक ऋषिजी म० ने दश अध्याय का एक वर्ग और सात वर्ग यो आठ वर्ग लिखे हैं। पर उद्देशन काल दश कहे हैं, जबकि नन्दी सूत्र मे आठ उद्देशन काल बतलाए है। इससे प्रमाणित होता है कि समवायाग सूत्र निर्दिष्ट 'अन्तगडदसा' वर्तमान 'अन्तगडदशा' से कोई भिन्न था। वर्तमान मे उपलब्ध सूत्र ही नन्दी सूत्र मे निर्दिष्ट अन्तगडदसा हैं।

अन्तगडदशा की तपः साधना

अन्तकृतदशा सूत्र के वर्णनो पर गहराई मे चिंतन किया जाय तो साधना क्षेत्र की विविध सामग्रिया उपलब्ध होती हैं।

सामान्य तौर से सयम और तप की विमल साधना से मुक्ति की प्राप्ति मानी गई है। सयम का साधन ज्ञानपूर्वक ही होता है, अत उसके लिए जीवाजीवादि का तत्व ज्ञान आवश्यक माना गया है। विषय कषाय को जीतने के लिए ज्ञान या ध्यान का बल पुष्ट साधन है और तप, ज्ञान ध्यान का साधन है, अथवा ज्ञान ध्यान स्वय भी एक प्रकार का तप है। फिर भी व्यवहार दृष्टि से यह जिज्ञासा हो सकती है कि ज्ञान साधना से मुक्ति होती है ? या ध्यान से अथवा कठोर तप साधन से या कि उपशम से ?

अन्तगडदशा सूत्र के मनन से ज्ञात होता है कि गौतम आदि, १८ मुनियों के समान १२ भिक्षु प्रतिमा एव गुणरत्न-सवत्सर तप की साधना से भी साधक कर्म क्षय कर मुक्ति मिला लेता है। अनीक सेनादि मुनि १४ पूर्व के ज्ञान मे

रमण करते हुए सामान्य वेले २ की तपस्या से कर्म क्षय कर मुक्ति के अधिकारी वन गए। अर्जुनमाली ने उपशमभाव-क्षमा की प्रधानता से केवल छह मास बेले २ की तपस्या कर सिद्धि मिलाली। दूसरी ओर अतिमुक्त कुमार ने ज्ञान-पूर्वक गुण-रत्न तप की साधना से सिद्धि मिलाई और गज सुकुमाल ने विना शास्त्र पढे और लम्बे समय तक साधना एव तपस्या किए विना ही केवल एक शुद्ध ध्यान के बल से ही सिद्धि प्राप्त करली। इससे प्रकट होता है कि ध्यान भी एक बडा तप है।

काली आदि रानियो ने सयम लेकर कठोर साधना की और लम्बे समय से सिद्धि मिलाई। इस प्रकार कोई सामान्य तप से, कोई कठोर तप से, कोई क्षमा की प्रधानता से तो कोई अन्य केवल आत्म ध्यान की अग्नि मे कर्मों को झोंक कर सिद्धि के अधिकारी वन गए।

मथितार्थ यह है कि शास्त्रो का गम्भीर अभ्यास और लम्बे काल का कठोर तप चाहे हो या न हो, यदि कर्म हल्के हैं और आत्मध्यान मे मन अडोल है तो अल्प काल मे भी मुक्ति हो सकती है।

विविध प्रकार के तप

अन्तगडदसा सूत्र मे ध्यान की साधना का तो स्पष्ट रूप नही मिलता, पर तपस्या के अनेको प्रकार उपलब्ध होते है। सर्व प्रथम १२ भिक्षु प्रतिमाओ का वर्णन है, जिनका विस्तृत उल्लेख दशाश्रुत स्कध मे मिलता है। दूसरा गुण रत्न सवत्सर तप है जो गौतम कुमार आदि मुनियो के द्वारा साधा गया है। इसके लिए सैलाना से प्रकाशित अन्तगडदसा के टिप्पण मे ऐसा लिखा है कि प्राचीन धारणा के अनुसार इसका आराधन ऋतुवद्ध काल याने ८ मास मे पूरा होना लिखा है, परन्तु भगवती सूत्र शतक २ उद्देश १ मे खदक मुनि के अधिकार मे इसका रूप इस प्रकार उपलब्ध होता है। जैसे—पहले महिने एकातर उपवास का पारणा करना, दूसरे महिने मे दो दो उपवास का पारणा करना, तीसरे महिने तीन तीन उपवास का पारण करना, चौथे महिने ४–४ उपवास का पारना, पाचवें महिने मे ५–५ का—छठे महिने मे ६–६ का—इस प्रकार

वढते हुए १६वें महिने मे १६।१६ उपवास का पारणा करना, दिन को उत्कट ग्रासन से ग्रातापना लेना ग्रौर रात मे वीरासन मे खुले वदन डास ग्रादि के परिपह सहना। यह इस तप का स्वरूप वताया गया है।

तीसरा तप है रत्नावली—इसमे एक उपवास से लेकर ऊँचे १६ तक की तपस्या चढाव उतार से की जाती है। मध्य मे वेले ग्रौर ग्रादि ग्रन्त मे उपवास, वेला तेला की तपस्या की जाती है। चारो परिपाटियों मे चार वर्ष ३ मास ग्रौर ६ दिन तप के ग्रौर ३५२ पारणा के दिन होते हैं।

चौथा तप है कनकावली—रत्नावली के समान ही इसमे भी उपवास से १६ तक तप का चढाव उतार होता है ग्रन्तर केवल इतना है कि इसमे ३ स्थान पर रत्नावली के पष्ठ तप के वदले ग्रष्टम तप किया जाता हैं। चारो परिपाटी मे ४ वर्ष ९ मास ग्रौर २६ दिन का तप ग्रौर ३५२ पारणे होते है। एक परिपाटी मे १ वर्ष दो मास ग्रौर १४ दिन का तप तथा ८८ पारणे होते हैं।

पाचवा तप है लघुसिंह निष्क्रीडित—इसमे जैसे शेर ग्रागे पीछे कदम रखता है, वैसे ही उपवास से लेकर ५ तक की तपस्या मे ग्रागे वढना ग्रौर पीछे हटना। इस प्रकार ४ परिपाटियें की जाती है। एक मे ५ मास ग्रौर ४ दिन के तप एवं ३३ पारणे होते है। चार के १ वर्ष ८ मास १६ दिन के तप ग्रौर १३२ पारणे होते हैं।

छठा तप महासिंह निष्क्रीडित—इसमे ऊँचे से ऊँचे १६ तक का तप होता है। साधना काल ६ वर्ष २ मास ग्रौर १२ दिन मे ५ वर्ष ६ मास ग्रौर ८ दिन तप के तथा २४४ पारणे होते हैं।

सातवा तप सप्त सप्तमीका भिक्षु प्रतिमा,
ग्राठवा ग्रष्ट ग्रष्टमिका ,, ,,
नवमा नव नवमिका ,, ,,
ग्रौर दशवा दश दशमिका भिक्षु प्रतिमा हैं—

ये चारो तप साधुओ की अपेक्षा से कहे गए है। इन चारो प्रतिमाओ मे भोजन के दाती की अपेक्षा तप का आराधन किया जाता है। सप्त सप्तमिका मे प्रथम सप्ताह मे एक दत्ति भोजन की व एक दत्ति जल की, दूसरे सप्ताह मे दो दो, यावत् सातवे सप्ताह मे सात दत्ति भोजन की, और सात ही जल की ग्रहण की जाती है। इसके तप दिन ४९ होते हैं। ऐसे अष्ट अष्टमिका के ६४ दिन, नव नवमिका के ८१ दिन और दश दशमिका के १०० दिन होते हैं। दिन के प्रमाण मे प्रथम अष्टक मे १ दत्ति और आठवें मे आठ दत्ति। इस प्रकार नव नवमिका मे नव दिन और दशमिका मे दश दिन से एक एक दत्ति बढानी चाहिये।

ग्यारहवा तप लघु सर्वतोभद्र प्रतिमा है इसमे अनानुपूर्वी क्रम से १ उपवास से ५ उपवास तक ५ लाइन की जाती है। एक परिपाटी मे ७५ दिन का तप और २५ पारणे होते हैं। इस प्रकार चार परिपाटी मे तप की पूर्ण आराधना की जाती है।

बारहवा महासर्वतोभद्र तप है, इसमे १ उपवास से ७ उपवास तक पूर्व कथित प्रकार से किये जाते हैं। एक परिपाटी मे १९६ दिन तप और ४९ पारणे होते हैं।

तेरहवी भद्रोत्तर प्रतिमा है इस तप मे ५।६।७।८।९ इस प्रकार अनानुपूर्वी से पाच पक्ति मे तपस्या की एक परिपाटी पूर्ण होती है। जिसमे ६ मास २० दिन का समय लगता है। तप के दिन १७५ और २५ पारणे होते हैं।

चौदहवाँ आयबिल वर्धमान तप है। इसमे १ से १०० तक आयबिल बढाये जाते हैं। पारणा के दिन बीच मे उपवास किया जाता है। आयंबिल के कुल दिन ५०५० और १०० दिन के उपवास होते हैं। साधारणसा दिखने पर भी यह तप बडा महत्वशाली और कठिन है।

पन्दरहवा मुक्तावली तप है। इसमे ऊंचे से ऊचा १६ तक का तप

होता है। एक परिपाटी मे २८५ दिन का तप और ६० पारणे होते है। चारो परिपाटी ३ वर्ष और १० मास मे पूर्ण की जाती है।

पर्यूषण में अन्तगड का वाचन

बहुतबार यह जिज्ञासा होती है कि पर्यूषण मे अन्तगड का वाचन आवश्यक क्यो माना जाता है ? अन्य किसी सूत्र का वाचन क्यो नही किया जाता ? बात ठीक है, शास्त्र सभी मागलिक है और उनका पर्व दिनो मे वाचन भी हो सकता है कोई दोष की बात नही है। विचार केवल इतना ही है कि पर्वाधिराज के इन अल्प दिनो मे वैसे सूत्र का वाचन होना चाहिये जो आठ ही दिनो मे पूरा हो सके और आत्म साधना की प्रेरणा देने मे भी पर्याप्त हो, अग या उपाग शास्त्रो मे ऐसा कोई अग सूत्र नही जो इस मर्यादित काल मे पूरा हो सके। अनुत्तरौपपातिक दशा है तो वह अति लघु होने के साथ उतनी प्रेरक सामग्री प्रस्तुत नही करता। फिर उसमे वर्णित साधक अनुत्तर विमान के ही अधिकारी होते है, मोक्ष के नही। परन्तु अन्तकृतदशा मे ये दोनो बातें है, वह अति लघु या अति महत् आकार मे नही है, साथ ही उसमे ऐसे ही साधकों की जीवन गाथा है जो तप सयम से कर्म क्षय कर पूर्णानन्द के भागी बन चुके है। अन्तकृतदशा के उद्देश समुद्देश का काल भी ८ दिन का है। और पर्यूषण का अष्टान्हिक पर्व भी अष्टगुणो की प्राप्ति एव अष्ट कर्मो की क्षीणता के लिये है। अत पर्यूषण मे इसी का वाचन उपयुक्त है। प्रस्तुत सूत्र मे छोटे बडे वैसे साधको की जीवन गाथा बताई है कि उससे आबाल वृद्ध सब नर नारी प्रेरणा पा सके और अपनी योग्यता के अनुसार साधना कर आत्मा का विकास करे यही खास कारण है कि पूर्वाचार्यो ने पर्यूषण के अष्टान्हिक पर्व में आठ वर्ग वाले इस मगलमय शास्त्र का बोधप्रद वाचन निश्चित किया।

जैसे मगल हेतु एव ऐतिहासिक परिचय प्रदान करने को कल्पसूत्र में महावीरादि के पच कल्याण और पट्टावली का वाचन आवश्यक माना गया है, वैसे ही आत्म साधना में प्रेरणा प्रदान करने के लिए अन्तकृतदशा का वाचन भी आरम्भ किया गया हो, वीर निर्वाण ९९३ के समय कल्प सूत्र का सामूहिक

वाचन होने लगा, सभव है उस समय साधना प्रेमी सतो ने यह सोचकर कि कल्प मे केवल तीर्थंकर भगवान् की गुण गाथा हैं। चतुर्विध संघ को साधना के लिये वैसी प्रेरणा दायक सामग्री नही है अत. इसका वाचन आवश्यक माना हो, अथवा तो समाज में आडम्बर और जन्म महोत्सव की भक्ति आदि की ओर बढते मोड को बदलने के लिये अन्तकृतदशा का वाचन चालू किया हो। इतना सुनिश्चित है कि पर्वाधिराज में अन्तगडदशा का वाचन सहेतुक एव उपयोगी है।

प्राप्त टीका और प्रकाशन

अन्तगडदशा पर कुछ टीका ग्रंथ है, जैसे—अभयदेवसूरि कृत सस्कृत टीका, प्राचीन टब्बा, पडित रत्न श्री घासीलालजी महाराज कृत सस्कृत टीका। एव हिन्दी, गुजराती, अनुवाद प्राप्त होते हैं। इस सूत्र के अनेक स्थानो से मूल टीका और अनुवाद के प्रकाशन हो चुके हैं। उनमें—

१—सर्व प्रथम राय धनपतिसिह वहादुर का टीका और गुजराती टब्बा सहित अतिशुद्ध नही होने पर भी इसका बडा उपयोग हुआ, कागज साधारण होने से वह अधिक स्थिर नही रह सका।

२—आगमोदय समिति सूरत से सशोधित, सयुक्त प्रकाशन—अन्तकृतदशा और अनुत्तरौपपातिक सटीक।

३—पूज्य अमोलखऋषि जी महाराज कृत हिन्दी अनुवाद, लाला ज्वाला-प्रसाद जी की ओर से, हैदराबाद का प्रकाशन।

४—पडित रत्न श्री घासीलाल जी महाराज कृत सस्कृत टीका और हिन्दी गुजराती अनुवाद सहित, अहमदाबाद।

५—उपाध्याय श्री प्यारचन्द जी महाराज कृत हिन्दी भाषा अनुवाद सहित।

६—पडित घेवरचन्द जी बाठिया द्वारा अनुदित मूल अनुवाद, सैलाना। यह पुस्तकाकार एव सरल है।

७-सुत्तागम समिति 'गुड़गांव' और अमोल जैन ज्ञानालय धूलिया से प्रकाशित मूल। धूलिया की प्रति प्रायः शुद्ध एवं सुवाच्य होने के साथ विशिष्ट शब्द कोष सहित है। इसके अतिरिक्त एक दो गुजराती संस्करण भी होंगे।

उपरोक्त प्रकाशनों से मूल और संस्कृत-भाषा विज्ञों के लिए तो पूर्ति हो जाती है, किन्तु शुद्ध मूल के साथ शब्दानुगामी अर्थ की जिज्ञासा रखने वाले पाठकों की आवश्यकता पूर्ण नहीं होती। उक्त पर्युषण के दिनों में प्रायः सर्वत्र इसका वाचन होता है। इसी आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए सूत्र का मूल संशोधन के साथ भावानुवाद भी तैयार करना आवश्यक हुआ। अब तक के अनुवादों की अपेक्षा इसमें यह खास ध्यान रखा गया है कि अनुवाद में कोई खास शब्द छूटने नहीं पाये, सरलता के लिए अर्थ भी सामने पेज पर इसीलिए दिया है कि पाठक मूल की ओर ध्यान रख कर पढ़ें तो सहज में बोध प्राप्त कर सकें। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट में शब्द कोष देकर उसमें विशिष्ट पदों का सरल हिन्दी-अर्थ करने का प्रयास किया गया है। समास युक्त और सम्बन्धित पदों को एक साथ देकर लिखा है। करीब २ सम्पूर्ण शब्दों को देने का प्रयास किया गया है, फिर भी समय की अल्पता और कार्य की गुरुता से सम्भव है कोई पद छूट गया हो अथवा अर्थ में कहीं स्खलना हो तो कृपया पाठक ध्यान से पढ़कर उसे सुधार लें। अर्थ और पाठ शुद्धि में निम्न पुस्तकों का उपयोग किया है—उपाध्याय श्री प्यारचन्द जी महाराज द्वारा सम्पादित पत्राकार प्रति १, सैलाना से प्रकाशित पुस्तक २ प्राचीन हस्तलिखित प्रति ३ ज्ञानोदय समिति से प्रकाशित सटीक अन्तकृतदशा ४ और भगवती सूत्र का स्कन्धक प्रकरण।

सूत्र की पाण्डुलिपि तैयार करने में जैन रत्न विद्यालय के मास्टर जगदीशचन्द्र और विद्यालय के स्नातक श्री रतनलाल बाफणा ने पूरा सहयोग दिया, और शब्द कोष का चयन करने में मास्टर चादमलजी कर्णावट और पारसमल जी 'प्रसून' का सहयोग भुलाने योग्य नहीं है। विद्यालय के स्नातक बादलचन्दजी ओस्तवाल तथा दो विद्यार्थियों का लेखन में हार्दिक सहयोग भी अवश्य स्मरणीय है। विद्यालय के मास्टर और इन विद्यार्थियों ने श्रुत सेवा के

इस पुनीत कार्य में योगदान देकर अवश्य श्रुत सेवा के साथ अपने लिए पुण्य-लाभ उपार्जन किया है। शब्द कोष मे कई पद पुनरावृत भी हो गये हैं।

उपयोग पूर्वक कार्य करने पर भी वीतराग-वाणी से कही विपरीत लिखा हो, तो हार्दिक पश्चाताप के साथ मैं अपने उद्‌गार समाप्त करता हू।

श्रावण पूर्णिमा
स० २०२०
पीपाड शहर

उपाध्याय गजेन्द्र मुनि

श्रीमद्‌गणधर सुधर्मस्वामि वाचनानुगतम्

सिरि अंतगड़दसा सुत्तं

मूल - अर्थ सहितम्

गणधर सुधर्म - स्वामि वाचनानुगतम्

अंतगड़दसा सुत्तं

मूल - अर्थ सहितम्

उत्थानिका—

सूत्र १ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा णामं णयरी होत्था, वण्णओ। तत्थणं चंपाए णयरीए उत्तर-पुरत्थिमे दिसिभाए एत्थ णं पुण्णभद्दे-णामं चेइए होत्था वण खंड वण्णओ। तीसेणं चंपाए णयरीए कोणिए णामं राया होत्था, महया हिमवंत-वण्णओ ॥ १ ॥

सूत्र-१ अवसर्पिणी काल के उस समय—चौथे आरे में चम्पा नाम की वर्णन योग्य नगरी थी। उस चम्पा नगरी के उत्तर-पूर्व दिशा भाग अर्थात् ईशान कोण में पूर्णभद्र नाम का चैत्य था। वनखण्ड वर्णनीय था। उस चंपा नगरी में कोणिक नाम का राजा था। जो महाहिमवान्* पर्वत के समान वर्णन करने योग्य राज्य-गुणों से सुशोभित था।१। (नगरी और राज-वर्णन विस्तार के लिए औपपातिक सूत्र देखें)

---

*१—जैसे महाहिमवान लोक की मर्यादा करता है वैसे राजा प्रजा के लिये मर्यादा बनाता है। मलय पर्वत के समान कीर्ति से सुगंधित और कर्त्तव्य पालन में मेरू की तरह अचल था।

सूत्र २ तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्ज सुहम्मे थेरे जाव पंचहिं अणगार-सएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु-गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा णयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव समोसरिए। परिसाणिग्गया जाव परिसा पडिगया ॥

अर्थ-२ उस काल उस समय में आर्य सुधर्मा स्वामी नाम के स्थविर पाच सौ साधुओ के परिवार सहित पूर्व-परम्परा के अनुसार विचरते हुए ग्रामानु-ग्राम-एक गाव से दूसरे गाव होते हुए सुख पूर्वक विहार करते हुए जहा चम्पानगरी का पूर्णभद्र उद्यान है वहा पधारे। आर्य सुधर्मा की सेवा में परिषद्-नागरिक जन सभा के रूप में आये और उपदेश सुन कर परिषद् के लोक चले गये।

सूत्र-तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्ज सुहम्मस्स अंतेवासी अज्ज जंबू जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-जइणं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं जाव-संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठमस्स णं भंते! अंगस्स अंतगड़दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ॥ २ ॥

अर्थ—उस काल उस समय में आर्य सुधर्मा स्वामी के अन्तेवासी-शिष्य, आर्य जम्बू स्वामी ने सेवा करते हुए इस प्रकार पूछा – हे पूज्य! श्रमण भगवान महावीर जो श्रुत-धर्म की आदि करने वाले यावत् जिन्होंने सिद्धगति प्राप्त करली है। उस प्रभु ने सातवें अग उपासक दशा का 'यह वर्णन किया, अब हे पूज्य! आठवें अग अन्तगडदसा का श्रमण भगवान् महावीर जो मोक्ष पधारे हैं, उन्होंने क्या भाव फरमाया है? ।२।

सूत्र ३ एवं खलु–जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगड़दसाणं अट्ठ वग्गा पण्णत्ता । जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगड़दसाणं अट्ठवग्गा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स अंतगड़दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

अर्थ–३ सुधर्मा स्वामी फरमाते हैं–इस प्रकार निश्चय हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर जो मोक्ष पधारे हैं, उस प्रभु ने अन्तकृतदशा नामक आठवें अङ्ग शास्त्र के आठ वर्ग फरमाये हैं। जम्बू —"हे भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवें अ ग अन्तकृतदशा के आठवर्ग फरमाये हैं, तो हे पूज्य ! अन्तगड दशा के प्रथम वर्ग में श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने कितने अध्ययन फरमाये हैं ?

सूत्र–एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता; तं जहा—

गोयम १, समुद्द २, सागर ३, गंभीरे ४, चेव ५, होइ थिमिए य । अयले ६, कंपिल्ले ७, खलु अक्खोभ ८, पसेणई ९, विण्हू १० ॥ ३ ॥

अर्थ–सुधर्मा स्वामी फरमाते हैं—इस प्रकार हे जम्बू ! निश्चयकर श्रमण भगवान मुक्ति प्राप्त महावीर ने आठवें अ ग अन्तगड दसा में प्रथम वर्ग के दस अध्ययन फरमाये हैं जैसे कि—

गाथा (१) गौतमकुमार, (२) समुद्रकुमार, (३) सागर, (४) गम्भीर और (५) (५) स्थिमितकुमार, (६) अचल, (७) कपिल्ल (८) अक्षोभ, (९) प्रसेनजित और (१०) विष्णुकुमार ।३।

सूत्र ४ जइणं भंते ! समणेणं जाव-संपत्तेणं अट्ठस्स अंगस्स अंतगड़दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा-गोयम जाव विण्हू । पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगड़दसाणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

सूत्र-४ आर्य जम्बू-हे पूज्य ! श्रमण भगवान महावीर ने आठवें अन्तकृत दशा अ ग के प्रथम वर्ग के दश अध्ययन फरमाये हैं, जैसे-गौतम आदि। हे भगवन् ! अन्तकृतदशा सूत्र के प्रथम अध्ययन का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या भाव फरमाया है ? कृपा कर बतलावें।

सूत्र-आर्य सुधर्मा-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवई णामं णयरी होत्था. दुवालस जोयणायामा णव जोयण-वित्थिएणा धणवइमइ-णिम्मिया, चामीगरपागारा णाणा मणि पञ्चवण्ण कविसीसग-परिमण्डिया सुरम्मा।

अर्थ-आर्य सुधर्मा-इस प्रकार हे जम्बू ! उस काल उस समय में, द्वारिका नाम की नगरी थी, बारह योजन लम्बी और नवयोजन चौड़ी, धनपति अर्थात् कुबेर की बुद्धि से निर्मित स्वर्ण के कोट से घिरी हुई और अनेक प्रकार के पाचवर्ण की मणियों से जटित कगूरे वाली अत्यन्त रमणीय थी।

सूत्र-अलकापुरी-संकासा पमुइय-पकीलिया पच्चक्खं देवलोग-भूया पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४ ॥

अर्थ-वैश्रमण की नगरी के समान प्रमुदित एव क्रीड़ायुक्त होने से प्रत्यक्ष देवलोक के सदृश मन को प्रसन्न करने वाली, दर्शनीय अभिरूप एवं प्रतिरूप सर्वश्रेष्ठ थी।

सूत्र ५ तीसेणं बारवईए णयरीए बहिया उत्तर-पुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं रेवयए णामं पव्वए होत्था, वण्णओ।

अर्थ-५ उस द्वारिका नगरी के बाहर उत्तर पूर्व दिशा-ईशान कोण में रैवताचल नाम का पर्वत था, वर्णन योग्य।

सूत्र-तत्थ णं रेवयए पव्वए णंदणवणे णामं उज्जाणे होत्था, वण्णओ, सुरप्पिए णामं जक्खाययणे होत्था, पोराणे। से णं एगेणं वणसंडेण परिक्खित्ते, असोगवर पायवे।

अर्थ-वहा रैवत पर्वत पर नन्दनवन नाम का उद्यान वर्णनीय था। वहा सूरप्रिय नाम के यक्ष का यक्षायतन, बहुत प्राचीन था। वह एक वनखण्ड के द्वारा चहुओर घिरा हुआ था, वहा एक बड़ा अशोक वृक्ष था।

सूत्र-तत्थणं बारवईए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे राया परिवसइ, महया हिमवन्त-रायवण्णओ।

अर्थ-उस द्वारिका नगरी में कृष्ण नाम के वासुदेव राजा राज्य करते थे। महा हिमवान् जैसे सीमा पालक है वैसे वे प्रजा पालक थे, राज वर्णन समझना।

सूत्र–से णं तत्थ समुद्दविजय पामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेव–पामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं, पज्जुण्ण पामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमार कोडीणं, संब पामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंत साहस्सीणं, महासेण पामोक्खाणं छप्पण्णाए बलवग्गसाहस्सीणं वीरसेण पामोक्खाणं एगवीसाए वीरसाहस्सीणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं रायसाहस्सीणं, रूप्पिणीपामोक्खाणं सोलसण्हं देवी-साहस्सीणं, अणंगसेणा पामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं ईसर जाव सत्थवाहाणं बारवईए णयरीए अद्धभरहस्स य समत्तस्स य आहेवच्चं जाव विहरई ॥५॥

अर्थ–कृष्ण को उस द्वारिका नगरी में समुद्र विजय आदि दश दशार्ह-पूज्जनीय पुरुष थे, बलदेव प्रमुख पाच महावीर और प्रद्युम्नकुमार आदि साडे तीन करोड कुमार थे, सम्बकुमार आदि साठ हजार दुर्दान्त-वीर, महासेन प्रमुख छप्पन हजार सैनिक-बलवर्ग का समूह, तथा वीरसेन प्रमुख इक्कीस हजार वीर योद्धा थे। उग्रसेन प्रमुख सोलह हजार राजा और रूक्मिणी आदि सोलह हजार महारानिया थीं। अनगसेना प्रमुख हजारो गणिकाए और अन्य बहुत से द्वारिका नगरी के ईश्वर यावत् सार्थवाहों का एव सम्पूर्ण आधे भरतक्षेत्र का श्री कृष्ण अधिपति पना करते हुए यावत् विचरण करते थे ।.५॥

सूत्र ६ तत्थणं वारवईए णयरीए अंधगवरणहो णामं राया परिवसइ महया, हिमवन्त, वरणओ । तस्सणं अंधगवरिहस्स रणणो धारिणी णामंदेवी होत्था, वरणओ । तएणं सा धारिणी देवी अरणया कयाइं तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि एवं जहा महावले—

अर्थ–६ उस द्वारिका नगरी में अ धकवृष्णि नाम के राना रहते थे, महाहिमवान् पर्वत के समान वर्णनीय थे । उस अ धकवृष्णि राजा को धारिणी नाम की गुण सम्पन्न देवी थी जो वर्णन योग्य थी । तदनतर वह धारिणी देवी अन्यदा किसी दिन उस पुण्यवान-के योग्य शय्या पर, (सोयी हुई थी) उसने सिंह का स्वप्न देखा । जिस प्रकार महाबल, उसी प्रकार यहा भी ।

गाहा : सुमिणदंसण-कहणा, जम्मं बालत्तणं कलाओ य ।
जोव्वण-पाणिग्गहणं, कंना पासाय भोगा य ॥ १ ॥
णवरं गोयमो णामेणं, अट्टण्हं रायवर कन्नाणं
एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति, अट्टओ दाओ ॥ ६ ॥

गाथा—धारिणी ने स्वप्न देखे, पति को निवेदन किया । जन्म, बाल्यकाल और कलाचार्य के पास शिक्षण, युवावस्था, पाणिग्रहण, रमणीय प्रासाद और भोगों का वर्णन किया गया है । विशेष कुमार का नाम गौतम, आठ उत्तम राजकन्याओं के साथ एक ही दिन में उसका पाणिग्रहण कराया गया । आठ–आठ दातिया-दाय भाग प्राप्त होते हैं । अर्थात् दहेज के रूप में आठ हिरण्य कोटि आदि प्रदान की ।

सूत्र ७ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठणेमी आइगरे जाव विहरइ। चउव्विहा देवा आगया, कण्हे वि णिग्गए तएणं से गोयमे कुमारे जहा मेहे तहा णिग्गए, धम्मं सोच्चा णिसम्म जं णवरं देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं अंतिए पव्वयामि।

अर्थ-७ उस काल उस समय अरिहंत अरिष्ठनेमी भगवान धर्म-तीर्थ की आदि करने वाले यावत् विचरते हुए द्वारिका पधारे, समवसरण में चार प्रकार के देव आये और श्री कृष्ण भी वन्दन करने को निकले, गौतमकुमार ज्ञाता सूत्र में वर्णित मेघकुमार की तरह धर्म सुनने को निकले। धर्मकथा सुनकर व धारण करके बोले-हे प्रभु! माता पिता को पूछ कर मैं देवानुप्रिय के पास दीक्षा अंगीकार करूंगा।

सूत्र-एवं जहा मेहे जाव अणगारे जाए, इरियासमिए जाव इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरइ।

अर्थ-इस प्रकार मेघकुमार के समान यावत् गौतम अनगार हो गये, ईर्या समिति आदि गुण वाले यावत् इसी वीतराग-निर्ग्रन्थ शासन को आगे करके विचरने लगे।

सूत्र-तएणं से गोयमे अणगारे अण्णया कयाइं अरहओ अरिट्ठ-णेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

अर्थ-इसके बाद वह गौतम मुनि अन्यदा, किसी दिन अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान के गुण सम्पन्न स्थविरों के पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया। अध्ययन करके बहुत से उपवास आदि तप के द्वारा आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

सूत्र-तएणं अरहा अरिट्ठणेमी अण्णया कयाइं बारवईओ णयरीओ णंदणवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवय विहारं विहरइ ॥ ७ ॥

अर्थ-तदनतर अरिहत अरिष्टनेमि भगवान ने अन्यदा किसी दिन द्वारिका नगरी के नन्दन वन उद्यान से प्रस्थान किया और वहां से निकल कर बाहर जनपद में विहार कर गये ॥७॥

सूत्र ८ तएणं से गोयमे अणगारे अण्णयाकयाइं जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठ-णेमि तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता, वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

अर्थ—८ उसके बाद वह गौतम अणगार अन्यदा किसी दिन जहा अर्हन्त भगवान नेमिनाथ हैं वहा आये और आकर भगवान नेमिनाथ को तीन बार दक्षिण की तरफ से प्रदक्षिणा करके वन्दना नमस्कार किया। वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार बोले—

सूत्र–इच्छामिणं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुरणाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।

अर्थ–हे भगवान् ! आपकी आज्ञा प्राप्त होने पर मैं मासिकी भिक्षु-प्रतिमा को अंगीकार करके विचरण करना चाहता हूँ ।

सूत्र–एवं जहा खंदओ, तहा बारस भिक्खुपडिमाओ फासेइ, फासित्ता गुणरयणं वि तवोकम्मं तहेव फासेइ, णिरवसेसं जहा खंदओ, तहा चिंतइ, तहा आपुच्छइ तहा थेरेहिं सद्धिं सेत्तुंजं दुरूहइ, मासियाए संलेहणाए बारस वरिसाइं परियाए जाव सिद्धे ॥ ८ ॥

अर्थ–इस प्रकार जैसे स्कदक मुनि ने साधन किया, वैसे १२ भिक्षु प्रतिमाओ–अभिग्रहो का स्पर्शन किया। स्पर्शन कर गुण-रत्न तप का भी इसी प्रकार पालन किया (करता है) स्कदक मुनि की तरह सब वैसे ही चिन्तन किया और उसी प्रकार भगवान से पूछा, तथा स्थविर मुनिओ के साथ वैसे ही शत्रुंजय पर चढे, चढकर एक मास की सलेखणा की। १२ वर्ष का दीक्षाकाल पूर्ण करके यावत् सिद्ध हुए ॥८॥

सूत्र ९ एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगड़दसाणं पढ़मस्स वग्गस्स पढ़मस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पएणत्ते ।

अर्थ–९ इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भगवान यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने आठवे अंग अंतकृत दशा के प्रथम वर्ग में प्रथम अध्ययन का यह भाव फरमाया है।

❀ इति प्रथम अध्याय ❀

सूत्र–एवं जहा गोयमो तहा सेसा, वण्ही पिया, धारिणी माया समुद्दे २ सागरे ३ गंभीरे ४ थिमिए ५ अयले ६ कंपिल्ले ७ अक्खोभे ८ पसेणई ६ विण्हुए १० एए एग गमा। पढ़मो वग्गो, दस अज्झयणा पण्णत्ता ॥६॥

अर्थ–इस प्रकार गौतम कुमार की तरह शेष अध्ययन भी समझने चाहिए। सब के वृष्णि पिता और धारिणी माता। नाम ये हैं–२ समुद्र, ३ सागर ४ गम्भीर, ५ स्तिमित, ६ अचल, ७ कपिल, ८ अक्षोभ कुमार, ६ प्रसेनजित १० विष्णु कुमार ये सब एक समान हैं। यह प्रथम वर्ग, और दश अध्ययन कहे गये।



द्वितीय वर्ग

सूत्र १ जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अंतगड़-दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कई अज्झयणा पण्णत्ता ?

अर्थ–१ जम्बू स्वामी बोले–हे पूज्य ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने प्रथम वर्ग का यह वर्णन किया है, अब हे भगवान् ! अंतगड दशा के दूसरे वर्ग में श्रमण भगवान महावीर ने कितने अध्ययन फरमाये हैं ?

सूत्र–एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा–

गाहा—[1]अक्खोभे [2]सागरे खलु [3]समुद्द [4]हिमवंत [5]अयल णामे य ।
[6]धरणे य [7]पूरणे वि य, [8]अभिचंदे चेव अट्ठमए ॥ १ ॥

अर्थ–सुधर्मा फरमाते हैं–इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने, दूसरे वर्ग के आठ अध्ययन फरमाये हैं, जैसे कि–प्रथम अक्षोभ कुमार, दूसरे सागर, तीसरे समुद्र, चौथे हिमवान और पाचवे अचल-कुमार छठे धरण, सातवें पूरण और आठवें अभिचन्द्र होते हैं ।१।

सूत्र २ तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए णयरीए वण्ही पिया, धारिणी माया। जहा पढ़मो वग्गो, तहा सव्वे अट्ठ अज्झयणा।

अर्थ-२ उस काल उस समय में द्वारिका नगरी में वृष्णि राजा पिता और धारिणी इनकी माता थी। जैसे-प्रथम वर्ग कहा, वैसे सब आठों अध्ययन इसी तरह समझें।

सूत्र-गुणरयणं तवोकम्मं, सोलस वासाइं परियाओ, सेत्तुंजे मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धा।
एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ २ ॥

अर्थ-इन सभी ने गुण-रत्न संवत्सर तप किया। सोलह वर्ष का चारित्र पालन कर, शत्रुंजय पर एक मास की संलेखणा से यावत् सिद्ध हुए, इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवें अंग अंतगड़दशा के दूसरे वर्ग का यह भाव फरमाया है ॥२॥

❀ इति द्वितीय वर्ग ❀

तृतीय वर्ग

सूत्र १–जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पराणत्ते, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पराणत्ते ?

अर्थ–आर्य जम्बू–हे पूज्य ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अ ग अ त-कृतदशा के दूसरे वर्ग का यह भाव फरमाया है। अब हे पूज्य ! तीसरे वर्ग का श्रमण भगवान महावीर यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या भाव फरमाया है ? ❀ इति प्रथम वर्ग ❀

सूत्र–एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स अंतगड़दसाणं तेरस अज्झयणा पराणत्ता, तंजहा–१ अणीयसेणे, २ अणंतसेणे, ३ अजियसेणे, ४ अणिहयरिऊ, ५ देवसेणे, ६ सत्तुसेणे, ७ सारणे, ८ गए, ९ सुमुहे, १० दुम्मुहे, ११ कूवए, १२ दारुए, १३ अणादिट्ठी।

अर्थ–आर्य सुधर्मा–इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवें अ ग अ तकृत दशा के तीसरे वर्ग में तेरह अध्ययन कहे हैं, जो इस प्रकार हैं–१ अणीकसेन, २ अनन्तसेन, ३ अजितसेन, ४ अनिहत रिपु और पाचवें देवसेन, छठे शत्रु सेन, सातवे सारण, आठवें गजसुकुमाल, नवमें सुमुख, दसवें दुर्मुख, ११वें कूप, १२वें दारुक कुमार तथा १३वें अनादृष्टि कुमार।

सूत्र–जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगड़दसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा अणीयसेणे जाव अणादिट्ठी । पढ़मस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगड़दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ १ ॥

अर्थ–आर्य जंबू–हे पूज्य ! श्रमण भगवान यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवें अंग अंतकृत दशा के तीसरे वर्ग में तेरह अध्ययन कहे हैं जैसे–अणियसेन यावत् अनादृष्टि कुमार । उनमें प्रथम अध्ययन का हे भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या भाव फरमाया है ? ॥१॥

सूत्र २ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे णामं णयरे होत्था, रिद्धत्थिमिय–समिद्धे, वण्णओ । तस्सणं भद्दिलपुरस्स णयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसि-भाए सिरीवणे णामं उज्जाणे होत्था, वण्णओ । जियसत्तू राया । तत्थणं भद्दिलपुरे णयरे णागे णामं गाहावई होत्था । अड्ढे जाव अपरिभूए ।

आर्य सुधर्मा–इस प्रकार हे जम्बू ! उस काल उस समय में भद्दिलपुर नाम का नगर था । धन–धान्य से सम्पन्न, निर्भय–भय रहित और भवनादि से समृद्ध वर्णन योग्य था । उस भद्दिलपुर नगर के बाहर उत्तर-पूर्व दिशा-ईशान कोण में श्रीवन नाम का उद्यान था । वह भी वर्णनीय था । वहा जितशत्रु नाम का राजा था । उस भद्दिलपुर नगर में नाग नाम का गाथापति था । जो ऋद्धि सम्पन्न यावत् किसी से पराभव नहीं पावे ऐसा था ।

सूत्र–तस्सणं णागस्स गाहावइस्स सुलसा णामं भारिया होत्था, सुकुमाला जाव सुरूवा ।

अर्थ–उस नाग गाथापति के सुलसा नाम की भार्या थी । जो सुकुमाल यावत् अत्यन्त रूपवती थी ।

तस्स णं णागस्स गांहावइस्स पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तए अणीयसेणे णामं कुमारे होत्था, सुकुमाले जाव सुरूवे। पंचधाई–परिक्खित्ते ।

उस नाग गाथापति का पुत्र और सुलसा भार्या का आत्मज–अगज अनीकसेन नाम का कुमार था । सुकोमल यावत् शरीर से रूपवान। पाच धाय माताओ से परि पालित–घिरा हुआ था।

तंजहा १ खीर धाई, २ मज्जण धाई, ३ मंडण धाई, ४ कीलावण धाई, ५ अंक धाई। जहा दढपइण्णे जाव गिरिकंदर—मल्लीणेव चंपकवर—पायवे सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ॥ २ ॥

जैसे–१ क्षीर धात्री–दूध पिलाने वाली, २ मज्जन धात्री–स्नान कराने वाली, ३ मडन–अलकार कराने वाली, ४ क्रीडा–खेल कराने वाली, ५ और अक धात्री–गोद खिलाने वाली थी। दृढ प्रतिज्ञ* कुमार के समान यावत् पहाडी गुफा में लीन-सुरक्षित चपक वृक्ष की तरह वह सुख पूर्वक बढने लगा ॥२॥

सूत्र ३ तएणं तं अणीयसेणं कुमारं साइरेगं अट्ठ वास-जायं अम्मापियरो कलायरिय जाव भोगसमत्थे जाए यावि होत्था।

तब उस अणीकसेन कुमार को साधिक आठ वर्ष का (जानकर) माता पिता ने कलाचार्य के पास भेजा, यावत् जब भोग समर्थ हो गया,

---

* रायपसेणिय सूत्र में वर्णन आता है ।

सूत्र–तएणं तं अणीयसेणं कुमारं उम्मुक्क-बालभावं जाणित्ता अम्मापियरो सरिसयाणं सरिसवयाणं, सरिसत्तयाणं, सरिसलावण्ण रूव जोव्वणगुणोववेयाणं, सरिसेहिंतो कुलेहिंतो आणिल्लियाणं बत्तीसाए इब्भवरकण्णगाणं एग दिवसेण पाणिं गिण्हावेंति ॥ ३ ॥

अर्थ–तब उस अनीकसेन कुमार को माता पिता ने उन्मुक्त बालभाव--बालभाव रहित जानकर, सरीखी-समान वय वाली, समान त्वचा और समान रूप लावण्य तथा तारुण्य गुण वाली अपने समान कुलों से लाई गई बत्तीस इभ्यसेठ की कन्याओं के साथ एक ही दिन में पाणिग्रहण कराया ॥३॥

सूत्र–तएणं से णागे गाहावई अणीयसेणस्स कुमारस्स इमं एयारूवं पीइदाणं दलयइ, तंजहा–बत्तीसं हिरण्ण कोडीओ, जहा महब्बलस्स जाव उप्पिंपासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

अर्थ–फिर (पाणिग्रहण के बाद) उस नाग गाथापति ने अनीकसेन कुमार को इस प्रकार का यह प्रीति-दान दिया, जैसे कि बत्तीस क्रोड चादी, सोना आदि, महाबल के समान समझना। यावत् ऊपर प्रासाद पर बजती हुई मृदङ्गो के साथ उत्तम भोगों को भोगते हुए रहने लगा।

सूत्र–तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठणेमी जाव समोसढे, सिरिवणे उज्जाणे अहापडिरूवं उग्गहं जाव विहरइ। परिसा णिग्गया।

उस काल उस समय में अरिहत अरिष्टनेमि यावत् भद्दिल पुर पधारे। श्रीवन नाम के उद्यान में यथाविधि अवग्रह–तृणादि की आज्ञा लेकर यावत् विचरने लगे। धर्म श्रवण को परिषद् आई।

सूत्र—ततेणं तस्स अणीयसेणस्स कुमारस्स तं महया जणसद्दं जहा गोयमे तहा, णवरं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ। वीसं वासाइं परियाओ, सेसं तहेव जाव सेत्तुंजे पव्वए मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धे।

अर्थ—तब उस अनीकसेन कुमार ने जन समुदाय का कोलाहल सुनकर जैसे गोतम, वैसे ही दीक्षित हुआ, विशेष सामायिक आदि चौदह पूर्व का ज्ञान सीखा। २० वर्ष की पर्याय, शेष उसी प्रकार यावत् शत्रु जय पर्वत पर एक मास की सलेखणा से यावत् सिद्ध हुए।

सूत्र—एवं खलु जंबू। समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥४॥

अर्थ—उपसहार—इस प्रकार हे जबू! श्रमण यावत् मुक्ति-प्राप्त प्रभु ने आठवे अ तगडदसा नाम अ ग शास्त्र के तीसरे वर्ग में प्रथम अध्ययन का इस प्रकार वर्णन किया है।

❀ प्रथम अध्ययन समाप्त ❀

सूत्र—जहा अणीयसेणे, एवं सेसावि—[अणंतसेणे २, अजियसेणे ३, अणिहयरिऊ ४, देवसेणे ५, सत्तुसेणे ६।]

अर्थ—जैसे—अनीयसेन का वर्णन किया, ऐसे शेष अध्ययन भी अनंतसेन २ अजित सेन ३ अनिहतरिपु ४ देवसेन ५ और शत्रुसेन ६।

सूत्र—अज्झयणा एगगमा—बत्तीसओ दाओ, वीसं वासाइं परियाओ, चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जंति, सेत्तुंजे जाव सिद्धा। छट्ठमज्झयणं समत्तं ॥५॥

अर्थ—ये छहों अध्ययन एक सरीखे जानना। बत्तीस २ चांदी—सोने की दातियां दीं। २० वर्ष का दीक्षा काल, चौदह पूर्व का अध्ययन किया। शत्रु जय पर्वत पर यावत् सिद्ध हुए।

※ इति षष्ठ-अध्ययन ※

सूत्र—जइणं भंते ! उक्खेवो सत्तमस्स।

अर्थ—आर्य जंबू—हे पूज्य ! [सातवें अध्ययन] का प्रारंभ।

श्रमण भगवान महावीर ने छठे अध्ययन का भाव फरमाया वह सुना, अब सातवें का क्या अधिकार है ?, फरमाइये।

सूत्र—तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए जहा पढमे, णवरं-वसुदेवे राया, धारिणी देवी, सीहोसुमिणे, सारणे कुमारे, पण्णासओ दाओ, चोद्दस पुव्वाइं, वीसंवासाइं परियाओ, सेसं जहा गोयमस्स जाव सेत्तुंजे सिद्धे ॥२॥

अर्थ—आर्य सुधर्मा—उस काल उस समय में द्वारिका नगरी थी। यहा जैसे प्रथम अध्ययन, विशेष—वसुदेवराजा, और धारणी देवी। देवी ने सिंह का स्वप्न देखा। कुवर का नाम सारण कुमार, ५०दातिका दहेज, चौदह पूर्व का ज्ञान और बीस वर्ष का दीक्षाकाल। शेष जैसे गौतम कुमार के अध्ययन में कहा यावत् शत्रु जय पर्वत पर सिद्ध हुए।

※ इति सप्तम अध्ययन ※

सूत्र–जइणं भंते ! उक्खेवो अट्ठमस्स ।

अर्थ–आर्य जबू–हे पूज्य ! सातवे अध्ययन का भाव सुना, अब आठवें का क्या अधिकार है ?

सूत्र–एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं समएणं वारवईए णयरीए जहा पढमे, जाव अरहा अरिट्ठणेमी सामी समोसढे ।

अर्थ–आर्य सुधर्मा–इस प्रकार हे जबू ! उस काल उस समय में द्वारिका नगरी थी, वहा जैसे प्रथम अध्ययन, यावत् अरिहत अरिष्टनेमि भगवान पधारे ।

सूत्र–तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहओ अरिट्ठणेमिस्स छ अंतेवासी छ अणगारा भायरो सहोयरा होत्था । सरिसया सरित्तया सरिव्वया णीलुप्पल-गवल-गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासा सिरिवच्छं – कियवच्छा कुसुमकुंडल–भद्दलया णलकुब्बरसमाणा । तएणं ते छ अणगारा जं चेव दिवसं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठणेमिं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

अर्थ–उस काल और उस समय में भगवान नेमिनाथ के अतेवासी–शिष्य छ मुनि सहोदर भाई थे । एक से आकार वाले, समान त्वचा और अवस्था में समान दिखने वाले थे, शरीर का रंग नीलकमल, सींग की गुली और अलसी के फूल जैसा था । श्रीवत्स से अकित वक्ष और कुसुम कुडल से भद्र, नल कूवर वैश्रमण देव के समान थे । तब (दीक्षित होकर) वे छहों मुनि जिस दिन मुडित होकर आगार से अणगार धर्म–मुनिधर्म स्वीकार किया उसी दिन अरिहत अरिष्टनेमि को वदना नमस्कार करके इस प्रकार बोले—

सूत्र–इच्छामो णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणा विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह।

अर्थ–हम चाहते हैं हे भंते ! आपकी आज्ञा पाकर जीवन भर के लिए निरन्तर बेले २ की तपस्या करते हुए आत्मा को भावित करें। प्रभु ने कहा "हे देवप्रिय ! जैसा सुख हो वैसा करो, प्रमाद मत करो"।

सूत्र–तए णं ते छ अणगारा अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जावविहरंति॥

अर्थ–तब (भगवान के ऐसा कहने पर) वे छहों मुनि नेमिनाथ की आज्ञा पाकर जीवन भर बेले–बेले की तपस्या से यावत विचरण करने लगे।

सूत्र–तएणं ते छ अणगारा अण्णयाकयाइं छट्ठक्खमण पारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति, जहा गोयमसामी, जाव इच्छामो णं भंते ! छट्ठक्खमणस्स पारणए तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा तिहिं संघाडएहिं बारवईए णयरीए जाव अडित्तए।
अहा सुहं देवाणुप्पिया !

अर्थ–तब फिर उन छहों मुनियों ने अन्यदा किसी दिन बेले की तपस्या के पारणे में प्रथम प्रहर में स्वाध्याय की ओर गौतम स्वामी के समान यावत् बोले–हे भगवन् ! हम बेले की तपस्या के पारणे में आपकी आज्ञा पाकर तीन सघाडों से द्वारिका नगरी में यावत् भिक्षा हेतु भ्रमण करना चाहते हैं। प्रभु बोले "हे देवप्रिय ! जैसा सुख हो ।

सूत्र–तएणं ते छ अणगारा अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा अरहं अरिट्ठणेमिं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतियाओ सहस्संब वणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता तिहिं संघाडएहिं अतुरियं जाव अडंति ॥२॥

अर्थ–तब उन छहों मुनिओं ने अरिहत अरिष्टनेमि की आज्ञा पाकर भगवान नेमनाथ को वदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार करके भगवान नेमनाथ के पास सहस्रं बवन उद्यान से प्रस्थान करते हैं–निकलकर तीन सघाडो से त्वरा–शीघ्रता-रहित यावत् भ्रमण करने लगे ॥२॥

सूत्र–तत्थणं एगे संघाडए बारवईए णयरीए उच्च-णीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गिहं अणुप्पविट्ठे ।

अर्थ–उनमें एक सघाडा द्वारिका नगरी के ऊ च–नीच–मध्यम कुलो में सामूहिक भिक्षाचर्या के हेतु भ्रमण करते हुए राजा वसुदेव की महारानी देवकी के प्रासाद में प्रविष्ट हुआ ।

सूत्र–तएणं सा देवईदेवी ते अणगारे एज्जमाणे पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीईमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया ।

अर्थ-उस समय वह देवकी राणी उन मुनिओ को अपने यहा आते देख कर प्रसन्न हुई, चित्त में आनन्द और प्रीतियुक्त उसको परम सतोप हुआ । हर्ष से उसका हृदय फूल उठा ।

सूत्र–आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणु-
गच्छइ अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, भरित्ता ते अणगारे पडिलाभेइ पडिलाभित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता पडिविसज्जेइ ॥३॥

अर्थ–आसन से उठकर वह सात–आठ कदम मुनिराज के सामने गई। और सामने जाकर तीन बार दक्षिण तरफ से उसने प्रदक्षिणा की तथा प्रदक्षिणा करके वंदना नमस्कार किया। फिर नमस्कार करके जहां भोजनशाला है वहां आई और आकर सिंह–केसरी मोदक [जो कृष्ण के प्रसाद योग्य है,] उनसे थाल भरा और थाल भरके उन मुनियों को प्रतिलाभ दिया, प्रतिलाभ देकर फिर वंदना की, एवं वंदना नमस्कार करके विसर्जित किये ॥३॥

सूत्र–तयाणंतरं च णं दोच्चे संघाडए बारवईए णयरीए उच्च जाव पडिविसज्जेइ।

अर्थ–उसके बाद फिर दूसरा संघाडा द्वारिका नगरी में ऊंच–नीच आदि कुलों में भ्रमण करते आया यावत् उसको भी विसर्जित किया।

सूत्र–तयाणंतरं च णं तच्चे संघाडए उच्चणीय जाव पडिलाभेइ, पडिलाभित्ता एवं वयासी—

अर्थ–तदनन्तर तीसरा संघाडा द्वारिका नगरी में ऊंच–नीच यावत् कुलों में भ्रमण करते आया—प्रतिलाभ देकर देवकी देवी इस प्रकार बोली—

सूत्र–किएणं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे वारवईए णयरीए दुवालस जोयण-आयामाए णव जोयण वित्थिएणाए पच्चक्खं देवलोग-भूयाए समणा णिग्गंथा उच्चणीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खाय-रियाए अडमाणा भत्तपाणं नो लभंति ?, जएणं ताइं चेव कुलाइं भत्तपाणाए भुज्जो भुज्जो अणुप्पविसंति ॥४॥

देवकी—अथ-'हे देवप्रिय ! कृष्ण-वासुदेव की यह द्वारिका नगरी बारह योजन लम्बी, नव योजन चौडी, प्रत्यक्ष स्वर्गपुरी के समान है, क्या इसमें श्रमण-निर्ग्रन्थ उच्च नीच मध्यम कुलों में गृह-समुदाय से भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए आहार पानी नहीं प्राप्त करते, जिससे कि उन्हीं कुलों में आहार पानी के लिए बार-बार आना पडता है ?" ॥४॥

सूत्र–तएणं ते अणगारा देवईं देवीं एवं वयासी—णो खलु देवाणुप्पिये ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे वारवईए णयरीए जाव देवलोगभूयाए समणा णिग्गंथा उच्चणीय जाव अडमाणा भत्तपाणं णो लब्भंति—

अर्थ–देवकी देवी के पूछने पर वे मुनि देवकी देवी को इस प्रकार बोले–"हे देवानुप्रिये ! कृष्ण वासुदेव की इस द्वारिका नगरी में जो प्रत्यक्ष स्वर्ग के समान है श्रमण-निर्ग्रन्थ उच्च-नीच यावत् भ्रमण करते हुए अहार-पानी प्राप्त नहीं करते ।

सूत्र—णो चेव णं ताइं ताइं कुलाइं दोच्चंपि तच्चंपि भत्तपाणाए अणुप्पविसंति ।

अर्थ—और मुनि लोग भी आहार-पानी के लिये उन २ कुलों में दूसरी-तीसरी बार जाते हैं, ऐसी बात नहीं है ।"

सूत्र—एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे भद्दिलपुरे णयरे-णागस्स गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए भारियाए अत्तया छ भायरो सहोयरा सरिसया जाव णलकुब्बरसमाणा अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म संसार भउ—व्विग्गा भीया जम्मणमरणाओ, मुंडा जाव पव्वइया ।

अर्थ—किन्तु बात इस प्रकार है, हे देवानुप्रिये ! भद्दिलपुर नगर में हम नाग गाथापति के पुत्र और सुलसा भार्या (माता) के आत्मज छह पुत्र सहोदर भाई हैं, एकसी आकृति वाले यावत् नल कूबेर के समान, अरिहत अरिष्ट-नेमि के पास धर्म उपदेश सुनकर और धारण करके ससार के भय से उद्विग्न एव जन्म-मरण से भयभीत हमने मु डित होकर आखिर प्रवज्या-दीक्षा ग्रहण की ।

सूत्र—तएणं अम्हे जं चेव दिवसं पव्वइया तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठणेमि वंदामो णमंसामो वंदित्ताण मंसित्ता,

अर्थ—फिर हमने जिस दिन दीक्षा ली उसी दिन अरिहत अरिष्ट नेमि को वंदना की और वदना नमस्कार करके,

सूत्र—इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हामो-इच्छामो णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा जाव अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं अम्हे अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरामो ।

अर्थ—इस प्रकार का यह अभिग्रह धारण किया हे भगवन् ! आपकी आज्ञा हो तो' यावत् प्रभु ने कहा-'जैसा सुख हो'। हे देवानुप्रिये ! उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमि के द्वारा आज्ञा मिलने पर हम जीवन भर के लिये निरंतर वेले वेले की तपस्या करते हुए विचरने लगे।

सूत्र—तं अम्हे अज्ज छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए जाव अडमाणा तव गेहं अणुप्पविट्ठा । तं णो खलु देवाणुप्पिए ! ते चेव णं अम्हे, अम्हे णं अण्णे । देवईं देवीं एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥५॥

अर्थ—इसलिए आज वेले की तपस्या के पारणक-में प्रथम प्रहर में स्वाध्याय यावत् भ्रमण करते हुए हम तुम्हारे घर आ पहुंचे हैं। वास्ते हे देवप्रिय ! हम वे ही पहले आये हुए मुनि नहीं हैं, हम दूसरे हैं।" इस प्रकार मुनि देवकी को बोले और बोलकर जिस दिशा से आये उसी दिशा में चले गये।

सूत्र—तएणं तीसे देवईए देवीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पण्णे ।

तब मुनि की बात सुनकर उस देवकी देवी को इस प्रकार का विचार (यावत्) उत्पन्न हुआ।

सूत्र—तएणं अरहा अरिट्ठणेमी देवईं देवीं एवं वयासी—सेणूणं तम देवई! इमे छ अणगारे पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, एवं खलु पोलासपुरे णयरे अइमुत्तेणं तं चेव जाव णिग्गच्छसि, णिगच्छित्ता जेणेव ममं अंतियं हव्वमागच्छइ, से णूणं देवई देवी अयमट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि। एवं खलु देवाणुप्पिए! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे णयरे णागे णामं गाहावई परिवसइ अड्ढे।

अर्थ—देवकी देवी को अरिहत अरिष्टनेमि इस प्रकार बोले—"हे देवकी! क्या तुमको इन छ साधुओ को देखकर इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ—कि पोलासपुर नगर में अतिमुक्त कुमार ने मुझे ऐसा कहा था और उसी प्रकार यावत् वदन को निकली, और निकल कर शीघ्रता से मेरे पास चली आई हो, हे देवकी! क्या यह बात ठीक है?" हा भगवन्! ऐसा ही है। प्रभु फरमाते हैं—हे देवकी! उस काल उस समय भद्दिलपुर नगर में नाग नाम का गाथापति रहा करता था। जो आढ्य था।

सूत्र—तस्सणं णागस्स गाहावइस्स सुलसा णामं भारिया होत्था, सा सुलसा-गाहावइणी बालत्तणे चेव णिमित्तिएणं वागरिया एसणं दारिया णिंदू भविस्सइ। तएणं सा सुलसा बालप्पभिइं चेव हरिणेगमेसी देव-भत्ता यावि होत्था।

अर्थ—उस नाग गाथापति को सुलसा नाम की पत्नी थी। उस सुलसा गाथा पत्नी को बचपन में ही किसी निमित्तज्ञ ने कहा—यह बालिका मृतवत्सा होगी। तत्पश्चात् वह सुलसा बाल्य काल से ही हरिणैगमेषी देवकी भक्त बन गई।

सूत्र—हरिणेगमेसिस्स पडिमं करेइ करित्ता कल्लाकल्लिं ण्हाया जाव पायच्छित्ता उल्लपडसाडिया महरिहं पुप्फच्चणं करेइ करित्ता जाणुपायवडिया पणामं करेइ, तओ पच्छा आहारेइ वा नीहारेइ वा (चरेइवा) ॥ ७ ॥

अर्थ—और हरिणैगमेषी देवकी मूर्ति बना कर प्रतिदिन प्रातः काल स्नान करके यावत् दुःस्वप्न निवारण को प्रायश्चित्त कर गीली साड़ी पहने हुए उसकी महान् बहुमूल्य-पुष्प से पूजा करती और घुटने टिकाकर प्रणाम करती, फिर पीछे आहार करती एवं निहार करती ॥७॥

सूत्र—तएणं तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्ति-बहुमाणसुस्सूसाए हरिणेगमेसी देवे आराहिए यावि होत्था। तएणं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठाए सुलसं गाहावइणी तुमं च णं दो वि समउउयाओ करेइ। तएणं तुब्भे दो वि सममेव गब्भे गिण्हह, सममेव गब्भे परिवहह, सममेव दारए पयायह। तएणं सा सुलसा गाहावइणी विणिहायमावण्णे दारए पयाइ।

अर्थ–उसके बाद सुलसा गाथा पत्नी के उस भक्ति बहुमान शुश्रूषा से हरिणैगमेषी देव प्रसन्न हो गया। तब हरिणैगमेषी देव ने सुलसा गाथापत्नी पर अनुकम्पा करने को सुलसा गाथापत्नी और तुम दोनों को समकाल ही ऋतु युक्त किये। उस समय तुम दोनों समकाल ही गर्भ धारण करती एवं समकाल ही गर्भ का वहन करती और समकाल ही बालक को जन्म देती। तब उस सुलसा गाथा-पत्नी ने मरे हुए बालक को जन्मदिया,

सूत्र—तएणं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए अणुकंपणट्ठाए विणि-
हायमावण्णए दारए करयल संपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्तातव अंतियं साहरइ। तं समयं चणं तुमं पि णवण्हं मासाणं सुकुमाल दारए पसवसि। जे वि य णं देवाणुप्पिए! तव पुत्ता ते वि य तव अंतियाओ करयल-संपुडेणं गिण्हइ गिण्हित्ता सुलसाए गाहावइणीए अंतिए साहरइ। तं तव चेव णं देवई! एए पुत्ता, णो चेवणं सुलसाए गाहावइ-णीए ॥ ८ ॥

अर्थ—तब वह हरिणेगमेषी देव सुलसा के अनुकम्पार्थ मृत बालक को दोनों हाथों में लेकर तुम्हारे पास लाता और इधर उस समय तुम भी नव मास का पूर्णकाल होने पर सुकुमार बालक को जन्म देती। जो तुम्हारे पुत्र होते उनको भी हे देवकी! तुम्हारे पास से दोनों हाथों में ग्रहण कर सुलसा गाथा पत्नी के पास रख देता (पहुंचा देता) इसलिए हे देवकी! ये तुम्हारे ही पुत्र हैं, सुलसा गाथा पत्नी के नहीं हैं ॥८॥

सूत्र—तएणं सा देवई देवी अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया, अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, ते छप्पि अणगारे वंदइ णमंसइ।

अर्थ—तब वह देवकी देवी अरिहत अरिष्टनेमि नाथ के पास यह बात सुनकर तथा धारण कर बडी प्रसन्न हुई। यावत् विकसित हृदय-वाली अरिहत अरिष्टनेमि भगवान को वदना-नमस्कार किया और वदन नमस्कार कर, जहा वे छहो मुनि विराजमान थे वहा आई, आकर उन छहो मुनियों को वदना नमस्कार करती है।

सूत्र—वंदित्ता णमंसित्ता आगय-पण्हुया पप्फुयलोयणा कंचुय-पडिक्खित्तिया दरियवलयबाहा धाराहयकलंबपुप्फगं विव समूसियरोमकूवा ते छप्पि अणगारे अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी २ सुचिरं णिरिक्खइ, णिरिक्खित्ता वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदिता णमंसित्ता-तेणेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ दुरूहित्ता जेणेव बारवई णयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बारवइं णयरीं अणुप्पविसइ ।

अर्थ—और वदना-नमस्कार करके, स्तन से दूध झरती हुई, प्रफुल्लित लोचन वाली, हर्षातिरेक से कञ्चुक की कसें जिसकी टूट गई और भुजा के वलय तग हो रहे हैं, मेघ की धारा से सिक्त कदम्ब के फूल की तरह विकसित रोमकूपवाली राणी उन छहो मुनियों को अनिमेष-अपलक दृष्टि से देखती हुई चिरकाल तक निरखती रही, फिर वदना नमस्कार किया और वदन-नमस्कार करके जहा भगवान् नेमनाथ विराजमान हैं, वहा आई और आकर अर्हन्त नेमनाथ को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके वदना नमस्कार करती है, वदन नमस्कार करके उसी धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर आरूढ हुई, आरूढ़ होकर जहा द्वारिका नगरी वहा आई ।

सूत्र–अणुप्पविसित्ता जेणेव सए गिहे, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरूहइ, पच्चोरूहित्ता जेणेव सए वासघरे, जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ ।

अर्थ–और द्वारिका नगरी में प्रवेश कर के जहा अपना प्रासाद और बाहर की उपस्थान–शाला बैठक है वहा आकर धार्मिक रथ से नीचे उतरी, नीचे उतर कर जहा अपने वासगृह की शय्या है वहा आकर अपनी शय्या पर बैठ गई ।

सूत्र–तएणं तीसे देवईए देवीए अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे, एवं खलु अहं-सरिसए जाव णलकुब्बर - समाणे सत्तपुत्ते पयाया, णो चेव णं मए एगस्स वि बालत्तणए समणुभूए ।

अर्थ–उस समय उस देवकी देवी को इस प्रकार की चिंता और अभिलाषा युक्त मानसिक सकल्प उत्पन्न हुआ,-अहो ! मैने नल-कूबर - वैश्रमण देव के समान सात पुत्रो को जन्म दिया, पर मैने एक की भी बाल्यक्रीड़ा का आनन्द अनुभव नहीं किया ।

सूत्र–एस वि य णं कण्हे वासुदेवे छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छइ ।

अर्थ–और यह कृष्ण वासुदेव भी छ छ महीने के बाद मेरे पास चरण-वन्दन को शीघ्र आता है ।

x हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर- पृ० २४५

सूत्र–तं धरणाओ णं ताओ अम्मयाओ जासिं मरणे णियग-कुच्छिसंभूयाइं थणदुद्धलुद्धयाइं महुर–समुल्लावयाइं मम्मण–पजंपियाइं थणमूल कक्खदेसभागं अभिसरमाणाइं, मुद्धयाइं पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगे णिवेसियाइं, देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मंजुलप्पभणिए ।

अर्थ–इसलिए वे माताएं धन्य हैं जिनकी अपनी कुक्षि से उत्पन्न स्तनपान के लोभी बालक, मधुर आलाप करते हुए, तुतली बोली से मम्मन बोलते और स्तनमूल–कक्षा–भाग में अभिसरण करते हैं, एवं फिर उन मुग्ध बालकों को माता कमल समान कोमल हाथों द्वारा पकड कर गोद में बिठाती और बालक से मंजुल-मधुरशब्दों में बार बार बातें करती हैं ।

सूत्र–अहं णं अधरणा अपुरणा एत्तो एगयरमवि ण पत्ता एवं) ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ ॥ १० ॥

अर्थ–मैं अधन्य और पुण्यहीन हूं क्योंकि मैंने इनमें से किसी एक को भी बाल क्रीडा नहीं देखी । इस प्रकार देवकी खिन्न मन से यावत् आर्त्तध्यान करने लगी ।

सूत्र–तएणं से करहे वासुदेवे राहाए जाव विभूसिए देवईए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ । तएणं से करहे वासुदेवे देवईं देविं पासइ, पासित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ,

अर्थ–उस समय श्री कृष्ण वासुदेव स्नान करके यावत् विभूषित हुए एवं देवकी महारणी के चरण वंदन करने को शीघ्र चले आये । तब कृष्ण वासुदेव ने देवकी देवी के दर्शन किये, दर्शन कर देवकी महारणी के चरण-वंदन --किये,-

सूत्र–करित्ता देवईं देविं एवं वयासी–अन्नया णं अम्मो! तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ जाव भवह, किं णं अम्मो! अज्ज तुब्भे ओहय जाव झियायह ।

अर्थ–चरण, स्पर्श कर देवकी महाराणी को (उदासी का कारण पूछते) इस प्रकार बोले--"माताजी! पहले तो मैं आता तब आप मुझे देखकर प्रसन्न होती, फिर हे माता! आज तुम चिन्तित यावत् आर्त्तध्यान में क्यो दिख रही हो ?,

सूत्र–तएणं सा देवई देवी कण्हं वासुदेवं एवं-वयासी-एवं खलु अहं पुत्ता ! सरिसए जाव समाणे सत्त पुत्ते पयाया। णो चेव णं मए एगस्स वि बालत्तणे अणुभूए। तुमं पि य णं पुत्ता! ममं छण्हं छण्हं मासाणं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छसि, तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव झियामि ॥११॥

अर्थ–तब-कृष्ण के पूछने पर—वह देवकी राणी कृष्ण वासुदेव से यो बोली' 'हे पुत्र! मैने समान रूप वाले सात पुत्रों को जन्म दिया। पर एक का भी बाल्यपन अनुभव नहीं किया बालक्रीडा नहीं देखी। पुत्र! तुम भी छ छ महीनों में मेरे पास चरण वदन को आते हो, इसलिये वे माताए धन्य हैं, यावत् आर्तध्यान करती हू ॥११॥

सूत्र–तए णं से कण्हे वासुदेवे देवईं देवि एवं वयासी– मा णं तुब्भे अम्मो! ओहय जाव झियायह।

अर्थ–तब श्री कृष्ण वासुदेव देवकी महाराणी से इस प्रकार बोले—माताजी! तुम उदास और चिन्तित मत हो।

सूत्र—अहण्णं तहा वत्तिस्सामि जहा णं ममं सहोयरे कणीयसे भाउए भविस्सइ त्ति कट्टु देवइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कताहिं जाव वग्गूहिं समासासेइ,

अर्थ—मैं ऐसा काम करूंगा जिससे मेरे सहोदर छोटा भाई होगा, ऐसा करके कृष्ण ने देवकी राणी को उन इष्ट-कान्त यावत् वचनों से धैर्य बधाया और आश्वस्त किया।

सूत्र—समासासित्ता तओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमि- त्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जहा अभओ, नवरं हरिणेगमेसिस्स अट्ठ मत्तं पगिण्हइ जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी इच्छामि णं देवाणुप्पिया! सहोयरं कणीयसं भाउयं विदिण्णं ॥१२॥

अर्थ—आश्वस्त करके वहा से निकले, निकल कर जहा पौषधशाला वहा आये और पौषधशाला में आकर अभय कुमार की तरह विशेष-हरिणेगमेषी के लिये अष्टम भक्त तेला किया यावत् दोनों हाथ जोड़ कर इस प्रकार बोले—'हे देवानुप्रिय! मेरे छोटा सहोदर भाई हो ऐसा चाहता हूं।

सूत्र—तएण से हरिणेगमेसी देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-होहिइ णं देवाणुप्पिया! तव देवलोयचुए सहोयरे कणीयसे भाउए से ण उम्मुक्कबालभावे जाव जोव्वणगमणुप्पत्ते अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अन्तियं मुन्डे जाव पव्वइस्सइ।

अर्थ—तब वह हरिणैगमेषी देव कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोला--हे देवप्रिय! आपको देवलोक से च्युत होकर छोटा सहोदर भाई अवश्य होगा। और वह बाल्यकाल बीतने पर यावत् युवा अवस्था प्राप्त करके भगवान् नेमनाथ के पास मुण्डित होकर दीक्षा ग्रहण करेगा।

कण्हं वासुदेवं दोच्चंपि तच्चं पि एवं वयइ । वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए ॥१३॥

कृष्ण--वासुदेव को दूसरी,तीसरी बार भी ऐसा कहाऔर कहके जिस दिशा की ओर से आया उसी दिशा की ओर चला गया ।

सूत्र–तएणं से कण्हे वासुदेवे पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव देवई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ, करित्ता एवं वयासी–होहिइ णं अम्मो ! ममं सहोयरे कणीयसे भाउत्ति कट्टु देवइं देविं इट्ठाहिं जाव आसासेइ, आसासित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ।

अर्थ–इसके बाद श्रीकृष्ण वासुदेव पौषध शाला से निकले और निकलकर देवकी देवी के पास आये और आकर महाराणी देवकी के चरण वदन किये, चरण वदन करके इस प्रकार बोले—"माताजी ! मेरे छोटा सहोदर भाई होगा, ऐसा करके देवकी देवी को इष्ट वचनों से आश्वस्त किया आश्वस्त करके जिस ओर से आये, उसी ओर चले गये ।

सूत्र–तएणं सा देवई देवी अण्णया कयाइं तंसि तारिसगंसि जाव सीहं सुमिणे पासित्ता पडिबुद्धा, जाव हट्ठ तुट्ठ हियया, तं गब्भं सुहं सुहेणं परिवहइ ॥१४॥

अर्थ–फिर देवकीराणी अन्यदा–किसी दिन पुण्यवान् के योग्य उस शय्या पर सोई हुई सिंह के स्वप्न को देखकर जाग्रत हुई, यावत् हर्षित हृदय से सुख पूर्वक उस गर्भ को वहन करने लगी ॥१४॥

सूत्र–तएणं सा देवई देवी नवण्हं मासाणं जासुमणा रत्तबंधु जीवयलक्खरस सरसपारिजातकतरूणदिवायर समप्पभं, सव्वनयणकंतं सुकुमालं जाव सूरूवं गयतालुयसमाणं दारयं पयाया। जम्मणं जहा मेहकुमारे

अर्थ–इसके बाद उस देवकी देवी ने नव माम का गर्भकाल पूर्ण होने पर जवा कुसुम, बन्धुक पुष्प, लाक्षारस, पारिजात एव उदीयमान सूर्य के समान कान्ति वाले, जन–नयन–मनोहर, सुकुमाल यावत् गजतालु के समान रूपवान् पुत्र को जन्म दिया। जन्म मेघकुमार के समान समझें।

सूत्र–जाव जम्हाणं अम्हं इम्हे दारए। गयतालुसमाणे तं होउ णं अम्हं एयस्स दारयस्स नामधेज्जे गय-सुकुमाले, तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामं करेइ गयसुकुमाले त्ति, सेसं जहा मेहे। जाव अलं भोगसमत्थे जाए यावि होत्था।

अर्थ–यावत्‘माता–पिता ने सोचा कि’ जिस लिए हमारा यह बालक गज तालु के समान है, इसलिए हमारे इस बालक का नाम गज सुकुमाल हो। फिर उस बालक के माता-पिता ने गज सुकुमाल ऐसा नाम रक्खा, शेष वर्णन मेघकुमार के समान समझना, यावत् गज सुकुमाल भोग समर्थ हो गया।

सूत्र–तत्थ णं बारवईए नयरीए सोमिले नामं माहणे परिवसइ, अड्ढे रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था, तस्स सोमिलस्स माहणस्स सोमसिरी नामं माहणी होत्था। सुकुमाला।

उस द्वारिका नगरी में सोमिल नाम का ब्राह्मण रहता था, जो समृद्ध और ऋग्वेद आदि शास्त्रों का पूर्ण ज्ञाता था। उस सोमिल ब्राह्मण के सोमश्री नाम की ब्राह्मणी (स्त्री) थी। शरीर से सुकोमल थी।

सूत्र–तस्स णं सोमिलस्स माहणस्स धूया सोमसिरीए माहणीए अत्तया सोमा नामं दारिया होत्था, सुकुमाला जाव सुरूवा। रूवेणं जाव लावण्णेणं उक्किट्ठा, उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था॥ १५ ॥

उस सोमिल ब्राह्मण की पुत्री और सोमश्री ब्राह्मणी की आत्मजा सोमा नामकी कन्या थी। सुकुमाल यावत् रूपवती। रूप एव लावण्य–कान्ति से उत्कृष्ट और उत्कृष्ट शरीर वाली थी॥ १५ ॥

सूत्र- तए णं सा सोमा दारिया अण्णया कयाइं ण्हाया जाव विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता, सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, रायमग्गंसि कणग - तिंदूसएणं कीलमाणी २ चिट्ठइ।

अर्थ–तब फिर वह सोमा कन्या अन्यदा किसी दिन स्नान और अलकारो से शोभा करके, बहुत सी कुब्जा आदि दासियों के परिवार से घिरी हुई अपने घर से निकली और निकल कर जहा राज मार्ग है, वहा आई और राजमार्ग में सुवर्ण की गेंद से खेल खेल रही थी।

सूत्र–तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे, परिसा णिग्गया। तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए,

उस काल उस समय अरिहत अरिष्टनेमि द्वारिका नगरी पधारे। परिषद् धर्म सुनने को आई। उस समय कृष्ण वासुदेव ने भी भगवान् के आने की यह कथा वार्त्ता श्रवण की,

सूत्र-जाव विभूसिए गयसुकुमालेणं कुमारेणं सद्धिं हत्थिखंधवरगए, सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणेहिं उद्धुव्वमाणेहिं बारवईए णयरीए मज्झं-मज्झेणं अरहओ अरिट्ठणेमिस्स पायवंदए णिगच्छमाणे सोमं दारियं पासइ, पासित्ता सोमाए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य जाय विम्हए ॥ १६ ॥

अर्थ-फिर स्नान और शरीर की शोभा करके गज सुकुमाल कुमार के साथ हाथी के होदे पर आरूढ होकर कोरंट वृक्ष की माला युक्त छत्ते से धारे जाते हुए, श्वेत-उत्तम चामरों से वीजे जाते हुए, द्वारिका नगरी के मध्य से होकर भगवान् नेमनाथ के चरण वंदन को निकल पड़े, आते हुए मार्ग में कृष्ण ने सोमा कन्या को देखा, और सोमा के रूप-लावण्य तथा तारुण्य से विस्मित हुए (बड़े प्रभावित हुए) ॥१६॥

सूत्र-तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सोमिलं जाइत्ता सोमं दारियं गिण्हह, गिण्हित्ता कण्णंतेउरंमि पक्खिवह, तएणं एसा गयसुकुमालस्स भारिया भविस्सइ । तएणं ते कोडुंविय-पुरिसा जाव पक्खिवंति, तएणं ते कोडुंवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ-तब कृष्ण वासुदेव ने आज्ञाकारी पुरुष को बुलाया और बुलाकर इस प्रकार बोले—"जाओ हे देवानुप्रिय ! तुम सोमिल ब्राह्मण से मांग कर सोमा कन्या को प्राप्त करो और फिर उसे कन्याओं के अंतःपुर में पहुंचा दो । समय पाकर यह सोमा गजसुकुमाल की भार्या होगी" कृष्ण की आज्ञा के बाद उन कौटुम्बिक पुरुषों ने सोमा को अंतःपुर में पहुँचा दी, और उन्होंने श्रीकृष्ण को इसकी पीछे खबर करदी ।

सूत्र–कण्हे वासुदेवे वारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव महस्संबवणे उज्जाणे जाव पज्जुवासइ। तएणं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हस्स वासुदेवस्स गयसुकुमालस्स कुमारस्स तीसे य. धम्म कहा। कण्हे पडिगए॥१७॥

अर्थ–फिर कृष्ण वासुदेव द्वारिका नगरी के मध्य २ से निकले और निकलकर जहा सहस्राम्रवन उद्यान है वहा आकर प्रभु की सेवा करने लगे। तब भगवान् नेमिनाथ ने कृष्ण वासुदेव और गजसुकुमाल कुमार प्रमुख उस सभा को धर्म कथा कही। श्रीकृष्ण पीछे लौट गये ॥१७॥

सूत्र–तएणं से गयसुकुमाले कुमारे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतियं धम्मं सोच्चा, जं णवरं अम्मापियरं आपुच्छामि, जहा मेहे, णवरं महिलिया वज्जं जाव-वड्ढिय कुले।

अर्थ–फिर वह गज सुकुमाल कुमार भगवान् नेमिनाथ के पास धर्म-कथा सुनकर विरक्त हो बोले—'भगवान् माता पिता को पूछ कर मैं आपके पास व्रत ग्रहण करू गा' स्त्रियों को छोडकर सब वर्णन मेघकुमार के समान, यावत् कुलकी वृद्धि करके फिर दीक्षा लेना।

सूत्र–तएणं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव गयसुकुमाले कुमारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता गयसुकुमालं कुमारं आलिंगइ, आलिंगित्ता उच्छंगे णिवेसेइ, णिवेसित्ता एवं वयासी—

अर्थ–जब कृष्ण वासुदेव ने गज सुकुमाल की वैराग्य कथा ज्ञात की तो वे गजसुकुमाल कुमार के पास आये, और आकर गजसुकुमाल कुमार का स्नेह से आलिंगन किया, आलिंगन कर गोद में बिठाया और फिर इस प्रकार बोले–

सूत्र–तुमं ममं सहोयरे कणीयसे भाया, तं मा णं देवाणुप्पिया ! इयाणि अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतियं मुंडे जाव पव्वयाहि। अहएणं वारवईए णयरीए महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिस्सामि। तएणं से गयसुकुमाले कुमारे कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥१८॥

अर्थ–"तुम मेरे सहोदर छोटे भाई हो, इसलिए हे देवानुप्रिय ! इस समय भगवान् नेमनाथ के पास मुंडित होकर यावत् दीक्षा ग्रहण मत करो। मैं तुमको द्वारिका नगरी में बडे समारोह के साथ राज्याभिषेक से अभिषिक्त करूंगा।" तब गज सुकुमाल कुमार कृष्ण वासुदेव द्वारा ऐसा कहने पर मौन रहे ॥१८॥

सूत्र–तएणं से गयसुकुमाले कुमारे कण्हं वासुदेवं अम्मापियरो य दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ? माणुस्सया कामा असुई, असासया, वंतासवा जाव विप्पजहियव्वा भविस्संति।

अर्थ–कुछ समय के पश्चात् वह गजसुकुमाल कुमार कृष्ण वासुदेव और माता पिता को दूसरी–तीसरी बार भी इस प्रकार बोले–'हे देवानु–प्रिय ! मनुष्य के कामभोग अपवित्र, अशाश्वत - अस्थायी और मल मूत्र वमन के स्रोत हैं, एक दिन अवश्य छोडने होंगे।

सूत्र—तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए जाव पव्वइत्तए। तएणं तं गयसुकुमालं कुमारं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य जाहे णो संचाएइ बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए। ताहे अकामा चेव एवं वयासी —

अर्थ—इसलिए 'हे देवानुप्रिय! मैं चाहता हूँ आपकी आज्ञा मिलने पर भगवान् नेमनाथ के पास प्रव्रज्या-व्रत ग्रहण कर लू" तब गज सुकुमाल कुमार को कृष्ण वासुदेव और माता पिता जब बहुत सी अनुकूल और स्नेह भरी युक्तियों से समझाने में समर्थ नहीं हुए तब बिना इच्छा ही माता पिता इस प्रकार बोले—

सूत्र—'तं इच्छामोणं ते जाया एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए।' णिक्खमणं, जहा महब्बलस्स जाव तमाणाए तहा जाव संजमित्तए। तएणं से गयसुकुमाले अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी ॥ १९ ॥

अर्थ—यदि ऐसा ही है तो— 'हे पुत्र ! हम एक दिन की तुम्हारी राज्य लक्ष्मी-देखना चाहते हैं' दीक्षा सम्बन्धी-निष्क्रमण महाबल के समान यावत् आज्ञानुसार संयम पालन में उद्यत हुए। अब वह गजसुकुमाल अणगार हो गये। ईर्या-समिति वाले यावत् गुप्त ब्रह्मचारी ॥१९॥

सूत्र–तएणं से गयसुकुमाले अणगारे जं चेव दिवसं पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेई, करित्ता एवं वयासी—

अर्थ–उस के बाद वह गजसुकुमाल मुनि जिस दिन दीक्षा ग्रहण की उसी दिन, दिन के पिछले भाग में जहा अरिहंत अरिष्टनेमि थे वहा आकर भगवान् नेमनाथ को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा की, प्रदक्षिणा करके इस प्रकार बोले—

सूत्र–'इच्छामिणं भंते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ।'

अर्थ–'भगवन् ! तुम्हारी आज्ञा हो तो महाकाल श्मसान में एक रात्रि की महापडिमा धारण कर विचरना चाहता हू । (प्रभु बोले)—हे देव-प्रिय ! जैसा सुख हो !

सूत्र–तएणं से गयसुकुमाले अणगारे अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाए समाणे अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतियाओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव महाकाले सुसाणे तेणेव उवागच्छइ,

अर्थ–फिर गजसुकुमाल मुनि अरिहंत अरिष्टनेमि की आज्ञा मिलने पर, भगवान् नेमनाथ को वदना नमस्कार की और वदन नमस्कार करके, भगवान् के पास सहस्राम्र वन उद्यान से निकले और निकल कर जहा महाकाल श्मशान वहा आये,

सूत्र–उवागच्छित्ता थंडिलं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता उच्चारपासवण भूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता ईसिं पब्भारगएणं काएणं जाव दो वि पाए साहट्टु एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ २० ॥

अर्थ–आकर स्थडिल भूमि की प्रति लेखना की और फिर उच्चार पासवण (मलमूत्र त्याग) की भूमि का प्रतिलेखन करके थोडा देह को झुकाकर (एक पुद्गल पर दृष्टि जमाये) दोनों पैरो को (चार अ गुल के अन्तर में) सिकोड कर एक रात्रि की महा प्रतिमा अ गीकार करके ध्यान में खडे रहे ॥२०॥

सूत्र–इमं च णं सोमिले माहणे सामिधेयस्स अट्ठाए बारवईओ णयरीओ बहिया, पुव्वणिग्गए समिहाओ य दब्भे य कुसे य पत्तामोडयं च गिण्हइ, गिण्हित्ता तओ पडिणियत्तइ पडिणियत्तित्ता महाकालस्स सुसाणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि गयसुकुमालं अणगारं पासइ पासित्ता तं वेरं सरइ सरित्ता आसुरुत्ते, एवं वयासी—

अर्थ–उस समय वह सोमिल ब्राह्मण यज्ञ की लकडी के लिए द्वारिका नगरी से पहले ही बाहर निकल चुका था। वह समिधा,-दर्भ और कुश एव अग्र भाग में मुडे पत्तों को लेकर पीछे लौटा, लौटकर महाकाल श्मसान के निकट से जाते हुए सध्या काल के समय जब कि मनुष्यो का गमनागमन नहीं सा था, गज सुकुमाल मुनि को देखा और देखते ही सोमिल को पूर्व वैर जाग्रत हो गया, रुष्ट होकर वह बोला—

सूत्र–एसणं भो!से गयसुकुमाले कुमारे अपत्थिय जाव परिवज्जिए, जे णं मम धूयं, सोमसिरीए भारियाए अत्तयं सोमं दारियं अदिट्ठदोसपइयं कालवत्तिणीं विप्पजहित्ता मुण्डे जाव पव्वइए ॥ २१ ॥

अर्थ–'अरे! यह वो गजसुकुमाल कुमार अप्रार्थनीय मृत्यु को चाहने वाला यावत् लज्जा-रहित है। जिसने मेरी पुत्री सोमश्री ब्राह्मणी की आत्मजा सोमा कन्या को जो कि अवस्था प्राप्त और दोष रहित है छोडकर मुंडित हो साधु बन गया है ॥२१॥

सूत्र–तं सेयं खलु मम गयसुकुमालस्स वेरणिज्जायणं करित्तए, एवं सपेहेइ, संपेहित्ता दिसापडिलेहणं करेइ, करित्ता सरसं मट्टियं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव गयसुकुमाले अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए मट्टियाए पालिं बंधइ

अर्थ–इसलिये निश्चय मुझे गजसुकुमाल का वैर निर्यातन करना चाहिये, ऐसा सोचकर उसने दिशा प्रतिलेखन – निरीक्षण – किया और फिर गीली मिट्टी लेकर जहाँ गजसुकुमाल मुनि ध्यानस्थ थे वहा आकर गजसुकुमाल मुनि के शिर पर मिट्टी का पाल बांधदी।

सूत्र बंधित्ता जलंतीओ चियगाओ फुल्लियकिंसुय - समाणे खयरंगारे कहल्लेणं गिण्हित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता भीए तओ खिप्पामेव अवक्कमइ अवक्कमित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥ २२ ॥

अर्थ–और बाध कर जलती हुई चिता से फूले हुए केसू के फूल सम लाल खेर के अंगारों को फूटे खप्पर में ग्रहण किये और गजसुकुमाल मुनि के सिर पर रख दिये। फिर भयभीत हुआ और शीघ्र ही पीछे हटकर भगता हुआ जिस ओर से आया उसी ओर चला गया ॥२२॥

सूत्र-तएणं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स सरीरयंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा तएणं से गयसुकुमाले अणगारे सोमिलस्स माहणस्स मणसा वि अप्पदुस्समाणे तं उज्जलं जाव अहियासेई ।

अर्थ-अ गार रखने के बाद उस गजसुकुमाल मुनि के शरीर में भयकर वेदना उत्पन्न हुई, जो अत्यन्त दु ख रूप और असह्य थी । तब भी गजसुकुमाल मुनि सोमिल ब्राह्मण पर मन से भी द्वेष नहीं लाते हुए उस एकान्त दु,खरूप वेदना को सहन करने लगे ।

सूत्र-तएणं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स तं उज्जलं जाव अहियासेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थज्झवसाणेणं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्व-करणं अणुप्पविट्ठस्स अणंते, अणुत्तरे जाव केवल-वरणाण-दंसणे समुप्पण्णे तओ पच्छा सिद्धे जावप्पहीणे ।

अर्थ- उस समय उस गजसुकुमाल मुनि को शुभ-परिणाम पूर्वक एकान्त दु खरूप वह वेदना सहन करते हुए प्रशस्त अध्यवसाय के कारण आवरणीय कर्म का क्षय हुआ और कर्म रज को बिखेरने वाले अपूर्वकरण में प्रविष्ट होने से अन्तरहित-सर्वश्रेष्ट एव पूर्ण केवलज्ञान और केवल दर्शन उत्पन्न हुआ फिर वे सिद्ध-बुद्ध सब दु खों से मुक्त हो गये ।

सूत्र-तत्थणं अहा संणिहिएहिं देवेहिं सम्मं आराहियंति कट्टु-दिव्वे सुरभिगंधोदए वुट्ठे, दसद्धवण्णे कुसुमे णिवाइए चेलुक्खेवे कए दिव्वे य गीय-गंधव्वणिणाए कए यावि होत्था ॥ २३ ॥

अर्थ-वहा समीप वर्ती 'देवों ने अच्छी आराधना की' इस विचार से दिव्य सुगधित जल की वृष्टि की, पाच वर्ण के अचित्त फूल गिराये । वस्त्र की वर्षा की और गीत तथा गधर्व-वाजित्र की ध्वनि से गगन मडल गू जा दिया ॥२३॥

सूत्र—तएणं से कण्हे वासुदेवे कल्लं पाउप्पभायाए जाव—जलंते ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिक्खंधवरगए, सकोरंटमल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव-माणीहिं महया भडचडगरपह-कर-वंदपरिक्खित्ते वारवइं णयरीं मज्झंमज्झेणं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ-इसके पश्चात् (रात्रि पूरी होने पर) कल प्रात काल सूर्योदय होने पर कृष्ण वासुदेव ने स्नान कर शरीर की शोभा की और हाथी पर आरुढ़ होकर कोरंट वृक्ष की माला युक्त-छत्र को धारण किए हुए श्वेत-उज्वल चामरो से वीजे जाते हुए एव बड़े योद्धाओ के समूह से घिरे हुए द्वारिका नगरी के मध्य मध्य होकर जहा भगवान् नेमनाथ विराजमान थे वहा जाने को प्रस्थित हुए ।

सूत्र—तएणं से कण्हे वासुदेवे वारवईए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छमाणे एक्कं पुरिसं पासइ, जुण्णं जराजज्जरिय-देहं जाव किलंतं महईमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेगं इट्टगं गहाय वहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पविस-माणं पासइ ।

अर्थ—जब कृष्ण वासुदेव द्वारिका नगरी के मध्य २ से निकल रहे थे तब एक पुरुष को देखा, वह अतिवृद्ध और जरासे जर्जरित शरीर वाला यावत् वदन कुमला रहा था, बहुत बडी ईंट की ढेरी में से एक एक ईंट लेकर वह बाहर की गली से घर में रख रहा था ।

सूत्र–तएणं से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्ठाए हत्थिक्खंधवरगए चेव एगं इट्ठगं गिण्हइ गिण्हित्ता बहिया-रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेसेइ। तएणं कण्हेणं वासुदेवेणं एगाए इट्ठगाए गहियाए समाणीए अणेगेहिं पुरिससएहिं से महालए इट्ठगस्स रासी बहिया रत्थापहाओ अंतोघरंसि अणुप्पवेसिए ॥ २४ ॥

अर्थ–तब कृष्ण वासुदेव ने उस पुरुष की अनुकम्पा के लिए हाथी पर बैठे ही ढेरी में से एक ईंट ली और लेकर गली में से घर के भीतर रख दी। उस समय कृष्ण वासुदेव के द्वारा एक ईंट उठाने पर अनेकों पुरुष व सैंकड़ों कर्मचारियों द्वारा वह बड़ी ईंट की ढेरी राजमार्ग से शीघ्र ही घर में प्रविष्ट करादी गई ॥२४॥

सूत्र–तएणं से कण्हे वासुदेवे बारवईए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता जाव वंदित्ता णमंसित्ता गयसुकुमालं अणगारं अपासमाणे अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

अर्थ–इसके बाद वह कृष्ण वासुदेव द्वारिका नगरी के मध्य २ से निकले और जहां भगवान् नेमनाथ थे वहा आये यावत् वंदना नमस्कार करके गजसुकुमाल मुनि को नहीं देख कर भगवान नेमनाथ को वंदना की और वंदना नमस्कार कर बोले—

सूत्र–कहिणं भंते ! से मम सहोयरे भाया गयसुकुमाले अणगारे ?, जण्णं अहं वंदामि णमंसामि तएणं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–साहिएणं कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे ।

अर्थ–'प्रभो ! वे मेरे सहोदर भाई गजसुकुमाल मुनि कहाँ है ? जिनको मैं वंदना नमस्कार करूं । तब अर्हन्त नेमनाथ कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोले—'हे कृष्ण! गजसुकुमाल मुनि ने अपना कार्य सिद्ध कर लिया ।'

सूत्र–तएणं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं एवं वयासी–'कहएणं भंते– गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे ॥ २५ ॥

अर्थ–तब श्री कृष्ण वासुदेव अर्हन्त नेमनाथ से इस प्रकार बोले-हे भगवान् गजसुकुमाल मुनि ने अपना कार्य सिद्ध कर लिया, यह कैसे ? ।२५॥

सूत्र–तएणं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–'एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं मम कल्लं पुव्वावरण्ह – कालसमयंसि वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी 'इच्छामिणं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।'

अर्थ–तब भगवान् नेमनाथ,कृष्ण वासुदेवको इस प्रकार बोले-'इस प्रकार निश्चय हे कृष्ण ! गजसुकुमाल मुनि कल दिन के पिछले भाग में मेरे को वंदना नमस्कार करके इस प्रकार बोले– 'आप की आज्ञा हो तो एक रात्रि की महाप्रतिमा धारण कर विचरना चाहता हूँ ।'

सूत्र–तएणं तं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासइ, पासित्ता आसुरत्ते जाव सिद्धे ।

अर्थ–इसके बाद उस गजसुकुमाल मुनि को एक पुरुष ने देखा और देखकर क्रुद्ध हुआ, यावत् गजसुकुमाल मुनि आयुपूर्ण कर सिद्ध हो गये ।

सूत्र–तं एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे । तएणं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठ-णेमिं एवं वयासी—

अर्थ–इस प्रकार हे कृष्ण ! गजसुकुमाल मुनि ने अपना कार्य सिद्ध कर लिया । यह सुनकर श्री कृष्ण वासुदेव भगवान् नेमनाथ को इस प्रकार बोले—

सूत्र–केसणं भंते ! से पुरिसे अप्पत्थिय पत्थए जाव परिवज्जिए, जे णं ममं सहोदरं कणीयसं भायरं गयसु-कुमालं अणगारं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ?

अर्थ–हे पूज्य ! वह अप्रार्थनीय–मृत्यु को चाहने वाला यावत् लज्जा रहित कौन पुरुष है ?, जिसने मेरे सहोदर लघु भ्राता गजसुकुमाल मुनि को असमय में ही जीवन से वियुक्त कर दिया ?

सूत्र–तएणं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-'मा णं कण्हा ! तुमं तस्स पुरिसस्स पओसमावज्जाहि, एवं खलु कण्हा! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिण्णे ॥ २६ ॥

अर्थ तब अरिहंत अरिष्ट नेमनाथ कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोले-'हे कृष्ण तुम उस पुरुष पर द्वेष - रोष मत करो, हे कृष्ण ! उस पुरुष ने निश्चय गजसुकुमाल मुनि को सहायता प्रदान की है ।।२६।।

सूत्र–'कहण्णं भंते ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स साहिज्जे दिण्णे ? तएणं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—

अर्थ–हे पूज्य ! उस पुरुष ने गजसुकुमाल मुनि को सहायता दी यह कैसे ? तब भगवान् नेमनाथ कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोले—

सूत्र-'से णूणं कण्हा ! तुमं ममं पायवंदए हव्वमागच्छ-माणे बारवईए णयरीए एगं पुरिसं पाससि जाव अणुप्पवेसिए ।'

अर्थ-'अय कृष्ण ! मेरे चरण वंदन को शीघ्र आते हुए तुमने द्वारिका नगरी में एक वृद्ध पुरुष को देखा और ईंट की ढेरी में से एक ईंट घर में रख दी'।

सूत्र-जहा णं कण्हा तुमं तस्स पुरिसस्स साहिज्जे दिण्णे । एवमेव कण्हा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेगभवसयसहस्स-संचियं-कम्मं उदीरेमाणेणं बहुकम्मणिज्जरट्ठं साहिज्जे दिण्णे" । तएणं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं एवं वयासी—

अर्थ-जैसे तुमने 'उस पुरुष की सहायता की, इसी तरह हे कृष्ण ! उस पुरुष ने गजसुकुमाल मुनि को अनेक लाखों भवों के संचितकर्म की उदीरणा करते हुए बहुत कर्म की निर्जरा के लिए सहयोग प्रदान किया है । फिर कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्टनेमि को इस प्रकार बोले—

सूत्र-'से णं भंते ! पुरिसे मए कहं जाणियव्वे ?' तएणं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी— 'जे णं कण्हा ! तुमं बारवईए णयरीए अणुप्पविसमाणं पासित्ता ठियए चेव ठिइभेएणं कालं करिस्सइ तएणं तुमं जाणिज्जासि एस णं से पुरिसे" ॥ २७ ॥

अर्थ-'हे भगवान् ! वह पुरुष मुझे कैसे जानना चाहिए ? तब भगवान नेमनाथ कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोले—'हे कृष्णजी ! जो तुम को द्वारिका नगरी में प्रवेश करते देखकर खड़ा खड़ा ही स्थिति पूर्ण हो जाने से मृत्यु प्राप्त करेगा, उसीको तुम्हे जानना चाहिये कि यह वह पुरुष है' ॥ २७ ॥

सूत्र–तएणं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव आभिसेयं हत्थिरयणं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिं दुरूहइ दुरुहित्ता जेणेव बारवई णयरी, जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

अर्थ–फिर कृष्ण वासुदेव ने अरिहत अरिष्टनेमि को वंदना नमस्कार करके जहा अभिषेक-योग्य हस्तिरत्न था वहा आकर हाथी पर आरूढ हुए और द्वारिका नगरी में अपने राजप्रासाद की ओर चल पडे।

सूत्र–तएणं तस्स सोमिलस्स माहणस्स कल्लं जाव जलंते अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पण्णे। एवं खलु कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं, पायवंदए णिग्गए तं णायमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, सिट्ठमेयं अरहया भविस्सइ कण्हस्स वासुदेवस्स।

अर्थ–उधर उस सोमिल ब्राह्मण को कल सूर्योदय होते ही इस प्रकार का मानसिक संकल्प उत्पन्न हुआ। निश्चय ही कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्टनेमि के वंदन करने को गये होंगे और सर्वज्ञ होने से अर्हन्त ने यह जान लिया होगा। भगवान ने स्पष्ट समझ लिया होगा और उन्होंने कृष्ण वासुदेव को यह सब कह दिया होगा।

सूत्र–तं ण णज्जइ णं कण्हे वासुदेवे मम केणवि कुमारेणं मारिस्सइ त्तिकट्टु भीए सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स वारवइं णयरीं अणुप्पविसमाणस्स पुरओ सपक्खिं सपडिदिसं हव्वमागए ॥२८॥

अर्थ–तो न मालूम कृष्ण महाराज रुष्ट हो कर मुझे किस कुमरण से मारेंगे, ऐसा विचार कर डरा और अपने घर से निकल कर कृष्ण वासुदेव को द्वारिका नगरी में प्रवेश करते समय सम्मुख बराबर दिशा में शीघ्र आ मिला ॥ २८ ॥

सूत्र तएणं से सोमिले माहणे कण्हं वासुदेवं सहसा पासित्ता भीए, ठियए चेव ठिइभेएणं कालं करेइ, करित्ता धरणितलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति सण्णिवडिए। तएणं से कण्हे वासुदेवे सोमिलं माहणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—

अर्थ–तब वह सोमिल ब्राह्मण कृष्ण वासुदेव को सहसा सामने देखकर भयभीत हुआ और खड़ा खड़ा ही स्थिति भेद से आयु पूर्ण कर धस करके भूमि तल पर सर्वांग से गिर पड़ा। उस समय कृष्ण वासुदेव सोमिल ब्राह्मण को गिरते देखकर ऐसा बोले–

सूत्र-एस णं भो देवाणुप्पिया! से सोमिले माहणे अपत्थियपत्थए जाव परिवज्जिए। जेण ममं सहोयरे कणीयसे भायरे गजसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए त्तिकट्टु सोमिलं माहणं पाणेहिं कड्ढावेइ, कड्ढावित्ता,

अर्थ-'अरे! यह सोमिल ब्राह्मण अप्रार्थनीय को चाहने वाला तथा लज्जा व शोभा से रहित है, जिसने मेरे सहोदर छोटे भाई गजसुकुमाल मुनि को असमय में ही जीवन से वियुक्त कर दिया, ऐसा कहकर सोमिल ब्राह्मण के शव को चडालों द्वारा घसीटवा के फिंकवाया।

सूत्र-तं भूमिं पाणिएणं अब्भुक्खावेइ, अब्भुक्खावित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए सयं गिहं अणुप्पविट्ठे। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगड़दसाणं तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ २६ ॥

अर्थ-और उस भूमि पर पानी छिटकाया फिर अपने राजमहल पहुँचे। इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीर जो मोक्ष पधारे हैं आठ वें अङ्ग के तीसरे वर्ग में अष्टम अध्याय का यह भाव फरमाया है। ॥२६॥

❀ इति आठवां अध्ययन समाप्त ❀

सूत्र–णवमस्स उक्खेवओ। एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए णयरीए जहा पढमए जाव विहरइ। तत्थ णं बारवईए बलदेवे णामं राया होत्था, वण्णओ। तस्सणं बलदेवस्स रण्णो धारिणी णामं देवी होत्था, वण्णओ तएणं सा धारिणी सीहं सुमिणे जहा गोयमे णवरं सुमुहे णामं कुमारे, पण्णासं कण्णाओ, पण्णासं दाओ, चोद्दस-पुव्वाइं अहिज्जइ वीसं वासावं परियाओ, सेसं तं चेव जाव सेत्तुंजे सिद्धे निक्खेवओ॥ ९॥

अर्थ–नवमे अध्याय का प्रारम्भ। इस प्रकार, हे जम्बू! उस काल उस समय द्वारिका नगरी थी, जैसे प्रथम अध्ययन में कहा वैसे–भगवान् नेमनाथ विचरते पधारे। वहा द्वारिका नगरी में बलदेव नाम का राजा था, उस बलदेव की राणी का नाम धारणी था, वह गुण सम्पन्न थी। एक दिन धारणी ने रात में सिंह का स्वप्न देखा, गौतम कुमार के समान जन्म आदि समझना। विशेष कुंवर का नाम सुमुख-कुमार रखा गया, पचास कन्याओं के साथ पाणिग्रहण हुआ। पचास करोड़ का दायजा। चौदह पूर्व का ज्ञान पढे। बीस वर्ष दीक्षा पाली, शेष उसी प्रकार यावत् शत्रुंजय पर्वत पर सिद्ध हुए।

❀ इति नवमा अध्ययन समाप्त ❀

सूत्र–एवं दुम्मुहे वि, कूवदारए वि । दोण्हं वि बलदेवे पिया, धारिणी माया ॥१०-११॥ दारुए वि एवं चेव, णवरं वसुदेवे पिया, धारिणी माया ॥ १२ ॥ एवं अणादिट्ठी वि, वसुदेवे पिया धारिणी माया ॥ १३ ॥ एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव सम्पत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगड़दसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

अर्थ–(समाप्ति वर्णन)। इस प्रकार प्रभु ने नवमे अध्याय का भाव फरमाया है। इसी प्रकार दशवे दुर्मुख और ११ वें कूवदारक का भी वर्णन समझना। दोनों के बलदेव महाराज पिता और धारणी माता थी ।१०-११। इसी तरह १२ वे दारुक और १३वे अनादृष्टि कुमार का वर्णन भी समझना, इनके वसुदेव जी पिता और धारिणी माता थी । इस तरह हे जबू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवें अ ग अ तकृत दशा सूत्र के तीसरे वर्ग में तेरहवें अध्ययन का यह भाव फरमाया है।

॥ इति तृतीय वर्ग समाप्त ॥

चतुर्थ-वर्ग

सूत्र-जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण अट्ठमस्स अंगस्स अन्तगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । चउत्थस्स णं भंते वग्गस्स अन्तगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

अर्थ-हे भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवें अंग अंतकृत दशा के तीसरे वर्ग का यह वर्णन फरमाया, अब अंतगड दसा के चौथे वर्ग का हे पूज्य ! श्रमण भगवान ने क्या भाव फरमाया है ?

सूत्र-एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अन्तगडदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा—

जालि[1] मयालि[2] उवयालि[3] पुरिससेणे[4] य वारिसेणे[5] य ।
पज्जुण्ण[6] संब[7] अणिरूद्धे[8] सच्चणेमी[9]य दढणेमी[10] ।।१।।

अर्थ-हे जंबू ! इस प्रकार श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने अंतगड दसा के चौथे वर्ग में दश अध्याय फरमाये हैं जो इस प्रकार हैं—
१ जालि २ मयालि ३ उवयालि ४ पुरुष सेन ५ और वारिषेण कुमार ६ प्रद्युम्न ७ शाम्ब कुमार ८ अनिरुद्ध ९ सत्यनेमि और १० दृढनेमि कुमार ।

सूत्र–जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता । पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

अर्थ–हे भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने चौथे वर्ग में दश अध्ययन फरमाये हैं। तो उनमें हे पूज्य ! प्रथम अध्ययन का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ फरमाया है ?

सूत्र–एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई णाम णयरी होत्था, जहा पढमे। कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव विहरइ ॥ २ ॥

अर्थ–इस प्रकार हे जम्बू ! उस काल उस समय द्वारिका नाम की नगरी थी, जैसे प्रथम अध्ययन में वर्णन किया उसी प्रकार। श्री कृष्ण वासुदेव राज्य कर रहे थे ॥२॥

सूत्र–तत्थ णं बारवईए णयरीए वसुदेवे राया, धारिणी देवी। वण्णओ। जहा गोयमो, णवरं जालिकुमारे पण्णासओ दाओ।

उस द्वारिका नगरी में महाराज वसुदेव और रानी धारणी वर्णन योग्य थे। गौतम कुमार के समान जालि कुमार ने युवावस्था प्राप्त की पचास कन्याओं के साथ पाणिग्रहण और पचास करोड का दहेज दिया। गया।

सूत्र–बारसंगी सोलस्स वासा परियाओ– सेसंजं हा गोयमस्स, जाव सेत्तुंजे सिद्धे। एवं मयालि[२] उवयालि[३] पुरिससेणे[४] वारिसेणे[५] य। एवं पज्जुण्णे[६] वि णवरं कण्हे पिया रुप्पिणी माया। एवं संबे[७] वि णवरं जंबवई माया।

अर्थ–जालिमुनि ने भी १२ अंग का ज्ञान सीखा, सोलह वर्ष की दीक्षा पाली। शेष जैसे गौतम कुमार की तरह शत्रुंजय पर्वत पर सिद्ध हुए। इस प्रकार मयालिकुमार २, उवयालि कुमार ३, पुरुषसेन ४ और वारिसेन कुमार ५, का वर्णन समझना, ये सब वसुदेव जी के पुत्र हैं। इसी तरह छठे प्रद्युम्न कुमार भी, विशेष–श्री कृष्ण पिता और रुक्मिणी माता है। ऐसे शाम्ब कुमार सातवें इनकी माता जाम्बवती थी। ये दोनों श्री कृष्ण के पुत्र हैं।

सूत्र–एवं अणिरुद्धे वि णवरं पज्जुण्णे पिया, वेदब्भी माया। एवं सच्चणेमी[८] णवरं समुद्दविजए पिया सिवा माया। एवं दढणेमी वि[१०]। सव्वे एगगमा चउत्थस्स वग्गस्स णिक्खेवओ।

अर्थ–ऐसे अनिरुद्ध कुमार भी विशेष इनके पिता प्रद्युम्न और माता वैदर्भी है ऐसे नवमें सत्यनेमी और दशमे दृढनेमी कुमार भी विशेष-समुद्र विजयजी पिता और शिवा माता ये सब अध्ययन समान वर्णन वाले हैं। इस प्रकार हे जम्बू! चौथे वर्ग का प्रभु ने भाव फरमाया है।

॥ इति चतुर्थ वर्ग समाप्त ॥

पंचम वर्ग

सूत्र–जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते । वग्गस्स अन्तगड-दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झ-यणा पण्णत्ता । तंजहा—

पउमावई[1] य गोरी[2], गंधारी[3] लक्खणा[4] सुसीमा[5] य ।

जंबवई[6] सच्चभामा[7], रूप्पिणी[8] मूलसिरी[9] मूलदत्ता[10] य ।

अर्थ–हे भगवान् ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने चौथे वर्ग का यह भाव फरमाया है, तो अन्तगडदसा के पचम वर्ग का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है ? (आर्य सुधर्मा)–हे जम्बू ! इस प्रकार निश्चय श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने पचम वर्ग के दश अध्ययन फरमाये हैं, जो इस प्रकार है—१ पद्मावती, २ गौरी, ३ गधारी, ४ लक्ष्मणा और ५ सुसीमा देवी । ६ जाम्बवती, ७ वीं सत्यभामा, ८ रुक्मिणी, नवमी मूलश्री और दसवीं मूलदत्ता । ये दस अध्ययन कहे गये हैं ।

सूत्र–जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता । पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ॥ १ ॥

अर्थ–हे पूज्य ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने पचम वर्ग के दश अध्ययन फरमाये हैं, तो प्रथम अध्ययन का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त ने क्या अर्थ कहा है ॥१॥

सूत्र—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई णामं णयरी होत्था, जहा पढमे, जाव कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव विहरइ । तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावई णामं देवी होत्था, वण्णओ ।

अर्थ—इस प्रकार हे जंबू ! उस काल उस समय द्वारिका नाम नगरी थी, जैसे प्रथम अध्याय में कहा, यावत् कृष्ण वासुदेव राज्य कर रहे थे । कृष्ण वासुदेव की पद्मावती नाम की महारानी, वर्णन योग्य थी ।

सूत्र—तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे जाव विहरइ । कण्हे णिग्गए जाव पज्जुवासइ । तएणं सा पउमावईदेवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठ० जहा देवई जाव पज्जुवासई । तएणं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावईए देवीए जाव धम्मकहा, परिसा पडिगया ।

अर्थ—उस काल उस समय अरिहन्त अरिष्ट नेमि द्वारिका नगरी में पधारे, यावत् (संयम तप से आत्मा को भावित करते) विचरने लगे श्री कृष्ण वंदन करने को निकले यावत् नेमनाथ की सेवा करने लगे । उस समय पद्मावती देवी ने भगवान् के आने की कथा सुनी तो वह प्रसन्न हुई, जैसे देवकी महारानी वंदन करने गई वैसे पद्मावती भी यावत् नेमनाथ की सेवा करने लगी । तब अरिहन्त अरिष्ट नेमि ने कृष्ण वासुदेव और पद्मावती देवी आदि के सम्मुख धर्म कथा फरमाई, सभाजन कथा सुन कर चले गये ।

सूत्र–तएणं कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

अर्थ–तब कृष्ण वासुदेव भगवान् नेमनाथ को वंदना नमस्कार करके इस प्रकार बोले—

इमीसे णं भंते ! बारवईए णयरीए दुवालसजोयणआयामाए णवजोयण वित्थिण्णाए जाव पच्चक्खं देवलोगभूयाए किंमूलए विणासे भविस्सइ ? कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—

अर्थ–'हे पूज्य ! बारह योजन लम्बी और नव योजन चौडी साक्षात् देवलोक के समान, द्वारिका नगरी का किस कारण से विनाश होगा ? कृष्ण आदि को सम्बोधन कर अरिहंत अरिष्ट नेमिनाथ ने श्री कृष्ण को इस प्रकार कहा—

सूत्र–'एवं खलु कण्हा ! इमीसे बारवईए णयरीए दुवालसजोयणआयामाए णवजोयण वित्थिण्णाए जाव पच्चक्खं देव-लोग-भूयाए सुरग्गिदीवायणमूलए विणासे भविस्सइ ।।२।।

अर्थ–हे कृष्ण ! निश्चय बारह योजन लम्बी और नव योजन चोडी प्रत्यक्ष स्वर्गपुरी सम इस द्वारिका नगरी का सुरा, अग्नि और दीपायन ऋषि के कारण नाश होगा ।"

सूत्र—तएणं कण्हस्स वासुदेवस्स अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अन्तिए एयमट्ठं सोच्चा अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पण्णे-धण्णा णं ते जालि-मयालि-उवयालि-पुरिससेण-वारिसेण-पज्जुण्ण-संब-अणिरुद्ध-दढणेमि-सच्चणेमिप्पभियओ कुमारा, जे णं चिच्चा हिरण्णं जाव परिभाइत्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स, अन्तियं मुंडा जाव पव्वइया, अहण्णं अधण्णे अकयपुण्णे रज्जे य जाव अन्तेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए णो संचाएमि अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अन्तिए जाव पव्वइत्तए।

अर्थ—उस समय कृष्ण वासुदेव को अर्हन्त नेमनाथ के पास (द्वारिका के नाश रूप) इस अर्थ को सुनकर इस प्रकार का मानसिक अध्यवसाय उत्पन्न हुआ। धन्य हैं वे जालि, मयालि, उवयालि, पुरिससेण, वारिषेण, प्रद्युम्न, शाम्ब, अनिरुद्ध, दढनेमि और सत्यनेमि प्रभृति—कुमार जिनने हिरण्यादि सपदा और परिजन छोड़कर यावत् देय-भाग देकर, नेमनाथ प्रभु के पास मुंडित हुए यावत् दीक्षा ग्रहण की। मैं अधन्य एवं अकृत-पुण्य हूं इसलिये कि राज्य, अंतःपुर और मनुष्य सम्बन्धी काम भोगों में मूर्छित हूँ, भगवान नेमनाथ के पास प्रव्रज्या मुनिव्रत लेने में समर्थ नहीं हूं।

सूत्र—कण्हाइ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—

अर्थ—(ज्ञान से जानकर) भगवान् नेमनाथ प्रभु ने कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहा—

सूत्र–से णूणं कण्हा ! तव अयं अज्झत्थिए समुप्पण्णे धण्णा णं ते जालि जाव पव्वइत्तए ? से णूणं कण्हा ! अयमट्ठे समट्ठे ? 'हंता अत्थि' ॥ ३ ॥

अर्थ–'निश्चय हे कृष्ण ! तुम्हारे मन में ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि जालि आदि कुमार धन्य है जिनने मुनिव्रत ग्रहण किया, मैं अधन्य हू जो मुनिव्रत नहीं ले पाता ? कृष्ण ! क्या यह बात सही है।' [श्री कृष्ण] 'हाँ, भगवान्। ठीक-सही है।'

सूत्र–'तं णो खलु कण्हा ! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सइ वा-जण्णं वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं जाव पव्वइस्संति।'

अर्थ–तो हे कृष्ण ! ऐसा हुआ नहीं, होता नहीं और होगा भी नहीं कि जो वासुदेव धन-धान्य-स्वर्ण आदि छोड कर मुनिव्रत लेगें (ऐसा नहीं होता)

सूत्र–'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ण एवं भूयं वा जाव पव्वइस्संति ?' कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्हा ! सव्वे वि य णं वासुदेवा पुव्वभवे णियाणकडा, से एएणट्ठेणं कण्हा एवं वुच्चइ-ण एवं भूयं जाव पव्वइस्संति' ॥४॥

अर्थ–(श्री कृष्ण) भगवन् ! ऐसा क्यों कहा जाता है कि ऐसा कभी नहीं और होगा नहीं। अर्हन्त नेमिनाथ कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोले— 'हे कृष्ण ! निश्चय सभी वासुदेव पूर्व-भव में निदान करने वाले होते हैं, इसलिये हे कृष्ण ! यह कहा जाता है कि कभी ऐसा हुआ नहीं यावत् प्रव्रज्या दीक्षा नहीं लेंगें ॥४॥

सूत्र–तएण से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं एवं वयासी—
'अहं णं भंते! इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि? कहिं उववज्जिस्सामि ?'

अर्थ–तब कृष्ण वासुदेव अर्हन्त अरिष्टनेमी को इस प्रकार बोले– हे भगवन् ! यहाँ से काल के समय काल करके मैं कहाँ जाऊँगा? कहाँ उत्पन्न होऊंगा?'

सूत्र–तएणं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–'एवं खलु कण्हा ! तुमं बारवईए णयरीए सुरग्गिदीवायण-कोव-णिद्दड्ढाए अम्मापिइणियगविप्पहूणे रामेण बलदेवेण सद्धिं दाहिणवेयालि—अभिमुहे जोहिट्ठिल्लपामोक्खाणं पंचण्हं पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं पासं पंडुमहुरं संपत्थिए कोसंबवण-काणणे णग्गोहवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए पीयवत्थ-पच्छाइयसरीरे जरकुमारेणं तिक्खेणं कोदंड-विप्पमुक्केणं इसुणा वामे पाए विद्धे समाणे कालमासे कालं किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए जाव उववज्जिहिसि' ॥५॥

अर्थ–इस पर अर्हन्त नेमनाथ ने कृष्ण वासुदेव को इस तरह कहा–'इस प्रकार हे कृष्ण ! तुम सुरा, अग्नि और द्वीपायन के क्रोध से द्वारिका नगरी के जलने पर माता-पिता एवं स्वजनों से वियुक्त हो, राम बलदेव के साथ दक्षिणी समुद्र के तट की ओर युधिष्ठिर प्रमुख पांच पाडवों के समीप मथुरा को जाते हुए कोशाम्बवन-उद्यान में जब न्यग्रोध वृक्षवट के नीचे पृथ्वी-शिला के पट्ट पर पीताबर ओढे सोओगे, तब जरा कुमार के द्वारा धनुष से छोड़े गये तीखे बाण से बायें पैर में बिंध जाकर काल के समय काल करोगे और तीसरी बालुका प्रभा पृथ्वी में उत्पन्न होओगे' ॥५॥

सूत्र–तएणं कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म ओहय जाव झियाइ ।

अर्थ–कृष्ण वासुदेव अर्हन्त नेमिनाथ के समीप इस बात को सुन कर एव धारण कर उदास मन हो आर्त ध्यान करने लगे ।

सूत्र–कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-'मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय जाव झियाहि ! एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया ! तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे बारसमे अममे णामं अरहा भविस्ससि । तत्थ तुमं बहूइं वासाइं केवलपरियायं पाउणित्ता सिज्झिहिसि' ॥६॥

अर्थ–तब अर्हन्त अरिष्टनेमी कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोले—'हे देवानुप्रिय ! तुम उदास होकर आर्त-ध्यान मत करो । निश्चय हे देवानुप्रिय ! तुम तीसरी पृथ्वी से अनन्तर निकल कर इसी जंबू द्वीप के भरत क्षेत्र में आने वाले उत्सर्पिणी काल में पुंड्र जन पद के शत द्वार नाम के नगर में 'अमम' नाम के बारहवें अर्हन्त बनोगे । वहां बहुत वर्ष तक केवली-पर्याय का पालन कर तुम सिद्ध बुद्ध–मुक्त बनोगे' ।६।

सूत्र—तएणं से कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अन्तिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ० अप्फोडइ, अप्फोडित्ता वग्गइ, वग्गित्ता तिवइं छिंदइ, छिंदित्ता सीहणायं करेइ, करित्ता अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता तमेव अभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूहइ दुरूहित्ता जेणेव वारवई णयरी जेणेव सएगिहे तेणेव उवागए, अभिसेय हत्थिरय-णाओ पच्चोरूहइ,पच्चोरूहित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सए सीहासणे तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता सीहास-णवरंसि पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणु-प्पिया ! बारवईए णयरीए सिंघाडग जाव उग्घोसेमाणा एवं वयह—

अर्थ—तब अर्हन्त नेमिनाथ के पास यह वृत्तात सुनकर कृष्ण वासुदेव बडे प्रसन्न हुए, और भुजा पर ताल ठोकने लगे, जयनाद करके त्रिपदी का छेदन किया (पीछे हट कर) सिंहनाद किया और फिर भगवान् नेमनाथ को वंदन नमस्कार करके उसी अभिषेक-योग्य हस्ति रत्न पर आरूढ हुए और बहा द्वारिका नगरी में अपना राजप्रसाद वहाँ आये, अभिषेक योग्य हाथी से नीचे उतरे और फिर बाहर की उपस्थान शाला—बैठक मे जहा अपना सिंहासन वहाँ आये और सिंहासन पर पूर्वाभिमुख विराजमान हो गये। फिर आज्ञाकारी पुरुष को बुलाकर इस प्रकार बोले 'जाओ हे देवानुप्रिय ? तुम द्वारिका नगरी में शृंगाटक यावत् राजमार्ग पर घोषणा करते हुए इस तरह कहो'—

सूत्र–"एवं खलु देवाणुप्पिया ! बारवईए णयरीए दुवालसजोयण आयामाए जाव पच्चक्खं देवलोग-भूयाए सुरग्गिदीवायण-मूले विणासे भविस्सइ तं जो णं देवाणुप्पिया ! इच्छइ बारवईए, णयरीए राया वा, जुवराया वा, ईसरे, तलवरे, माडंबिए, कोडुंबिए, इब्भे, सेट्ठी वा, देवी वा, कुमारो वा, कुमारी वा, अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अन्तिए मुंडे जाव पव्वइत्तए, तं णं कण्हे वासुदेवे विसज्जइ, पच्छाउरस्स वि य से अहापवित्तं वित्तिं अणुजाणइ, महया इड्ढसक्कार-समुदएण य से णिक्खमणं करेइ, दोच्चं पि तच्चं पि घोसणयं घोसेह, घोसित्ता मम एयं आणत्तियं पच्चप्पि-णह।" तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ॥७॥

अर्थ—'हे द्वारिकावासी नागरजनो ! बारह योजन लम्बी यावत् प्रत्यक्ष स्वर्गपुरी सम द्वारिका नगरी का सुरा, अग्नि एव द्वीपायन के कारण नाश होगा, इसलिये हे देवानुप्रिय ! द्वारिका नगरी में जिसकी भी इच्छा हो, राजा हो या युवराज ईश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, इभ्य या श्रेष्ठी हो, देवी रानरानी या कुमार तथा कुमारी–राजपुत्री हो, जो भी भगवान् नेमिनाथ के पास मुंडित यावत् दीक्षा लेना चाहता हो, उसको कृष्ण वासुदेव विदा करते हैं और दीक्षार्थी के पीछे कुटुम्बीजनों की भी कृष्ण यथा योग्य व्यवस्था करेंगे और बडे ऋद्धि सत्कार के साथ उसका दीक्षा-महोत्सव सपन्न करेंगे, दूसरी तीसरी बार भी ऐसी घोषणा करके मेरी आज्ञा पीछे अर्पण करो।" कृष्ण का आदेश पाकर उन आज्ञाकारी पुरुषों ने घोषणा कर आज्ञा वापिस लौटाई।॥७॥

सूत्र--तएणं सा पउमावई देवी अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया अरहं अरिट्ठणेमि वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

अर्थ—इसके बाद वह पद्मावती महारानी भगवान् नेमिनाथ के समीप धर्म सुनकर एव धारण करके बडी प्रसन्नता हुई, हृदय खिल उठा वह अर्हन्त नेमिनाथ को वदना नमस्कार कर इस प्रकार बोली—

सूत्र–"सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि । 'अहा सुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ॥८॥

अर्थ—हे पूज्य ! निग्रन्थ प्रवचन पर मैं श्रद्धा करती हू जैसा आप कहते हो (वैसी ही है) विशेष–हे देवानुप्रिय ! कृष्ण वासुदेव को पूछू गी, फिर देवानुप्रिय के पास मैं मु ण्डित होकर दीक्षा ग्रहण करूंगी । (प्रभु ने कहा) जैसा सुख हो, हे देवानुप्रिय ! धर्म—कार्य में विलम्ब मत करो ॥८॥

सूत्र–तएणं सा पउमावई देवी धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ दुरूहित्ता जेणेव बारवई णयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरूहइ पच्चोरूहित्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव कट्टु कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—

अर्थ–नेमनाथ प्रभु के ऐसा कहने के बाद पद्मावतीदेवी धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर आरूढ होकर जहा द्वारिका नगरी और जहा अपना घर है वहा आकर धार्मिक रथ से नीचे उतरी और जहा पर कृष्ण वासुदेव थे वह आकर दोनों हाथ जोडे कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोली—

इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अब्भणुण्णाया समाणी अर-हो अरिट्ठणेमिस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि (कण्हे—) अहासुहं देवाणुप्पिए ! तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबिए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

अर्थ–'हे देवानुप्रिय ! आपकी आज्ञा हो तो मैं अर्हन्त नेमिनाथ के पास मुंडित होकर दीक्षा ग्रहण करना चाहती हूं।' कृष्ण ने कहा–'हे देवानुप्रिय जैसा सुख हो वैसा करो'-तब कृष्ण वासुदेव ने आज्ञाकारी पुरुषों को बुला कर इस प्रकार आदेश दिया—

सूत्र–''खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! पउमावईए देवीए महत्थं णिक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेइ, उवट्ठवित्ता एयं आणत्तियं पच्चप्पिणह।'' तएणं ते कोडुंबिया जाव पच्चप्पिणंति ॥६॥

अर्थ–'हे देवानुप्रिय ! शीघ्र ही महारानी पद्मावती के लिए बहुमूल्य दीक्षा महोत्सव की तय्यारी करो, और फिर मुझे उसकी सूचना करो।' तब आज्ञाकारी पुरुषों ने वैसा ही किया ॥६॥'

सूत्र–तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमावइं देवींपट्टयं दुरूहइ दुरूहित्ता। अट्ठसएणं सोवण्णकलसेणं जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभि-सिंचइ,

अर्थ—इसके बाद कृष्ण वासुदेव ने पद्मावती देवी को पट्ट पर बिठाया और एक सौ आठ सुवर्ण कलशों से यावत् दीक्षा सम्बन्धी अभिषेक किया।

सूत्र–अभिसिंचि। सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणीं सिवियं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता बारवईए णयरीए मज्झंमज्झेणं, णिगच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव रेवयए पव्वए जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सीयं ठवेइ ठवेत्ता, पउमाई देवी सीयाओ पच्चोरूहइ।

अर्थ—फिर सभी प्रकार के अलकारों से विभूषित करके हजारों पुरुषों से उठायी जाने वाली शिविका–पालखी में बिठाकर द्वारिका नगरी के मध्य से होते हुए निकले और जहा रैवत पर्वत और सहस्राम्र उद्यान है वहा आकर शिविका खडी की (नीचे रक्खा) तब पद्मावती देवी पालखी से नीचे उतरी।

सूत्र–तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमावइं देविं पुरओ कट्टु जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठणेमिं आयाहिणं पायाहिणं करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

अर्थ—उस समय कृष्ण वासुदेव पद्मावती महारानी को आगे करके भगवान् नेमनाथ के पास आये और भगवान् नेमनाथ को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके वदना नमस्कार कर निम्न प्रकार से बोले—

सूत्र-'एस णं भंते ! मम अग्ग-महिसी पउमावई नामं देवी इट्ठा कंता, पिया, मणुण्णा, मणामा अभिरामा, जीवियऊसासा हिययाणंदजणिया, उंवरपुप्फंविव - दुल्लहा सवणयाए, किमंग ! पुण पासणयाए ! तएणं अहं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणी भिक्खं दलयामि, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणी-भिक्खं

अर्थ-'हे पूज्य ! यह मेरी अग्रमहिषी पद्मावती नाम की देवी जो मेरे लिये इष्ट, कान्त प्रिय, मनोज्ञ और मन के अनुकूल चलने वाली होने से सुन्दर है। यह जीवन के लिये उच्छ्वास के समान, हृदय को आनन्द देने वाली है, उम्बरपुष्प के समान जिसका नाम सुनना भी दुर्लभ है फिर देखने की तो बात ही क्या ? हे देवानुप्रिय ! मै उस प्रिय-पत्नी को शिष्यिणी रूप भिक्षा देता हू। हे देवानुप्रिय ! आप शिष्यिणी रूप भिक्षा को ग्रहण करे।'

सूत्र—अहासुहं !, तएणं सा पउमावई देवी उत्तरपुरच्छिमं दिसि-भागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—आलित्तेणं भंते ! जाव धम्ममाइक्खिउं॥१०॥

अर्थ-'जैसा सुख हो वैसा करो,' तब उस पद्मावती देवी ने ईशान-कोण में जाकर स्वय ही आभूषण एव अलकार उतारे और स्वय ही पचमौष्टिक लोच किया फिर भगवान् नेमनाथ के पास आकर नेमनाथ-प्रभु को वदना की। वदना नमस्कार करके इस प्रकार बोली—'हे भगवान ! यह लोक जन्म मरण आदि दुःख से प्रज्वलित है, यावत् कृपा कर सगम धर्म की शिक्षा फरमाइये' ॥ १० ॥

सूत्र–तएणं अरहा अरिट्ठणेमी पउमावइं देविं सयमेव पव्वावेइ, सयमेव जक्खिणीए अज्जाए सिस्सिणीं दलयइ। तएणं सा जक्खिणी अज्जा पउमावइं देविं सयं पव्वावेइ जाव संजमियव्वं, तएणं सा पउमावई जाव संजमइ। तएणं सा पउमावई अज्जा जाया, ईरियास-मिया जाव गुत्तबम्भयारिणी ॥११॥

अर्थ—पद्मावती के ऐसा कहने पर भगवान् नेमनाथ ने स्वयमेव पद्मावती को प्रव्रज्या दी और स्वय ही यक्षिणी आर्या को शिष्या रूप में प्रदान की। तब यक्षिणी आर्या ने पद्मावती को स्वय दीक्षा दी और सयम में यत्न करने की शिक्षा दी। तब वह पद्मावती देवी सयम में यत्न करने लगी। अब वह पद्मावती आर्या हो गई। ईर्या समिति वाली यावत् गुप्त-ब्रह्मचारिणी बन गई। ११।

सूत्र–तएणं सा पउमावई अज्जा जक्खिणीए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहि मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवो-कम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरइ।

अर्थ—इसके पश्चात् वह पदमावती आर्या यक्षिणी आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अ गों का अध्ययन किया. बहुत से उपवास-बेले तेले-चोले-पचोले-मास और अर्धमास आदि विविधि तपस्या से आत्मा को भावित करते विचरने लगी।

सूत्र–तएणं सा पउमावई अज्जा बहुपडिपुण्णाइं वीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउ-णित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेइ, झोसित्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाइं छेदेइ, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरई णग्गभावे-जाव तमट्ठं आराहेइ चरिमु-स्सासेहिं सिद्धा ॥१२॥

अर्थ—इसके बाद वह पदमावती आर्या पूरे बीस वर्ष चारित्र धर्म का पालन करके एक मास की सलेखना से आत्मा को युक्त पर साठ भक्त अनशन पूर्ण कर जिस कार्य के लिये नग्नभाव-अपरिग्रहीपन सयम स्वीकार किया, उस अर्थ को आराधन कर अन्तिम श्वास से सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गई ।

॥ इति प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

सूत्र—उक्खेवओ य अज्झयणस्स। तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई णयरी, रेवयए पव्वए उज्जाणे णंदणवणे। तत्थणं बारवईए णयरीए कण्हे वासुदेवे राया होत्था तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स गोरी देवी, वण्णओ, अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे। कण्हे णिग्गए, गोरी जहा पउमावई तहा णिग्गया, धम्मकहा, परिसा पडिगया, कण्हे वि पडिगए।

अर्थ—(हे भगवान्! प्रथम अध्ययन के जो भाव फरमाये मैंने सुने, अब दूसरे आदि अध्ययनों में प्रभु ने क्या भाव फरमाये हैं? कृपा कर फरमाइये। श्री सुधर्मा फरमाते हैं, उसकाल उस समय हे जंबू द्वारिका नगरी के पास रेवतपर्वत और नंदन वन उद्यान था। वहां द्वारिका नगरी में कृष्ण वासुदेव राज्य करते थे। उन कृष्ण वासुदेव की गौरी नामक महारानी थी। वर्णन करने योग्य। भगवान् नेमिनाथ किसी समय द्वारिका के नन्दन वन में पधारे। श्री कृष्ण वन्दन को गये। पद्मावती की तरह गोरी भी वन्दन करने गई। भगवान् ने धर्म-कथा फरमाई, सभाजन लौट गये, कृष्ण भी पीछे लौट गये।

तएणं सा गोरी जहा पउमावई तहा णिक्खंता जाव सिद्धा। एवं [3]गंधारी, [4]लक्खणा, [5]सुसीमा, [6]जम्बवई, [7]सच्चभामा, [8]रुप्पिणी, अट्ठवि पउमावई सरिसयाओ अट्ठ अज्झयणा ॥१॥

अर्थ—तब गोरी रानी पद्मावती की तरह दीक्षित हुई यावत् सिद्ध हो गई। इसी तरह ३ गाधारी, ४ लक्ष्मणा ५ सुसीमा, ६ जाम्बवती, ७ सत्यभामा, ८ और रुक्मिणी, आठो अध्ययन पद्मावती के समान समझे। ये आठों कृष्ण की महारानिया थी।

सूत्र—उक्खेवओ य णवमस्स । तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए णयरीए, रेवयए पव्वए, णंदणवणे उज्जाणे, कण्हे राया । तत्थ णं बारवईए णयरीए कण्हस्स वासुदेवस्स पुत्ते जंबवईएदेवीए अत्तए संबे णामं कुमारे होत्था । अहीण० ।

अर्थ—नवमे अध्ययन का प्रारम्भ—'हे भगवान् ! श्रमण भगवान् महावीर ने आठवे अध्ययन का भाव फरमाया सो सुना अब नववें में क्या अर्थ कहा है ? कृपा कर बतलाइये' ।

उस काल उस समय मे द्वारिका नगरी के पास रैवत पर्वत और नन्दन-वन उद्यान था । कृष्ण-वासुदेव राज्य करते थे । वहा द्वारिका नगरी में कृष्ण वासुदेव का पुत्र जाम्बवती देवी का आत्मज शाम्ब-नाम का कुमार, प्रतिपूर्ण इन्द्रिय वाला सुरूप था ।

सूत्र—तस्स णं संबस्स कुमारस्स मूलसिरी णामं भारिया होत्था, वण्णओ । अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे । कण्हे णिग्गए । मूलसिरी वि णिग्गया, जहा पउमावई । णवरं देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि, जाव सिद्धा । एवं मूलदत्ता वि ।

अर्थ—उस शाम्ब कुमार की मूलश्री नाम भार्या थी, वर्णन योग्य । भगवान् नेमिनाथ पधारे । कृष्ण वदन को गये । मूलश्री भी वदन को गई । पद्मावती की तरह बोली—'हे देवानुप्रिय ! कृष्ण वासुदेव को पूछकर आपकी सेवा में दीक्षा ग्रहण करूंगी' यावत् संयम लेकर सिद्ध हो गई ॥ इसी तरह मूलदत्ता भी समझें ।

॥ इति पांचवा वर्ग समाप्त ॥

षष्टम् वर्ग

सूत्र—जइणं भंते । छट्ठमस्स उक्खेवओ ।

णवरं सोलस अज्झयणा पएणत्ता, तंजहा—

अर्थ—हे भगवन् ! छट्ठे वर्ग का प्रारम्भ । हे भगवन् ! पाचवें वर्ग का भाव सुना, अब छठे वर्ग में श्रमण भगवान् महावीर ने क्या अर्थ फरमाया है, कृपा करके सुनाइये ।

अर्थ—हे जंबू ! छट्ठे वर्ग के सोलह अध्ययन कहे गये हैं। जो इस प्रकार हैं—

सूत्र—मंकाइ किंकमे चेव, मोग्गरपाणी य कासवे ।

खेमए धित्तिधरे चेव, केलासे हरिचंदणे ॥१॥

वारत्तसुंदसण-पुएणभद्द, सुमणभद्द सुपइट्ठे मेहे ।

अइमुत्ते य अलक्खे, अज्झयणाणं तु सोलसयं ॥२॥

गाथा—प्रथम मकाई, दूसरे किंकम, तीसरे मुद्गरपाणि और चौथा काश्यपे पाचवे च्लेमक, छट्ठे धृतिधर, सातवे कैलाश, आठवें हरिचंदन नवमें वारत्त, १० वें सुदर्शन, ग्यारहवें पूर्ण भद्र, १२ वें सुमनभद्र, १३ वें सुप्रतिष्ठ, १४ वें मेघ, १५ वें, अतिमुक्त और १६ वें अलक्ष्य कुमार ये १६ अध्ययन हैं ।

सूत्र—जइणं भंते । सोलस अज्झयणा पएणत्ता, पढमस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पएणत्ते ?

अर्थ—हे भगवन् ! छट्ठे वर्ग के १६ अध्ययन कहे हैं तो प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ फरमाया है ?—श्री सुधर्मा फरमाते हैं—

सूत्र—एवं खलु जंबू। तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे। गुण-सिलए चेइए, सेणिए राया। तत्थ णं मंकाई णामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे गुणसिलए जाव विहरइ, परिसा णिग्गया।

अर्थ—इस प्रकार हे जम्बू! उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था। वहा गुणशिल नामका चैत्य-उद्यान था। श्रेणिक राजा राज्य करते थे। वहा मकाई नाम गाथापति रहता था जो ऋद्धि संपन्न यावत् अपरिभूत था उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर धर्म की आदि करने वाले गुणशिल उद्यान में यावत् विराजमान हुए। धर्म कथा सुनकर समाजन पीछे लौट गये।

सूत्र—तएणं से मंकाई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे जहा पण्णत्तीए गंगदत्तो तहेव इमोवि जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठविता पुरिससहस्सवाहिणीए सीयाए णिक्खंते। जाव अणगारे जाए ईरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी।

अर्थ—तब मकाई गाथापति ने प्रभु के पधारने की कथा सुनकर जैसे विवाह प्रज्ञप्ति—भगवती में गंगदत्त दीक्षार्थ गये वैसे ही यह मकाई गाथापति भी ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब के कार्य भार पर स्थापित करके हजार पुरुषों से उठायी जाने वाली पालखी में बैठकर दीक्षार्थ निकल पडे यावत् अनगार हो गये ईर्यासमिति वाले तथा गुप्त ब्रह्मचारी बन गये।

सूत्र—तएणं से मंकाई अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइय-माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ। सेसं जहा खंदयस्स। गुणरयणं तवोकम्मं सोलस-वासाइं परियाओ, तहेव विपुले सिद्धे ॥दोच्चस्स उक्खेवओ, किंकमे वि एवं चेव। जाव विपुले सिद्धे ॥२॥

अर्थ—इसके बाद वह मकाई मुनि श्रमण भगवान् महावीर के गुण सपन्न स्थविरों के पास सामायिक आदि ईग्यारह अंगों का अध्ययन किया शेष वर्णन स्कदक के समान, गुण रत्न तप का आराधन किया, सोलह वर्ष की दीक्षा-पाली और विपुल पर्वत पर सिद्ध हो गये। दूसरे अध्ययन का आरम-किंकम भी मकाई के समान ही दीक्षा लेकर विपुला चल पर सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गये ॥ २ ॥

॥ इति प्रथम-द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

सूत्र—तच्चस्स उक्खेवओ ।

अर्थ—तीसरे अध्ययन का प्रारम्भ—"हे भगवान् श्रमण भगवान् महावीर ने छट्ठे वर्ग के दूसरे अध्ययन का भाव फरमाया सो सुना, तीसरे अध्ययन का प्रभु ने क्या अर्थ कहा है ? कृपा कर फरमाइये ।

सूत्र—एवं खलु जंबू । तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे । गुण-सिलए चेइए, सेणिए राया । चेल्लणा देवी ।

अर्थ—इस प्रकार निश्चय हे जबू ! उस काल उस समय राजगृह नगर के बाहर गुणशिल उद्यान था । श्रेणिक राजा राज्य करते थे, उनकी चेलना देवी रानी थी ।

सूत्र—तत्थणं रायगिहे णयरे अज्जुणए णामं मालागारे परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए । तस्स णं अज्जुणयस्स बंधुमई णामं भारिया होत्था सुकुमालपाणिपाया । तस्स णं अज्जुणयस्स मालागारस्स रायगिहस्स णयरस्स बहिया एत्थ णं महं एगे पुप्फारामे होत्था । कण्हे जाव णिकुरंबभूए दसद्धवण्णकुसुम-कुसुमिए पासाईए ४ ।

अर्थ—वहा राजगृह नगर में अर्जुन नाम का माली रहा करता था । वह आढ्य=सपन्न और किसी से पराभव नहीं पाने योग्य था । उस अर्जुन माली की बन्धुमती नामा भार्या थी । जो सुकुमाल हाथ पैरों वाली थी । उस अर्जुन माली का राजगृह नगर के बाहर एक बडा पुष्पाराम=फूल का बगीचा था, काला यावत् हरा भरा था । वहां पाच वर्ण के फूल खिले हुए थे । वह मन को प्रसन्न करने वाला—दर्शनीय था ।

सूत्र—तस्स णं पुप्फारामस्स अदूरसामंते तत्थ णं अज्जुणयस्स मालागारस्स अज्जयपज्जयपिइपज्जयागए अणेगकुलपुरिसपरंपरागए, मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था, पोराणे दिव्वे, सच्चे जहा पुण्णभद्दे। तत्थ णं मोग्गरपाणिस्स पडिमा एगं महं पलसहस्स णिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं गहाय चिट्ठइ ॥१॥

अर्थ—उस फूलवाड़ी केपास अर्जुन माली के पिता पितामह और प्रपितामह से चला आया, अनेक कुल पुरुषों की परम्परा से सेवित मोगर पाणि यक्ष का यक्षायतन था, जो प्राचीन दिव्य और सत्य प्रभाव वाला था, जैसे—पूर्णभद्र। वहा मोगर पाणि यक्ष की मूर्ति एक हजार पल भार का लोह मय बड़ा मुद्गर लिये खड़ी थी ॥ १ ॥

सूत्र—तएणं से अज्जुणए मालागारे बालप्पभिइं चेव मोग्गर पाणिजक्खस्स भत्ते यावि होत्था। कल्लाकल्लिं पच्छिपिडगाइं गिण्हइ, गिण्हित्ता रायगिहाओ णयराओ पडिणिक्खमइ, २ त्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छइ।

अर्थ—वह अर्जुन माली बचपन से ही मोगरपाणियक्ष का भक्त था, प्रतिदिन प्रातःकाल बाम की छाब लेकर वह राजगृह नगर से निकलता और जहा फुलवाड़ी थी वहा आता,

सूत्र—उवागच्छित्ता पुप्फुच्चयं करेइ करित्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाइ, गहित्ता जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चयणं करेइ करित्ता जाणुपायपडिए पणामं करेइ, करित्ता तओ पच्छा रायमग्गंसि विचिं कप्पेमाणे विहरइ ॥२॥

अर्थ—वहा आकर पुष्पचयन करता=फूल चुना करता, फूल चुन कर अच्छे श्रेष्ठ फूलों को लेकर जहा मोगर पाणि यक्ष का देवायतन है, वहा आया और मोगर पाणि यक्ष के सम्मुख महार्घ्य फूल-चढाकर, फिर भूमि पर घुटने टेककर प्रणाम करता। इसके बाद राजमार्ग पर फूल बेचते हुए विचरण करता। (इस प्रकार सुख पूर्वक जीवन बिताता।)।

सूत्र—तत्थ णं रायगिहे णयरे ललिया णामं गोट्ठी परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया, जंकयसुकया यावि होत्था।

अर्थ—उस राजगृह नगर में 'ललिता' नामकी एक गोष्ठी-मित्र मण्डली रहा करती, ऋद्धि-सपन्न यावत् दूसरो के पराभव रहित थी, जो शुभ कर्म से राजा का प्रसाद प्राप्त किये हुई थी (राजा की ओर से उनको स्वच्छा विहार की छूट थी)।

सूत्र—तएणं रायगिहे णयरे अण्णया कयाइं पमोए घुट्ठे यावि होत्था।

अर्थ—फिर राजगृह नगर में अन्यदा कभी प्रमोद-उत्सव की घोषणा हुई।

सूत्र—तएणं से अज्जुणए मालागारे 'कल्लं पभूयतराएहिं पुप्फेहिं कज्जमिति कट्टु पच्चूसकाल-समयंसि बंधुमईए भारियाए सद्धिं पच्छिपिडयाइं गिण्हइ, गिण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता रायगिहं णयरं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता बंधुमईए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेइ ॥३॥

अर्थ—तब अर्जुन माली कल बहुत अधिक फूलों की आवश्यकता होगी, यह सोचकर प्रात काल जल्दी से उठकर बंधुमती भार्या के साथ बांस की छाब ले कर अपने घर से निकला और निकल कर राजगृह नगर के मध्य से चलता हुआ। जहा पुष्पराम है वहा आया और बन्धुमती भार्या के साथ फूल चुनने लगा ॥ ३ ॥

सूत्र—तएणं तीसे ललियाए गोट्ठीए छ, गोट्ठिल्ला पुरिसा जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागया, अभिरममाणा चिट्ठंति ।

अर्थ—तब उस समय 'ललिता' मडली के छः गौष्ठिक पुरुष जहा मोगर पाणि यक्ष का मंदिर था वहा आये और परस्पर क्रीडा करने लगे ।

सूत्र—तएणं से अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेइ, करित्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाय जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ ।

अर्थ—उस समय अर्जुनमाली ने बंधुमती भार्या के साथ पुष्पचयन किया । और फिर श्रेष्ठ फूलों को ग्रहण करके जहा मोगर पाणि यक्ष का मंदिर था वहा आने लगा ।

सूत्र—तएणं ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा अज्जुणयं मालागारं बंधु-
मईए भारियाए सद्धिं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता, अण्णमण्णं एवं वयासी—

अर्थ—उन छह गौष्ठिक पुरुषो ने अर्जुन माली को बधुमती भार्या के साथ आते हुए देखा, देखकर परस्पर इस प्रकार बोले—

सूत्र—एस खलु देवाणुप्पिया! अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारि-याए सद्धिं इहं हव्वमागच्छइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अज्जुणयं मालागारं अवओडयबंधणयं करित्ता बंधुमईए भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणाणं विहरित्तए।

अर्थ—हे देवानुप्रिय! यह अर्जुनमाली बधुमती भार्या के साथ शीघ्र यहा आ रहा है, इसलिए हमको चाहिये कि—हे देवानुप्रियो! अर्जुन माली को ऊँधी मुश्क से बाध कर बधुमती स्त्री के साथ विपुल भोग भोगते विचरें।

सूत्र—तिकट्टु एयमट्ठं अण्णमण्णस्स पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता कवाडंतरेसु णिलुक्कंति, णिच्चला णिप्फंदा, तुसिणीया पच्छण्णा चिट्ठंति ॥४॥

अर्थ—ऐसा विचारकर उन्होने एक दूसरे की बात सुनी और किंवाडों के पीछे निश्चल छिप गये। श्वास रोककर चुपचाप प्रच्छन्न खड़े रहे।

सूत्र–तएणं से अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारियाए सद्धिं जेणेव मोग्गरपाणिजक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेइ, करित्ता जाणुपायवडिए पणामं करेइ।

अर्थ–उस समय अर्जुन माली अपनी बन्धुमती भार्या के साथ जहा मोगर पाणि यक्ष का मन्दिर था वहा आकर देखते ही प्रणाम किया, प्रणाम करके बहुमूल्य पुष्प चढाये, फिर घुटने टेककर प्रणाम करने लगा।

सूत्र—तएणं ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा दवदवस्स कवाडंतरेहिंतो णिग्गच्छंति णिग्गच्छित्ता अज्जुणयं मालागारं गिण्हित्ता अवओडयबंधणं करेंति, करित्ता बंधुमईए मालागारीए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति।

अर्थ—तब वे मण्डली के छहां पुरुष जल्दी जल्दी किवाड़ के पीछे से निकले और निकल कर अर्जुन माली को पकड़ लिया और उसे औंधी मुश्क से बाध दिया फिर बंधुमती मालिन के साथ विपुल भोग भोगने लगे।

सूत्र–तएणं तस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमज्झत्थिए समुप्पराणे एवं खलु अहं बालप्पभिइं चेव मोग्गरपाणिस्स भगवओ कल्लाकल्लिं जाव वित्तिं कप्पेमाणे विहरामि।

अर्थ—उस समय अर्जुन माली के मन मे यह विचार हुआ—"मैं अपने बचपन से ही मोगर पाणि यक्ष की प्रतिदिन पूजा करके फिर आजीविका चलाने को जाता रहा हू।

सूत्र—तं जईणं मोग्गरपाणिजक्खे इह सण्णिहिए होंते सेणं किं ममं एयारूवं आवत्तिं पावेज्जमाणं पासंते, तं णत्थि णं मोग्गर-पाणिजक्खे इह सण्णिहिए, सुव्वत्तं तं एस कट्ठे ॥५॥

अर्थ—तो यदि मोगर पाणि यक्ष देव यहा होता तो क्या मुझे इस प्रकार विपत्ति में गिरते देखता ? इसलिये निश्चय ही यहा मोगर पाणियक्ष देव नहीं है। स्पष्ट ही यह काष्ठ का पुतला है ॥५॥

सूत्र—तएणं से मोग्गरपाणि जक्खे अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमेयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरयं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तडतडस्स बंधाइं छिंदइ, तं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं मोग्गरं गिण्हइ, गिण्हित्ता ते इत्थिसत्तमे छपुरिसे घाएइ।

अर्थ—तब उस मोगर पाणि यक्ष ने अर्जुनमाली के इस मनोगत भावों को जानकर अर्जुनमाली के शरीर में प्रवेश किया और प्रवेश करके तडाक करके बधन तोड डाले। तथा उस हजार पल भार वाले लोहमय मुद्गर को हाथ में लेकर उन छह पुरुष और सातवीं स्त्री को मार डाला।

सूत्र— तएणं से अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अणाइट्ठे समाणे रायगिहस्स णयरस्स परिपेरंतेणं कल्लाकल्लिं इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घायमाणे विहरइ ॥६॥

अर्थ—फिर वह अर्जुन माली मोग्गरपाणियक्ष के आवेश में राजगृह नगर के आस पास चारों ओर प्रतिदिन छह पुरुष और सातवीं स्त्री को मारता हुआ रहने लगा ॥६॥

सूत्र–तएणं रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव महापहेसु वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ४-एवं खलु 'देवाणुप्पिया! अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अणाइट्ठे समाणे रायगिहे बहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएमाणे विहरइ।'

अर्थ– उस समय राजगृह नगर में शृंगाटक आदि राजमार्गों में बहुत से लोग परस्पर ऐसा बोलने लगे४, इस प्रकार 'हे देवानुप्रियो! अर्जुन माली मोगरपाणि यक्ष से आविष्ट होकर राजगृह नगर के बाहर छह पुरुष और सातवीं स्त्री को प्रतिदिन मार रहा है।'

सूत्र–तएणं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्जुणए मालागारे जाव घाएमाणे विहरइ।

अर्थ--इसके बाद जब श्रेणिक राजा ने यह बात सुनी तो उन्होंने अपने सेवक पुरुष को बुलाया और इस प्रकार बोले–'हे देवानुप्रिय! राजगृह नगर के बाहर अर्जुन माली यावत् छ पुरुष और सातवीं स्त्री को नित्य मारता रहता है।

सूत्र—तं माणं तुब्भे केइ तणस्स वा, कट्ठस्स वा, पाणियस्स वा पुप्फफलाणं वा अट्ठाए सइरं णिगच्छउ मा णं तस्स सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ।

अर्थ--इसलिए तुम लोग कोई तृण के लिए काष्ठ, पानी अथवा फूल फल लिए इच्छानुसार नगर के बाहर मत निकलो, जिससे उसके (तुम्हारे) शरीर का विनाश न हो।

सूत्र—त्तिकट्टु दोच्चं पि तच्चं पि घोसणं घोसेह, घोसित्ता खिप्पामेव ममेयं पच्चप्पिणह। तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ॥७॥

अर्थ—इस प्रकार दूसरी बार, तीसरी बार, भी घोषणा करो घोषणा करके शीघ्र ही मुझे फिर सूचित करो। आज्ञाकारी पुरुषों ने उसी प्रकार घोषणा करके सूचना कर दी।

सूत्र—तत्थणं रायगिहे णयरे सुदंसणे णामं सेट्ठी परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए। तएणं से सुदंसणे समणोवासए यावि होथा। अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे जाव विहरइ।

अर्थ—उस राजगृह नगर में सुदर्शन नाम का एक सेठ रहा करता, जो आढ्य=सम्पन्न और दूसरे से पराभव रहित था, फिर वह सुदर्शन श्रमणोपासक था, जीव अजीव का जानकार यावत् श्रमणों को प्रतिलाभ=देते विचरता था। उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर राजगृह के उद्यान में पधारे यावत् विचरने लगे।

सूत्र—तएणं रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव महापहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ?

अर्थ--तब राजगृह नगर में शृंगाटक आदि राजमार्ग में बहुत से लोग परस्पर इस प्रकार कहने लगे जिस प्रभु का नाम गोत्र श्रवण भी महाफल का कारण है, फिर विपल अर्थ के ग्रहण का तो कहना ही क्या ?

सूत्र—तएणं तस्स सुदंसणस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म अयं अज्झत्थिए जाव समुप्पण्णे।

अर्थ—तब सुदर्शन श्रावक को लोगों के पास यह बात सुनकर ऐसा मन में विचार उत्पन्न हुआ।

सूत्र—एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ। तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि एवं संपेहेइ संपेहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल परिग्गहियं जाव एवं वयासी—

अर्थ—'निश्चय! श्रमण भगवान् महावीर यावत् नगर के बाहर विराजमान हैं, इसलिये मैं जाऊ और श्रमण भगवान महावीर को वदना नमस्कार करू, ऐसा सोचकर जहा माता-पिता थे, वहा आया और हाथ जोड कर यावत् यो बोला—

सूत्र—एवं खलु अम्मयाओ! समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ। तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि जाव पज्जुवासामि ॥८॥

अर्थ—निश्चय हे माता पिता! श्रमण भगवान् महावीर यावत् नगर के बाहर उद्यान में विचर रहे हैं अत मै सेवा मे जाऊँ और श्रमण भगवान् महावीर को वंदना नमस्कार करूँ, यावत् सेवा करूँ (ऐसी मेरी इच्छा है। ॥८॥

सूत्र—तएणं तं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो एवं वयासी— एवं खलु पुत्ता ! अज्जुणए मालागारे जाव घाएमाणे विहरइ, तं माणं तुमं पुत्ता ! समणं भगवं महावीरं वंदए णिगच्छाहि, माणं तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्सइ । तुमं णं इहगए चेव समणं भगवं महावीरं वंदाहि णमंसाहि ।

अर्थ— सुदर्शन की बात सुनकर फिर माता-पिता उस सुदर्शन को इस प्रकार बोले—हे पुत्र ! निश्चय नगर के बाहर अर्जुन माली छह पुरुष और सातवीं स्त्री को मारता है, इसलिये पुत्र ! तुम श्रमण भगवान् महावीर को वंदन करने मत निकलो, कदाचित् तुम्हारे शरीर को कोई हानि न हो जाय । तुम यहा रहे हुए ही श्रमण भगवान् महावीर को वंदना नमस्कार करलो ।

सूत्र—तएणं सुदंसणे सेट्ठी अम्मापियरं एवं वयासी— किएणं अहं अम्मयाओ ! समणं भगवं महावीरं इहमागयं इह पत्तं इह समोसढं, इह गए चेव वंदिस्सामि णमंसिस्सामि ? तं गच्छामि णं अहं अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव पज्जुवासामि ॥६॥

अर्थ—तब सुदर्शन सेठ माता पिता को इस प्रकार बोले—हे मातापिता ! जब श्रमण भगवान् महावीर यहा पधारे हैं, यहा विराजे हैं और यहा समवसृत हैं तो मैं उनको यहा रह कर ही कैसे वंदना-नमस्कार करूं ? (यह कैसे हो) इसलिये हे ! माता पिता आप आज्ञा दीजिये 'मैं श्रमण भगवान् महावीर की वंदना करूं ? नमस्कार करूं ? यावत् सेवा करूं' ॥ ६ ॥

सूत्र--तएणं तं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो जाहे णो संचायंति बहूहिं आघवणाहिं ४ जाव परूवेत्तए। तएणं से अम्मा-पियरो ताहे अकामया चेव सुदंसणं सेट्ठिं एवं वयासी-'अहासुहं देवाणुप्पिया !'

अर्थ--उस सुदर्शन सेठ को माता-पिता जब अनेक प्रकार की युक्तियो से नहीं समझा सके, तब माता-पिता ने अनिच्छा पूर्वक ही सदर्शन को इस प्रकार कहा—जैसा सुख हो हे देवानुप्रिय! वैसा करो'।

सूत्र—तएणं से सुदंसणे सेट्ठि अम्मापिइहिं अब्भणुण्णाए समाणे ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे, सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पायविहारचारेणं राय-गिहं णयरं मज्झंमज्झेणं णिगच्छइ, णिगच्छित्ता मोग्गर-पाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामंतेणं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

अर्थ--तब सुदर्शन सेठ ने माता-पिता की आज्ञा पाकर स्नान किया और शुद्ध धर्म सभा में प्रवेश योग्य वस्त्र धारण किये। यावत् अपने घर से निकला और पैदल यात्रा से राजगृह नगर के मध्य से निकल कर मोगर पाणि यक्ष के मदिर के पास होते हुए 'जहा गुणशिल चैत्य=उद्यान और जहा श्रमण भगवान् महावीर हैं' उस ओर जाने लगा।

सूत्र—तएणं से मोग्गरपाणि जक्खे सुदंसणं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं वीईवयमाणं पासइ, पासित्ता आसुरत्ते तं पलसहस्स णिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥१०॥

अर्थ—तब वह मोगर पाणि यक्ष सुदर्शन श्रमणोपासक को समीप से जाते देख कर क्रुद्ध हुआ और उस हजार पल भार के लोहमयमुद्गर को घुमाते घुमाते जहा सुदर्शन सेठ तब श्रमणोपासक था वहा चला कर आने लगा ॥१०॥

सूत्र—तएणं से सुदंसणे समणोवासए मोग्गरपाणिं जक्खं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता, अभीए, अतत्थे, अणुव्विग्गे, अक्खुभिए, अचलिए, असंभंते, वत्थंतेणं भूमिं पमज्जइ, पमज्जित्ता करयल एवं वयासी—

अर्थ—सुदर्शन श्रमणोपासक मुद्गर पाणि यक्ष को आते देख कर डरा नहीं, त्रास, उद्वेग एव क्षोभ प्राप्त नहीं हुआ मन में जरा भी विचलित और सभ्रान्त हुए बिना वस्त्र के छोर से भूमि का प्रमार्जन किया, प्रमार्जन कर दोनो हाथ जोड इस प्रकार बोले—

सूत्र—णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं,

१. णमोत्थुणं समणस्स जाव संपाविउकामस्स

नमस्कार हो अरिहन्त भगवान् यावत् मोक्ष प्राप्त—सिद्धों को नमस्कार हो श्रमण यावत मुक्ति पाने वाले प्रभु महावीर को ।

सूत्र-२. पुव्विं च णं मए भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, ३. थूलए मुसावाए, थूलए अदिण्णादाणे सदारसंतोसे कए जावज्जीवाए, इच्छा परिमाणे कए जावज्जीवाए ।

अर्थ—मैंने पहले श्रमण भगवान महावीर के पास स्थूल प्राणातिपात का आजीवन प्रत्याख्यान=त्याग किया, स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान का त्याग किया स्वदार संतोष और इच्छा परिमाण रूप स्थूल परिग्रह विरमण व्रत जीवन भर के लिये धारण किया,

सूत्र—तं इयाणिं पि णं तस्सेव अंतियं सव्वं पाणाइवायं, पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं मुसावायं, सव्वं अदिण्णादाणं सव्वं मेहुणं सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए ।

अर्थ—अब भी उन्हीं भगवान् के पास (साक्षि से) सर्वथा प्राणातिपात, सर्वथा मृषावाद, सर्वथा अदत्तादान, सर्वथा मैथुन और सम्पूर्ण-परिग्रह का आजीवन त्याग करता हूँ। सर्वथा क्रोध तथा सर्वथा मान यावत् मिथ्यात्व दर्शन का भी आजीवन त्याग करता हूं। सब प्रकार का अशन, पान, खादिम और स्वादिम चारों प्रकार के आहार का आजीवन त्याग करता हूं.

सूत्र—जइणं एत्तो उवसग्गाओ मुच्चिस्सामि तो मे कप्पइ पारेत्तए। अहणं एत्तो उवसग्गाओ न मुच्चिस्सामि तओ मे तहा पच्चक्खाए चेव तिकट्टु सागारं पडिमं पडिवज्जइ ।

अर्थ—यदि मैं इस उपसर्ग से छूट जाऊँ तो पारना आहारादि ग्रहण करना कल्पता है, यदि मै इस उपसर्ग से मुक्त न होऊ (नहीं बचूं) तो मुझे इस प्रकार का सपूर्ण त्याग है, ऐसा निश्चय कर सागारी पडिमा (आगार सहितव्रत) धारण कर लिया।

सूत्र—तएणं से मोग्गरपाणी जक्खे तं पलसहस्सणिप्फरणं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए।

अर्थ— उस समय मोगर पाणी यक्ष उस हजार पल के लोहमय मुद्गर को घुमाता हुआ जहां सुदर्शन श्रमणोपासक था उस ओर आया। परन्तु सुदर्शन श्रमणोपासक को अपने तेज से दबाने-चलाने में समर्थ नहीं हुआ।

सूत्र—तएणं से मोग्गरपाणी-जक्खे सुदंसणं समणोवासयं सव्वओ समंताओ परिघोलेमाणे २ जाहे नो चेवणं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए,

अर्थ—मोगरपाणीयक्ष सुदर्शन श्रावक के चारों ओर घूमता २ जब सुदर्शन श्रमणोपासक को अपने तेज से पराजित नहीं कर सका,

सूत्र—तहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स पुरओ सपक्खिं सपडिदिसि ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाए दिट्ठीए सुचिरं निरिक्खइ णिरिक्खित्ता, अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरं विप्पजहाइ, विप्पजहित्ता तं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं गहाय जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥१२॥

अर्थ—तब सुदर्शन श्रमणोपासक के सम्मुख बराबरी में खड़ा रहकर सुदर्शन श्रमणोपासक को अनिमेष दृष्टि से चिरकाल तक देखता रहा। फिर अर्जुनमाली के शरीर को छोड़कर उस हजार पल भार के लोहमय मुद्गर को लिये जिस दिशा से आया उसी दिशा की ओर चला गया।

सूत्र—तएणं से अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं विप्पमुक्के समाणे धसत्ति धरणियलंसि सव्वंगेहिं णिवडिए। तएणं से सुदंसणे समणोवासए णिरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ।

अर्थ—उस समय अर्जुनमाली मोगर पाणी यक्ष से मुक्त होने पर 'धस' ऐसी आवाज के साथ भूमि पर सर्वांग से गिर पड़ा। तब सुदर्शन श्रमणोपासक ने अपने को निरुपसर्ग जानकर प्रतिज्ञा पूर्ण की (ध्यान खुला किया)।

सूत्र–तएणं से अज्जुणए मालागारे तओ मुहुत्तंतरेणं आसत्थे समाणे उट्ठेइ, उट्ठित्ता सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी– तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! के ? कहिं वा संपत्थिया ?

अर्थ—इधर वह अर्जुनमाली मुहूर्त भर=कुछ समय,—के पश्चात् आश्वस्त=स्वस्थ, होकर उठा और सुदर्शन श्रमणोपासक को (सामने देखकर) इस प्रकार बोला—'हे देवानुप्रिय ! आप कौन हो, तथा कहाँ जा रहे हो ?'

सूत्र—तएणं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सुदंसणे णामं समणोवासए अभिगय-जीवाजीवे गुणसिलए चेइए समणं भगवं महावीरं वंदिउं संपत्थिए ॥१३॥

अर्थ— तब सुदर्शन श्रमणोपासक अर्जुनमाली को इस तरह बोला–हे देवानुप्रिय ! मैं जीवादि तत्वों का ज्ञाता सुदर्शन नाम का श्रमणोपासक हूँ, गुणशिल नामके उद्यान में श्रमण भगवान् महावीर को वंदन करने जा रहा हूँ ।

सूत्र—तएणं से अज्जुणए मालागारे सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी-तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अहमवि तुमए सद्धिं समणं भगवं महावीरं वंदित्तए जाव पज्जुवासित्तए । 'अहासुहं देवाणुप्पिया !'

अर्थ–तब अर्जुनमाली सुदर्शन श्रमणोपासक को इस प्रकार बोला–हे देवानुप्रिय ! मैं भी तुम्हारे साथ श्रमण भगवान् महावीर की वंदना करना, नमस्कार करना यावत् सेवा करना चाहता हूँ । (सुदर्शन)—'हे देवानुप्रिय ! जैसा सुख हो वैसा करो',

सूत्र—तएणं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासइ।

अर्थ—इसके बाद वह सुदर्शन श्रमणोपासक अर्जुनमाली के साथ जहां गुणशिल उद्यान में श्रमण भगवान् महावीर विराजमान थे। वहां आया और अर्जुनमाली के साथ श्रमण भगवान् महावीर को तीन बार प्रदक्षिणा पूर्वक वंदन कर सेवा करने लगा।

सूत्र—तएणं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स समणोवासयस्स, अज्जुणयस्स मालागारस्स तीसे य धम्मकहा। सुदंसणे पडिगए ॥१४॥

अर्थ—उस समय श्रमण भगवान् महावीर ने सुदर्शन श्रमणोपासक, अर्जुनमाली और उस विशाल सभा के सम्मुख धर्म कथा फरमाई। सुदर्शन धर्मकथा सुनकर पीछे लौट गया।

सूत्र—तएणं से अज्जुणए मालागारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म, हट्ठतुट्ठ एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते! णिग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि। 'अहासुहं देवाणुप्पिया!'

अर्थ—तब अर्जुनमाली श्रमण भगवान् महावीर के पास धर्मोपदेश सुनकर एवं धारण कर बडा प्रसन्न हुआ और इस प्रकार बोला—हे भगवन्! मैं आप द्वारा कहे हुए निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ, रुचि करता हूँ, यावत् आपके चरणों में व्रत लेना चाहता हूँ।—'हे देवानुप्रिय! जैसा सुख हो',

सूत्र—तएणं से अज्जुणए मालागारे उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए अवक्कमइ अवक्कमित्ता, सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जाव अणगारे जाए जाव विहरइ।

अर्थ—तब उन अर्जुनमाली ने ईशान कोण में जाकर स्वय ही पचमौष्टिक लुचन किया, लोच करके यावत् अनगार हो गये। और सयम तप से विचरने लगे।

सूत्र—तएणं से अज्जुणए अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे जाव पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं उग्गिण्हइ—'कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए तिकट्टु अयमेवारूवं अभिग्गहं उग्गिण्हइ, उग्गिण्हित्ता जावज्जीवाए जाव विहरइ ॥१५॥

अर्थ—इसके पश्चात् अर्जुन मुनि ने जिस ही दिन मुडित हो प्रव्रज्या ग्रहण की, उसी दिन श्रमण भगवान् महावीर को वदना नमस्कार करके इस प्रकार का अभिग्रह स्वीकार किया– 'आज से मैं निरतर बेले बेले, की तपस्या से आजीवन आत्मा को भावित करते हुए विचरूगा। ऐसा अभिग्रह स्वीकार कर जीवन भर के लिए यावत् विचरने लगे। ॥१५॥

सूत्र—तएणं से अज्जुणए अणगारे छट्ठक्खमणपारणयंसि पढम-पोरिसीए सज्झायं करेइ, जहा गोयमसामी जाव अडइ।

अर्थ—इसके पश्चात् अर्जुन मुनि बेले की तपस्या के पारणे के दिन प्रथम पहर में स्वाध्याय करते, गौतमस्वामी के समान यावत् राजगृह नगर में भिक्षार्थ भ्रमण करते।

सूत्र—तएणं तं अज्जुणयं अणगारं रायगिहे णयरे उच्चणीय जाव अडमाणं बहवे इत्थीओ य पुरिसा य डहरा य महल्ला य जुवाणा य एवं वयासी–

अर्थ—उस समय उस अर्जुन मुनि को राजगृह नगर में उच्च-नीच यावत् घूमते हुए बहुत सी स्त्रिया, पुरुष, छोटे बच्चे, बडे बूढे और जवान देखकर इस प्रकार कहते—

सूत्र—"इमेणं मे पिया मारिए, इमेणं मे माया मारिया, भाया मारिए, भगिणी मारिया, भज्जा मारिया पुत्ते मारिए, धूया मारिया, सुण्हा मारिया, इमेणं मे अण्णयरे सयण-संबंधि-परियणे मारिए त्तिकट्टु अप्पेगइया अक्को-संति, अप्पेगइया हीलंति, णिंदति, खिसंति, गरिहंति तज्जेंति, तालेंति" ॥१६॥

अर्थ—"इसने मेरे पिता को मारा है, इसने मेरी माता को मारी, भाई को मारा, बहन को मारी, भार्या को मारी, पुत्र को मारा, कन्या को मारी, पुत्र वधू को मारी, इसने मेरे अमुक स्वजन सबधी को मारा ऐसा कहकर कोई गाली देते, कोई हीलना–अनादर करते, कोई निन्दा करते, कोई जाति आदि का दोष बताकर गर्हा करते, कोई भय बताकर तर्जना करते, और चपेटा आदि भी मारते।"

सूत्र—तएणं से अज्जुणए अणगारे तेहिं बहूहिं इत्थीहि य पुरि-सेहिं य डहरेहिं य महल्लेहिं य जुआणएहिं य आओ-सेज्जमाणे जाव तालेज्जमाणे तेसिं मणसा वि अप्प-उस्समाणे सम्मं सहइ, सम्मं खमइ, सम्मं तितिक्खइ, सम्मं अहियासेइ, सम्मं सहमाणे, खममाणे, तितिक्ख-माणे अहियासमाणे, रायगिहे णयरे उच्चणीयमज्झिम-कुलाइं अडमाणे जइ भत्तं लभइ, तो पाणं ण लभइ, जइ पाणं लभइ तो भत्तं ण लभइ।

अर्थ—तब वह अर्जुन मुनि उन बहुत से स्त्री–पुरुष, बच्चे-बूढे और जवानों से आक्रोश=गाली, यावत् ताडना पाकर मन से भी उन पर द्वेष नहीं करते हुए सम्यग् प्रकार से परीषह को सहन करते, प्रतीकार की स्थिति में भी क्षमा करते, प्रसन्नता से सहन करते और निर्जरा का लाभ समझकर हर्षानुभव करते। सम्यग् सहन करते, क्षमा करते, तितिक्षा रखते और अध्यास=लाभ मानते हुए राजगृह नगर के छोटे-बडे- मध्यकुलों में भ्रमण करते हुए कभी भोजन पाते तो पानी नहीं मिलता, और पानी मिलता तो भोजन नहीं मिलता।

सूत्र—तएणं से अज्जुणए अणगारे अदीणे, अविमणे, अकलुसे, अणाइले, अविसाई, अपरितंतजोगी अडइ, अडित्ता।

अर्थ—वैसी स्थिति में (=अल्प स्वल्प में भी) अर्जुन मुनि दीन नहीं होते, विमना–उदास, कलुष-मलिन भाव, आकुल व्याकुल पन और विषाद खेद रहित योगों में थकान अनुभव नहीं करते हुए भ्रमण करते, भ्रमण कर,

सूत्र—रायगिहाओ णयराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे जहा गोयमसामी जाव पडिदंसेइ पडिदंसित्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे, अमुच्छिए बिल मिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तमाहारं आहारेइ ॥१७॥

अर्थ—राजगृह नगर से निकलते और गुणशिल उद्यान में जहां श्रमण भगवान् महावीर विराजमान थे वहां आकर गौतमस्वामी की तरह आहार दिखाते और दिखाकर श्रमण भगवान् महावीर की आज्ञा पाकर मूर्च्छा रहित बिल में सर्प जैसे सीधा ही प्रवेश करता है उसी तरह राग-द्वेष रहित आत्मा से उस आहार का सेवन करते।

सूत्र—तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइं रायगिहाओ णयराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिं जणवयविहारं विहरइ।

अर्थ—फिर श्रमण भगवान् महावीर अन्यदा कदाचित् राजगृह नगर से निकल-कर बाहर जनपद देश, मे विहार करने लगे।

सूत्र—तएणं से अज्जुणए अणगारे तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्ण-परियागं पाउणइ,

अर्थ—तब अर्जुन मुनि उस उदार श्रेष्ठ पवित्र भाव से ग्रहण किये गये महालाभकारी विपुल तप से आत्मा को भावित करते हुए पूरे छह महीने चारित्र धर्म का पालन किया।

सूत्र–अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेइ, तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ जाव सिद्धे ॥१८॥

अर्थ—आधे मास की संलेखना से आत्मा को जोडकर तीस भक्त के अनशन को पूर्ण कर जिस कार्य के लिए व्रत ग्रहण किया उसको पूर्ण कर यावत् सिद्ध हो गये।

॥ तृतीय अध्ययन समाप्त ॥

सूत्र—उक्खेवत्र्यो चउत्थस्स अज्झयणस्स ।

अर्थ—चौथे अध्ययन का प्रारम्भ ।। (हे भगवन् ! छठे वर्ग के तीसरे अध्ययन में प्रभु ने जो भाव फरमाये, वे तो सुने अब चौथे अध्ययन में क्या कहा है ? कृपया फरमाइये ।)

सूत्र—एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए । तत्थ णं सेणिए राया । कासवे णामं गाहावई परिवसइ, जहा मंकाई । सोलस वासा परियाओ विपुले सिद्धे ।।४।।

अर्थ—इस प्रकार हे जवू ! उस काल उस समय राजगृह नगर में गुणशिल उद्यान था । वहा श्रेणिक राजा राज्य करता था । वहा काश्यप नाम का एक गाथापति रहा करता था, की मकाई की तरह इसने सोलह वर्ष की दीक्षा पाली और विपुल गिरि पर्वत पर सिद्ध हो गये ।।४।।

सूत्र—एवं खेमए वि गाहावई, णवरं कागंदी णयरी सोलस-वासा परियाओ विपुले पव्वए सिद्धे ।।५।।

अर्थ—इसी प्रकार क्षेम गाथापति भी, विशेष-काकदी नगरी के निवासी और सोलह वर्ष का दीक्षा काल यावत् क्षेम अनगार भी विपुल गिरि पर सिद्ध हुए ।।५।।

सूत्र—एवं धितिहरे वि गाहावई, काकंदी णयरी सोलस वासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे ।।६।।

अर्थ—ऐसे ही धृतिघर गाथापति भी काकदी का निवामी था सोलह वर्ष चारित्र पालकर वह भी विपुलगिरी पर सिद्ध हुआ ।।६।।

सूत्र—एवं केलासे वि गाहावई, णवरं सागेए णयरे, बारस वासाइं परियाओ, विपुले सिद्धे ॥७॥

अर्थ—ऐसे कैलाश गाथापति भी, विशेष-यह साकेत नगर का रहने वाले थे, बारह वर्ष की दीक्षा पर्याय और विपुल गिरी पर सिद्ध हुए ॥७॥

सूत्र—एवं हरिचंदणे वि गाहावई, सागेए णयरे, बारस-वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥८॥

अर्थ—ऐसे आठवें हरिचदन गाथापति भी, साकेत नगर के निवासी थे बारह वर्ष का चारित्र पालन कर विपुल गिरी पर सिद्ध हुए ॥८॥

सूत्र—एवं बारत्तए वि गाहावई, णवरं रायगिहे णयरे, बारस वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥९॥

अर्थ—ऐसे नवमें बारत्त गाथापति भी, विशेष ये राजगृह नगर के रहने वाले थे, बारह वर्ष का चारित्र पालन कर विपुलगिरी पर सिद्ध हुए ॥९॥

सूत्र—एवं सुदंसणे वि गाहावई, णवरं वाणिय गामे णयरे, दूइपलासए चेइए, पंच वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥१०॥

अर्थ—दशवें सुदर्शन गाथापति भी इसी प्रकार समझें, विशेष-वाणिज्य ग्राम नगर के बाहर दूतिपलाश उद्यान था, पाच वर्ष का चारित्र पालन कर विपुल गिरी पर सिद्ध हुए ॥१०॥

सूत्र—एवं पुण्णभद्दे वि गाहावई, वाणीयगामे णयरे, पंचवासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥११॥

अर्थ—पूर्णभद्र गाथापति भी ऐसे ही समझें-विशेष-वाणिज्य ग्राम नगर का रहने वाला, पांच वर्ष का चारित्र पालनकर वह भी विपुलाचल पर सिद्ध हुआ ॥११॥

सूत्र—एवं सुमणभद्दे वि गाहावई, सावत्थी णयरी, बहुवासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥१२॥

अर्थ—सुमनभद्र गाथापति भी ऐसे ही समझें, यह सावत्थी नगरी का निवासी था, बहुत वर्ष चारित्र पालनकर विपुलगिरी पर सिद्ध हुए ॥१२॥

सूत्र—एवं सुपइट्ठे वि गाहावई, सावत्थी णयरी, सत्तावीसं वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥१३॥

अर्थ- ऐसे सुप्रतिष्ठ गाथापति भी समझें, सावत्थी नगरी में रहने वाला सत्ताईस वर्ष का चारित्र पालन कर विपुल गिरी पर सिद्ध हुए ॥१३॥

सूत्र—एवं मेहे वि गाहावई, रायगिहे णयरे, बहूइं वासाइं परियाओ, विपुले सिद्धे ॥१४॥

अर्थ—मेघ गाथापति भी ऐसे ही समझें, ये राजगृह नगर के निवासी थे। बहुत वर्ष चारित्र का पालन कर विपुल गिरी पर सिद्ध हुए ॥१४॥

॥ इति चतुर्थदशाध्ययन ॥

सूत्र–उक्खेवओ पण्णरसमस्स अज्झयणस्स ।

अर्थ—पन्द्रहवें अध्ययन का आरम्भ ! (हे भगवन् ! चौदहवें अध्ययन का भाव मैंने सुना । अब पन्द्रहवे अध्ययन में प्रभु ने क्या भाव कहा है ? कृपा कर फरमावे । आर्य सुधर्मा कहते हैं—

सूत्र–एवं खलु जंबू । तेणं कालेणं तेणं समएणं पोलासपुरे णयरे, सिरीवणे उज्जाणे तत्थ ण पोलासपुरे णयरे विजए णामं राया होत्था । तस्सणं विजयस्स रण्णो सिरी णामं देवी होत्था, वण्णओ । तस्सणं विजयस्स रण्णो पुत्ते सिरीए देवीए अत्तए अइमुत्ते णामं कुमारे होत्था, सुकुमाले ।

अर्थ—निश्चय हे जबू ! उस काल उस सएय में पोलासपुर नामक नगर था, वहा श्रीवन नामक उद्यान था । उस पोलासपुर नगर में विजय नाम का राजा था उस विजय राजा की श्रीदेवी महाराणी वर्णन योग्य थी । महाराज विजय का पुत्र और श्रीदेवी का आत्मज अइमुत्त–अत्तिमुक्त नाम कुमार सुकुमाल था ।

सूत्र–तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव सिरीवणे विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई जहा पण्णत्तीए जाव पोलासपुरे णयरे उच्चणीय जाव अडइ ॥१॥

अर्थ—उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर विचरते हुए श्रीवन उद्यान में पधारे । उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर के ज्येष्ठ शिष्य इन्द्रभूति (भगवती में जैसे भगवान से पूछकर भिक्षार्थ जाने का विचार कहा वैसे) यावत् पोलासपुर नगर में छोटे बडे कुलों में सामूहिक भिक्षा-हेतु भ्रमण करने लगे ॥१॥

सूत्र–इमं च णं अइमुत्त कुमारे ण्हाए जाव विभूसिए बहूहिं दारएहि य दारियाहिं य, डिंभएहि य डिंभियाहि य, कुमारएहि य कुमारियाहि य, सद्धिं संपरिवुडे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव इंद-ट्ठाणे तेणेव उवागए, तेहिं बहूहिं दारएहिं य दारियाहिं य, डिंभएहिं य डिंभियाहिं कुमारएहिं य कुमारियाहिं य सद्धिं संपरिवुडे–अभिरममाणे अभिरममाणे विहरइ ।

अर्थ––इधर अइमुक्त कुमार स्नान करके यावत्, शरीर की विभूषा की और बहुत से लडके लडकियों, बालक बालिकाए और कुमार कुमारियों के परिवार सहित अपने घर से निकले और निकल कर जहाँ इन्द्र स्थान है क्रिड़ा स्थान है वहा आये उन बच्चे बच्चियों एव कुमार कुमारिकाओं के साथ प्रेम पूर्वक खेलते हुए विचरण करने लगे ।

सूत्र––तएणं भगवं गोयमे पोलासपुरे णयरे उच्चणीय जाव अडमाणे इंदट्ठाणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयइ । तएणं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागए । भगवं गोयमं एवं वयासी––के णं भंते ! तुब्भे, किं वा अडह ?' ॥२॥

अर्थ––उस समय भगवान गौतम पोलासपुर नगर में छोटे बडे कुलों में यावत् भ्रमण करते हुए क्रीडा स्थान के पास से जा रहे थे, तब अइमुत्त कुमार भगवान गौतम को पास से जाते हुए। देखकर जहा भगवान गौतम थे वहा आये, और भगवान् गौतम को इस प्रकार बोले–'हे पूज्य । आप कौन हो और क्यो घूम रहे हो ॥२॥

सूत्र--तएणं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी--'अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणा णिग्गंथा इरियासमिया जाव बंभयारी उच्चणीय जाव अडामो"। तएणं अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी-'एह णं भंते ! तुब्भे, जएणं अहं तुब्भं भिक्खं दवावेमि' त्ति कट्ठु भगवं गोयमं अंगुलीए गिण्हइ, गिण्हित्ता. जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए ।

अर्थ—तत्र भगवान् गोतम ने अतिमुक्तकुमार को उत्तर देते हुए इस तरह कहा–'हे देवानुप्रिय ! हम श्रमण-निर्ग्रन्थ, ईर्यासमिति समिति यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हैं, छोटे बडे कुलो में भिक्षार्थ भ्रमण करते हैं । यह सुन कर अइमुक्तकुमार भगवान् गोतम से इस प्रकार बोले–'हे भगवान् ! आप आओ, मैं आपको भिक्षा दिलाता हू ऐसा कह कर उसने भगवान् गोतम की अंगुली पकडी और उनको जहा अपना घर था वहां ले आये ।

सूत्र–तएणं सा सिरीदेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता, हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता, जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया । भगवं गोयमं तिक्खुत्तो-आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता, वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता विउलेणं असणपाणखाइम साइमेणं पडिलाभेइ जाव पडिविसज्जेइ ॥३॥

अर्थ --तत्र श्री देवी महाराणी भगवान् गोतम को आते देखकर बहुत ही प्रसन्न हुई यावत् आसन से उठकर जहा भगवान् गोतम थे उनके सम्मुख आई, और भगवान् गौतम को तीनबार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके वदना की नमस्कार किया, फिर विपुल अशन-पान-खादिम और स्वादिम से प्रतिलाभ दिया यावत् विधि पूर्वक विसर्जित किये । ३ ।

सूत्र- तएणं से अइमुत्तेकुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी-'कहिणं भंते ! तुब्भे परिवसह ?' तएणं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए भगवं महावीरे आइगरे जाव संपाविउ कामे, इहेव पोलासपुरस्स णयरस्स बहियासिरिवणे उज्जाणे अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तत्थणं अम्हे परिवसामो।

अर्थ—उस समय भगवान् गौतम को अतिमुक्तकुमार इस प्रकार बोले-हे भगवान् ! आप कहा बसते हैं ? तब भगवान् गौतम अतिमुक्तकुमार को इस प्रकार बोले-हे देवानुप्रिय ! मेरे धर्माचार्य और धर्मोपदेशक भगवान् महावीर धर्म की आदि करनेवाले यावत् मोक्ष के कामी! इसी पोलासपुर नगर के बाहर श्रीवन उद्यान में मर्यादानुसार अवग्रह लेकर सयम एव तप से आत्मा को भावित कर विचरते हैं, हम वहीं रहते हैं।

सूत्र—तएणं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी-गच्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहि सद्धिं समणं भगवं महावीरं पाय वंदए। 'अहासुहं देवाणुप्पिया' ॥४॥

अर्थ—तब अतिमुक्तकुमार भगवान् गौतम को इस प्रकार बोला-'हे ! पूज्य मैं भी तुम्हारे साथ श्रमण भगवान् महावीर को वंदन करने चलूं ! (गौतम ने कहा)-'हे देवानुप्रिय ! जैसा सुख हो'। ४।

सूत्र—तएणं से अइमुत्तेकुमारे गोयमेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता 'समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ जाव पज्जुवासइ। तएणं भगवं गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागए। जाव पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे-माणे विहरइ।

अर्थ—तब फिर वह अतिमुक्तकुमार गौतम स्वामी के साथ श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास आया, और आकर श्रमण भगवान् महावीर को तीनबार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा की और वंदना करके पर्युपासना करने लगा, फिर भगवान् गौतम श्रमण भगवान् महावीर के समीप आये और आहार दिखाकर संयम तथा तपस्या से आत्मा को भावित करते विचरने लगे।

सूत्र—तएणं समणे भगवं महावीरे अइमुत्तस्स कुमारस्स धम्मकहा। तएणं से अइमुत्ते कुमारे समणस्स भगवओ-महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जं णवरं देवाणुप्पिया। अम्मा पियरो आपुच्छामि तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि। 'अहासुहं देवाणुप्पिया!' पडिबंधं करेह ॥५॥

अर्थ—तब श्रमण भगवान् महावीर ने अतिमुक्त कुमार को धर्म कथा सुनाई। कथा सुनने के पश्चात् वह अतिमुक्तकुमार श्रमण भगवान् महावीर के पास धर्म सुनकर और धारण करके बड़ा प्रसन्न हुआ तथा बोला—हे देवानुप्रिय। मैं अपने माता पिता को पूछकर, फिर आपकी सेवा में दीक्षा ग्रहण करूंगा, (भगवान् बोले)—हे देवानुप्रिय! जैसा सुख हो धर्मकार्य में प्रमाद मतकरो।५।

सूत्र–तएणं से अइमुत्ते कुमारे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागए, जाव पव्वइत्तए । अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी–बालेऽसि ताव तुमं पुत्ता । असंबुद्धे सि तुमंपुत्ता ! किण्णं तुमं जाणासि धम्मं ?, तएणं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी-एवं खलु अहं अम्मयाओ ! जं चेव जाणासि, तं चेव न-जाणामि-जं चेव न जाणामि तं चेव जाणासि ।

अर्थ—इसके पश्चात् अतिमुक्तकुमार अपने माता-पिता के पास आकर बोला–अम्ब ! आपकी आज्ञा पाकर मैं दीक्षा लेना चाहता हूँ । माता-पिता अतिमुक्तकुमार को इस प्रकार बोले–हे पुत्र ! अभी तुम बालक हो, हे पुत्र ! तुम असबुद्ध हो, तुम धर्म को क्या जानते हो ? तब अति-मुक्त-कुमार ने माता-पिता से इस प्रकार कहा–हे माता पिता ! मैं जिसको जानता हूँ, उसी को नही जानता हूँ, जिसको नहीं जानता हूँ उसी को जानता हूँ ।

सूत्र–तएणं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी-कहं णं तुमं पुत्ता !-जं चेव जाणासि तं चेव न-जाणासि, जं चेव न जाणासि तं चेव जाणासि ? ॥६॥

अर्थ—तब अतिमुक्तकुमार को माता पिता बोले–पुत्र ! तुम जिस को जानते हो उसी को नहीं जानते और जिसको नहीं जानते उसी को जानते हो, यह कैसे ? । ६ ।

सूत्र--तएणं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—जाणामि अहं अम्मयाओ ! जहा जाएणं अवस्सं मरियव्वं, न जाणामि अहं अम्मयाओ ! काहे वा कहिं वा कहं वा केवाच्चरेण वा ?, न जाणामि अहं अम्मयाओ ! केहिं कम्मायणेहिं जीवा णेरइयतिरिक्खजोणिय मणुस्सदेवेसु उववज्जंति, जाणामि णं अम्मयाओ ! जहा सएहिं कम्माय-यणेहिं जीवा णेरइय जाव उववज्जंति,

अर्थ—तब अतिमुक्तकुमार मातापिता से इस प्रकार बोले—हे माता पिता ! मैं जानता हू जो जन्मा है उसको अवश्य मरना होगा, पर यह नहीं जानता माता पिता ! कि कब कहा किस प्रकार और कितने दिन बाद मरना होगा । फिर हे माता पिता ! मैं नहीं जानता कि जीव किन कर्मों के कारण नरक, तिर्यंच मनुष्य और देवयोनि में उत्पन्न होते हैं, पर माता पिता ! इतना जानता हू कि जीव अपने ही कर्मों के कारण नरक यावत् देवयोनि में उत्पन्न होते हैं ।

सूत्र-एवं खलु अहं अम्मयाओ ! जं चेव जाणामि, तं चेव न जाणामि, जं चेव न जाणामि तं चेव जाणामि । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए जाव पव्वइत्तए ।

अर्थ—इस प्रकार निश्चय हे माता पिता ! मैं जिसको जानता हू उसी को नहीं जानता और जिसको नहीं जानता उसी को जानता हू ! अत हे माता पिता ! मैं आपकी आज्ञा होने पर यावत् प्रव्रज्या लेना चाहता हू ।

सूत्र—तएणं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो जाहे णो संचाएंति बहूहिं आघवणाहिं जाव तं इच्छामो ते जाया ! एगदिवसमवि रायसिरिं पासेत्तए ।

अर्थ—तब अतिमुक्तकुमार को माता पिता जब बहुत सी युक्तिप्रयुक्तियों से समझाने में समर्थ नहीं हुए, तो बोले—'हे पुत्र ! हम एक दिन के लिए भी तुम्हारी राज्यलक्ष्मी देखना चाहते हैं ।

सूत्र—तएणं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापिउवयणमणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ । अभिसेओ जहा महाबलस्स, णिक्खमणं जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूइं वासाइं सामण्ण परियाओ, गुणरयणं जाव विपुले सिद्धे ॥७॥

अर्थ—तब अतिमुक्तकुमार मात पिता के वचन का अनुवर्तन करके मौन रहा तब महाबल के समान उसका राज्याभिषेक हुआ, फिर भगवान् के पास दीक्षा लेकर सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया । बहुत वर्षों तक चारित्र पाला, गुणरत्नतप का आराधन किया यावत् विपुलाचल पर सिद्ध हुए । ७ ।

॥ इति पञ्चदशाध्ययनम् ॥

सूत्र—उक्खेवओ सोलसमस्स अज्झयणस्स ।

अर्थ—सोलहवा अध्ययन का प्रारम्भ । हे भगवन् ! पन्द्रहवें अध्ययन का भाव सुना अब सोलहवें अध्ययन में प्रभु ने क्या अर्थ कहा है ?, कृपा कर फरमाइये ।

सूत्र—एवं खलु जंबू । तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसीए णयरीए, काममहावणे चेइए तत्थणं वाणारसीए अलक्खे-णामं राया होत्था । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ । परिसा णिग्गया । तएणं अलक्खे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ जहा कूणिए जाव पज्जुवासइ, धम्मकहा ।

अर्थ—इस प्रकार हे जबू ! उस काल उस समय वाणारसी नगरी में काम महावन नामक उद्यान था । उस वानारसी नगरी में अलक्ष नाम का राजा था । उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर यावत् उद्यान में पधारे । परिषद् वन्दन करने को निकली । तब अलक्ष राजा भगवान के पधारने की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ, कोणिक राजा के समान यावत् सेवा करने लगा । प्रभु ने धर्म कथा कही ।

सूत्र-तएणं से अलक्खे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए जहा उदायणे तहा णिक्खंते, णवरं जेट्ठं पुत्तं रज्जे अहिसिंचइ, एक्कारस अंगाइं, बहुवासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे ।

अर्थ—तब अलक्ष राजा ने श्रमण भगवान महावीर के पास उदायन की तरह दीक्षा ग्रहण की। विशेष-ज्येष्ठ पुत्र को राज्य पर आरूढ किया, ग्यारह अंग का अध्ययन किया। बहुत वर्ष तक चारित्र पालन किया यावत विपुलगिरी पर सिद्ध हुए।

सूत्र-एवं खलु जंबू! समणेणं जाव छट्ठमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥१॥

अर्थ—इस प्रकार हे जंबू! श्रमण भगवान् महावीर ने छट्ठे वर्ग का यह अर्थ फरमाया है।।१॥

॥ इति षष्ठ वर्ग ॥

सप्तम वर्ग

सूत्र—जइणं भंते ! सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ, जाव तेरस अज्झयणा पण्णत्ता । तंजहा—

नंदा तह नंदवई, नंदोत्तर-नंद सेणिया चेव ।
मरुया सुमरुयामहमरुया, मरुद्देवा य अट्ठमा ॥१॥
भद्दा य सुभद्दा य, सुजाया सुमणाइया ।
भूयदिण्णा य बोद्धव्वा, सेणिय-भज्जाण णामाइं ॥२॥

अर्थ—हे भगवान् ! (सातवें वर्ग का प्रारम्भ) ! छट्ठे वर्ग का भाव सुना अब सातवे में प्रभु ने क्या अर्थ कहा है ? कृपा कर फरमाइये। सुधर्मा फरमाते हैं—सातवें वर्ग के तेरह अध्ययन कहे गये हैं। जो इस प्रकार हैं—

प्रथम नंदा १, नन्दवती २, नन्दोत्तरा ३, और नंदश्रेणिका ४, पांचवीं मरुता, छठी सुमरुता, सातवीं महामरुता, आठवीं मरुद्देवा, नवमी भद्रा, दशवीं सुभद्रा, ग्यारहवीं सुजाता, बारहवीं सुमनायका और तेरहवीं भूतदत्ता ये श्रेणिक राजा की भार्याओं के नाम समझने चाहिये।

सूत्र—'जइणं भंते ! तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?'

अर्थ—'हे भगवान् ! सातवें वर्ग के तेरह अध्ययन फरमाये हैं, तो प्रथम अध्ययन का हे पूज्य ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ फरमाया है ?'

सूत्र-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया वण्णओ । तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा णामं देवी होत्था, वण्णओ, सामी समोसढे । परिसा णिग्गया ।

अर्थ—इस प्रकार निश्चय हे जम्बू ! उस काल उस समय में राजगृह नगर था । उसके बाहर गुणशिल उद्यान था । वहां श्रेणिक राजा राज्य करता था, वह वर्णन योग्य था । उस श्रेणिक राजा की नंदा नाम की रानी थी, वर्णन योग्य । प्रभु महावीर राजगृह नगर के उद्यान में पधारे । परिषद् वंदन करने को गई ।

सूत्र-तएणं सा णंदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जाव हट्ठतुट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, जाणं जहा पउमावई । जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता वीसं वासाइं परियाओ जाव सिद्धा । एवं तेरस वि णंदागमेण णेयव्वाओ । णिक्खेवओ ॥२॥

अर्थ—उस समय वह नंदा देवी भगवान् के पधारने की कथा सुनकर बहुत प्रसन्न हुई और आज्ञाकारी सेवक को बुलाकर धार्मिक रथ लाने की आज्ञा दी । पद्मावती की तरह यावत् ग्यारह अंगों का अध्ययन किया । बीस वर्ष का चरित्र पालन किया यावत् अन्त में सिद्ध हुई । इसी प्रकार नन्दवती आदि १२ ही अध्ययन नंदा के समान ही कह देने चाहिये । समाप्ति-उपसंहार । इस प्रकार भगवान् ने सातवें वर्ग का भाव फरमाया है ।

॥ इति सप्तम वर्ग ॥

आठवां वर्ग

सूत्र—जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । अट्ठमस्सणं भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

अर्थ—हे भगवान् ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्ति प्रभु ने आठवें अंग अंतकृत दशा के सातवें वर्ग का यह भाव फरमाया, अब अंतकृत दशा के आठवें वर्ग का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ फरमाया है । कृपा कर बताइये ।

सूत्र—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा—

अर्थ—इस प्रकार हे जंबू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवें अंग अंतकृत दशा के आठवें वर्ग में दश अध्ययन कहे हैं, जो इस प्रकार हैं—

गाहा—काली, सुकाली, महाकाली, कण्हा, सुकण्हा महाकण्हा ।
वीरकण्हा य बोद्धव्वा, रामकण्हा तहेव य ॥
पिउसेणकण्हा णवमी, दसमी महासेण कण्हा य ।

गाथा—प्रथम काली, दूसरी सुकाली, तीसरी महाकाली, चोथी कृष्णा पाचवी सुकृष्णा, छट्ठी महाकृष्णा सातवीं वीर कृष्णा और आठवीं रामकृष्णा तथा नवमीं पितृसेनकृष्णा और दशमीं महासेन कृष्णा है

सूत्र–जइणं भंते ! अट्ठमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता-पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥१॥

अर्थ—हे भगवन ! आठवें वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं, तो प्रभो ! प्रथम अध्ययन का श्रमण यावत मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ फरमाया है ?—

सूत्र–एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए । तत्थणं चंपाए णयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया काली णामं देवी होत्था, वण्णओ । जहा णंदा सामाइय-माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठमेहिं जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥२॥

अर्थ—हे जम्बू ! उस काल उस समय में चंपा नाम की नगरी थी, वहां पूर्णभद्र उद्यान था । उस चंपा नगरी में श्रेणिक राजा की भार्या और महाराज कोणिक की छोटी माता काली नामक देवी वर्णन करने योग्य थी । नंदा देवी के समान काली रानी ने भी सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया, बहुत से उपवास, बेले, तेले आदि तपस्या से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।

सूत्र–तएणं सा काली अज्जा अण्णया कयाइं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता एवं वयासी–इच्छामिणं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं तवं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।

अर्थ—तब काली आर्या अन्यदा किसी दिन आर्यचंदना आर्या के समीप आई और आकर इस प्रकार बोली–'हे आर्ये ! आपकी आज्ञा प्राप्त हो तो मैं रत्नावली तप को अंगीकार करके विचरना चाहती हूं ।'

सूत्र —'अहासुहं देवाणुप्पिया' ! मा पडिबंध करेह । तएणंसा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ तंजहा ॥३॥

अर्थ —'हे देवानुप्रिये ! जैसा सुख हो,' धर्म कार्य में विलम्ब मत करो । तब काली आर्या आर्यचन्दना की आज्ञा पाकर रत्नावली तप को अंगीकार करके विचरने लगी। जो इस प्रकार है ॥ ३ ॥

सूत्र—

चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठ छट्ठाइं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—उपवास किया और इच्छानुसार विगय से पारणा किया,
फिर बेला किया और सर्वकाम गुण—विगय सहित पारणा किया,
फिर अष्ठम किया और सर्व—काम गुण पारणा किया,
फिर आठ षष्ठ—बेले किये और सर्व—काम गुण पारणा किया,
फिर उपवास किया और सर्व—काम गुण पारणा किया,
बेले की तपस्या की और सर्व काम गुण पारणा किया,
तेला किया और सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र —

दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चोद्दसम करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—दशम-चोले की तपस्या की और सर्व कामगुण पारणा किया,
द्वादशम-पचोला किया और सर्व-काम गुण पारणा किया.
चतुर्दश छ का तप किया और सर्व-काम गुण पारणा किया.
षोड शम सात का तप किया और सर्व काम गुण परणा किया,
अष्टादश-आठ का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र—

वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बावीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउवीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छव्वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठावीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—नव। का तप किया और सर्व-काम गुण पारणा किया,
दश का तप किया और सर्व-काम गुण पारणा किया,
ग्यारह का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
बारह का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
तेरह का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र—

तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बत्तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चोत्तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चोत्तीसं छट्ठाइं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चोत्तीस इमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—चौदह का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
पदरह का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
सोलह किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
चोतीस बेले किये और सर्व काम गुण पारण किया
फिर सोलह किये और सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र—

बत्तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
तीसइमं करेइ, करित्ता, सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठावीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छव्वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउवीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—पदरह का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
चौदह का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
तेरह का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
बारह का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
ग्यारह का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र—

बावीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—दश का तप किया और सव काम गुण पारणा किया,
नवका तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
आठका तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
सात का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
छ का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र—

बारसमं करेइ, करित्ता, सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—पचोला किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
चोला किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
तेला किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
बेले का तप किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
उपवास किया और सर्व-काम गुण पारणा किया,

सूत्र—

अट्ठछट्ठाइं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—आठ वेले किये और सर्व-काम गुण पारणा किया,
अष्टम किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
षष्ठ—बेला किया और सर्व काम गुण पारणा किया,
उपवास किया और सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र—एवं खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी, एगेणं संवच्छरेणं तिहिं मासेहिं बावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ ॥४॥

अर्थ—इस प्रकार यह रत्नावली तपः कर्म की प्रथम परिपाटी, एक वर्ष तीन महीने और बावीस अहोरात से सूत्रानुसार यावत् आराधना की जाती है।

सूत्र—तयाणंतरं च णं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करित्ता विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—इसके पश्चात् दूसरी परिपाटी में उपवास किया और विगइ रहित पारणा किया बेला किया और विगय रहित पारणा किया ।

सूत्र—एवं जहा पढमाए णवरं सव्व पारणाए विगइवज्जं पारेइ जाव आराहिया भवइ तयाणंतरं च णं तच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करित्ता अलेवाडं पारेइ, सेसं तहेव। एवं च उत्था परिवाडी, णवरं सव्वपारणाए आयंबिलं पारेइ, सेसं तं चेव।

अर्थ—इस प्रकार पहली परिपाटी के समान, मात्र यह विशेष है कि पारणा विगय रहित होता है, इस प्रकार सूत्रानुसार आराधन किया जाता है इसके पश्चात् तीसरी परिपाटी में उपवास करती और लेपरहित पारणा करती है शेष पहले की तरह। ऐसे चौथी परिपाटी में विशेष सब पारणे आयंबिल से करती है। शेष उसी प्रकार,

सूत्र—पढमम्मि सव्वकामपारणयं, बीइयाए विगइवज्जं।
तइयम्मि अलेवाडं, आयंबिलओ चउत्थम्मि॥
तएणं सा काली अज्जा रयणावली तवोकम्मं पंचहि सवच्छरेहि दोहिय मासेहि अट्ठावीसाए य दिवसेहि अहासुत्तं जाव आराहित्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता,

गाथा—प्रथम परिपाटी में सर्वगुणकाम, दूसरी में विगय रहित पारणा किया। तीसरी में लेपरहित और चौथी परिपाटी में आयंबिल से पारणा किया। इस प्रकार वह काली आर्या रत्नावली तप को पाच वर्ष, दो महिने और अठावीस दिनों में सूत्रानुसार यावत् आराधन करके जहा आर्यचंदना आर्या वहा आई और आर्यचन्दना को वंदना नमस्कार करके,

सूत्र–बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥५॥

अर्थ—बहुत से उपवास, बेले, बेले, चार, पाच आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी।

सूत्र—तएणं सा काली अज्जा तेणं ओरालेणं जाव धमणिसंतया जाया यावि होत्था। से जहा नामए इंगालसगडी वा जाव सुहुयहुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अईव अईव उवसोभेमाणी चिट्ठइ ॥६॥

अर्थ—तपस्या के बाद वह काली आर्या उस प्रधान तपस्या से यावत् सूख गई और खुली नसें दिखने लगी। जैसे कोयले से भरी गाड़ी में चलते आवाज निकलती हैं वैसे हड्डिया कड कड बोलने लगी, यावत् होम की हुई अग्नि के समान, भस्म से ढकी हुई आग जैसे भीतर से प्रज्जवलित रहती है वैसे तपस्या के तेज से अत्यन्त शोभायमान थी।

सूत्र—तएणं तीसे कालीए अज्जाए अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाले अयमज्झत्थिए,

अर्थ—फिर उस काली आर्या को अन्यदा किसी दिन पूर्वरात्रापर रात्रि–पिछली रात के समय मन में यह विचार हुआ,

सूत्र—जहा खंदयस्स चिंता जाव अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे, सद्धा-धिई-संवेगे वा ताव मे सेयं कल्लं जाव जलंते अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छित्ता अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुण्णायाए समाणीए संलेहणा झूसणा-झूसियाए भत्तपाणपडियाइक्खियाए कालं अणवकंखमाणीए विहरित्तएत्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

अर्थ—खंधक के समान चिन्ता यावत् जब तक शरीर में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य और पुरुषकार पराक्रम है, मन में श्रद्धा, धैर्य एव वैराग्य है तब तक मुझे योग्य है कि—कल सूर्योदय होने के पश्चात आर्य-चन्दना आर्या को पूछकर उनकी आज्ञाप्राप्त होने पर संलेखना झूषणा को सेवन करती हुई भक्तपान का त्याग करके मृत्यु को नहीं चाहती हुई विचरण करूं । ऐसा सोचकर वह कल सूर्योदय होते ही जहां आर्यचन्दना थी वहां आई और आर्यचन्दना को वदना नमस्कार कर इस प्रकार बोली—

सूत्र—इच्छामिणं अज्जाओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णायाए समाणीए संलेहणा जावविहरित्तए अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।

अर्थ—हे आर्ये ! आपकी आज्ञा हो तो मैं संलेखना से विचरना चाहती हूं ! (आर्यचन्दना बोली)-हे देवानु-प्रिये ! जैसा सुख हो, सत्कार्य साधन में विलम्ब मत करो ।

सूत्र—तओ काली अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणाझूसणा झूसिया जाव विहरइ।

अर्थ—तब आर्यचन्दना की आज्ञा पाकर काली आर्या संलेखना झूषण से यावत् विचरने लगी।

सूत्र—सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं अट्ठ संवच्छराइं सामण्ण परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणंझूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे जाव चरिमुस्सासणीसासेहिं सिद्धा ॥७॥

अर्थ—काली आर्या ने आर्यचन्दनाजी आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया और पूरे आठ वर्ष तक चरित्र धर्म का पालन करके एक मास की सलेखणा से आत्मा को झूषित कर साठ भक्त का अनशन पूर्ण कर जिस हेतु से सयम ग्रहण किया अपरिग्रह भाव से यावत् उसको अन्तिम श्वासोच्छ्वास से पूर्णकर सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गई।

॥ इति प्रथमाध्ययनम् ॥

सूत्र–उक्खेवओ बीयस्स अज्झयणस्स। एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा णामं णयरी पुण्ण भद्दे चेइए, कोणिए राया। तत्थणं सेणियस्स रण्णो भज्जा कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया सुकाली णामं देवी होत्था। जहा काली तहा सुकाली वि णिक्खंता, जाव बहूहिं चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

अर्थ—दूसरे अध्ययन का प्रारम्भ। "हे पूज्य! आठवें वर्ग के दूसरे अध्ययन में क्या भाव कहा है?, कृपाकर फरमाइये। इस प्रकार हे जंबू! उसकाल उस समय में चंपानामा नगरी थी वहा पूर्ण भद्र उद्यान और कोणिक नाम का राजा था। उस नगरी में श्रेणिक राजा की भार्या और कोणिक राजा की छोटी माता सुकाली नाम देवी रानी थी। काली की तरह सुकाली भी प्रव्रजित हुई और बहुत से उपवास आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी।

सूत्र–तएणं सा सुकाली अज्जा अण्णया कयाइं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा जाव इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी कणगावलीतवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।

अर्थ—फिर वह सुकाली आर्या अन्यदा किसी दिन आर्यचन्दना के पास आकर इस प्रकार बोली—"हे आर्ये! आपकी आज्ञा होने पर मैं कनकावली तप का अंगीकार करके विचरना चाहती हूं।

सूत्र–एवं जहा रयणावली तहा कणगावली वि, णवरं तिसु ठाणेसु अट्ठमाइं करेइ । जहा रयणावलीए छट्ठाइं । एक्काए परिवाडीए संवच्छरो, पंच मासा बारस य अहोरत्ता चउण्हं पंच वरिसा णव मासा अट्ठारस दिवसा, सेसं तहेव णव वासा परियाओ । जाव सिद्धा ॥२॥

अर्थ—सती चन्दना की आज्ञा पाकर रत्नावली के समान सुकाली ने कनकावली तप को आराधन किया । विशेष–तीनों स्थानों पर अष्टम–तेले किये । जहा रत्नावली में षष्ठ=बेले किये जाते हैं । एक परिपाटी ने एक वर्ष, पाच महिने और बारह अहोरात* लगते ह चारो परिपाटी का काल–पाच वर्ष, नवमहिने और अठारह दिन होते हैं । शेष वर्णन काली आर्या के समान, नव वर्ष तक चरित्र का पालन कर यावत् वह भी सिद्ध हो गई ।

॥ इति द्वितीयाध्यनम् ॥

* एक परिपाटी में ८८ दिन का पारना और १ वर्ष २ मास १४ दिन का तप होता है ।

सूत्र—एवं महाकाली वि । णवरं खुड्डागं-सीहणिक्कीलियं तवोकम्मं उपसंपज्जित्ताणं विहरइ तंजहा—

अर्थ—भगवन् ! आठवे वर्ग के तीसरे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?

आर्य सुधर्मा बोले—तीसरे अध्ययन मे महाकाली ने भी काली के समान, दीक्षा ली, विशेष—यह लघुसिंह निष्क्रीडित तप को अंगीकार करके विचरने लगी । जैसे कि—

सूत्र—

चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—उपवास किया और सर्वकाम गुण पारणा किया ।
वेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।
उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।
तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।
वेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।
चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।
तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।
पाच का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।

सूत्र–दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकायगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकागुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
छ किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
पाच किये और सर्वकामगुण पारणा किया।
सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
आठ का तप किया और सर्वकापगुण पारणा किया।
सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

सूत्र–वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया
नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र—चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थ करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया
पाच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
पाच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र–तहेव चत्तारि परिवाडीओ, एक्काए परिवाडीए छम्मासा सत्त य दिवसा। चउण्हं दो वरिसा, अट्ठावीसा य दिवसा जाव सिद्धा ॥३॥

अर्थ—इसी प्रकार चारों परिपाटी समझनी चाहिए। एक परिपाटी में छह महीने और सात दिन लगे। चारों परिपाटी का काल दो वर्ष और अठावीस दिन होते हैं। इस प्रकार महाकाली भी संलेखना करके सिद्ध होगई।

सूत्र–एवं कण्हा वि, णवरं महासीहणिक्कीलियं तवोकम्मं जहेव खुड्डागं, णवरं चोत्तीसइमं जाव णेयव्वं, तहेव ऊसारेयव्वं, एक्काए परिवाडीए एगं वरिसं, छम्मासा अट्ठारस य दिवसा, चउण्हं छ वरिसा, दोमासा बारस य अहोरत्ता, सेसाजहा कालीए जाव सिद्धा ॥४॥

अर्थ—इस प्रकार चौथा कृष्णा राणी का भी अध्ययन समझना चाहिये। महाकाली से विशेष इसने महासिंह निष्क्रीडित तप किया लघुसिंह निष्क्रीडित के समान इसमें इतना विशेष है कि एक से लेकर १६ तक तप किया जाता और उसी प्रकार उतारा जाता है। एक परिपाटी में एक वर्ष, छ महीने और अठारह दिन लगे। चारों परिपाटी में छ वर्ष दो महिने और बारह अहोरात लगते हैं। शेष काली की तरह अन्त में सलेखना कर यह भी सिद्ध होगयी।

सूत्र—एवं सुकण्हा वि, णवरं सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। पढमे सत्तए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तीं पडिगाहेइ, एक्केक्कं पाणगस्स। दोच्चे सत्तए दो दो भोयणस्स दो दो पाणगस्स। तच्चे सत्तए तिण्णि भोयणस्स तिण्णि पाणगस्स चउत्थे चउ, पंचमे पंच, छट्ठे छ, सत्तमे-सत्तए-सत्तदत्तीओ भोयणस्स पडिग्गाहेइ, सत्त पाणगस्स।

अर्थ—इस प्रकार पाचवें अध्ययन में सुकृष्णा देवी भी समझना। विशेष—यह सप्त सप्तमिका भिक्षु प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगी। जो इस प्रकार है—प्रथम सप्तक में एक एक दती भोजन की और एक ही पानी की ग्रहण की जाती है। दूसरे सप्तक में दो दो दती भोजन की और दो पानी की, तीसरे सप्तक में तीन दाती भोजन की और तीन पानी की, चौथे सप्तक में चार चार, पाचवे सप्तक म पाच पाच छठे में छह छह और सातवें सप्तक में सात दाती भोजन की ली जाती और सात ही पानी की ग्रहण की जाती है।

सूत्र—एवं खलु सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं एगूणपण्णाए राइंदिएहिं, एगेण य छण्णउएणं भिक्खासएणं अहासुत्तं जाव आराहिता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया। अज्जचंदणं अज्जं वंदइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

अर्थ—इस प्रकार सप्त सप्तामिका भिक्षु प्रतिमा ४९ उनपचास दिनों में एक सौ छिन्नू भिक्षा दतिओं से सूत्रानुसार आराधन करके सुकृष्णा सती आर्य चंदना के पास आई और आर्य चदना आर्या को वंदना नमस्कार करके इस प्रकार बोली—

सूत्र—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। 'अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं करेह' ॥१॥

अर्थ—"हे आर्ये ! आपकी आज्ञा प्राप्त होने पर मैं "अष्ट अष्टमिका' भिक्षु-प्रतिमा अंगीकार करके विचरना चाहती हूं।" आर्य चंदना बोली—हे देवानुप्रिये ! जैसा सुख हो, धर्म कार्य में प्रमाद मत करो ॥१॥

सूत्र—तएणं सा सुकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, पढमे अट्ठए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ एक्केक्कं पाणगस्स दत्ति जाव अट्ठमे अट्ठए अट्ठट्ठ भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ, अट्ठ पाणगस्स एवं खलु अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहिं य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव आराहित्ता, णवणवमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

अर्थ—फिर वह सुकृष्णा आर्या आर्य चंदना आर्या की आज्ञा प्राप्त होने पर 'अष्ट अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगी। प्रथम अष्टक में एक एक दत्ति भोजन की और एक एक पानी की ग्रहण करती यावत् आठवें अष्टक में आठ दत्ती भोजन की और प्रतिदिन आठ दत्ती पानी की ग्रहण की जाती है। इस प्रकार 'अष्ट अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा चौसठ दिनों में दो सौ अट्ठयासी भिक्षा दत्तियों से सूत्रानुसार यावत् आराधन करके आर्या सुकृष्णा 'नव नवमिका' भिक्षु प्रतिमा को अंगीकार कर विचरने लगी।

सूत्र—पढमे णवए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ एक्केक्कं पाणगस्स, जाव णवमे णवए णवणव दत्तिं भोयणस्स पडिगाहेइ णव पाणस्स। एवं खलु णवणवमियं भिक्खु-पडिमं एकासीइ राइंदिएहिं चउहिं पंचोत्तरेहिं भिक्खास-एहिं अहासुत्तं जाव आराहित्ता, दसदसमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

अर्थ—प्रथम नवक में एक एक दत्ति भोजन की और एक एक पानी की ग्रहण करती, यावत् नवमें नवक में प्रतिदिन दत्तिभोजन की और नव ही पानी की दत्ती ग्रहण करती। इस प्रकार इक्यासी दिनों में चार सौ पांच भिक्षा दत्तियों से 'नवनवमिका' भिक्षु प्रतिमा आराधन करके, फिर आर्यचन्दना की आज्ञा प्राप्त कर 'दशदशमिका' भिक्षु प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगी।

सूत्र—पढमे दसए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ एक्के-क्कं पाणगस्स जाव दसमे दसए दसदस भोयणस्स दसदस पाणगस्स एवं खलु एयं दसदसमियं भिक्खुपडिमं एक्केणं राइंदियसएणं अद्धछट्ठेहिं भिक्खासएहिं अहा-सुत्तं जाव आराहेइ, आराहित्ता बहूहिं चउत्थ जाव मास-द्धमासविविह तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

अर्थ—प्रथम दशक में एक-एक दत्ती भोजन की और एक एक पानी की यावत् दशवें दशक में दश दत्ती भोजन की और दश ही पानी की ग्रहण करती। इस प्रकार यह 'दश-दशमिका' भिक्षु प्रतिमा एक सौ दिनों में ५५० भिक्षा दत्तियों से सूत्रानुसार आराधन करके बहुत से यावत् मास, अर्द्धमास आदि विविध तप कर्म से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी।

सूत्र—तएणं सा सुकण्हा अज्जा तेणं ओरालेणं जाव सिद्धा ।।५।।

अर्थ—फिर वह सुकृष्णा आर्या उस उदारश्रेष्ठ तप से अत्यन्त शुष्क हो गई, फिर अंत में संलेखणा करके सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गयी ।५।।

|| इति पचम-अध्ययनम् ||

सूत्र—एवं महाकण्हा वि णवरं खुड्डागं सव्वओभद्दं
पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तंजहा—

अर्थ—इस प्रकार छट्ठी महासेन कृष्णा का अध्ययन भी समझना विशेष वह आर्यचन्दना की आज्ञा पाकर क्षुल्लक सर्वतोभद्र प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगी, वो इस प्रकार है—

सूत्र—

चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
फिर बेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया
चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र—

दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकागुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
वेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र—

छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—वेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
वेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र--

दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र—

दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
बेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र—एवं खलु एयं खुड्डागसव्वओभद्दस्स तवोकम्मस्स पढमं परिवाडि तिहिं मासेहिं दसहिं दिवसेहिं अहासुत्तं जाव आराहित्ता, दोच्चाए परिवाडिए चउत्थं करेइ, करित्ता, विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता, जहा रयणावलीए तहा एत्थ वि चत्तारी परिवाडीओ, पारणा तहेव, चउण्हं कालो संवच्छरो मासो दस य दिवसा सेसं तहेव जाव सिद्धा ॥६॥

अर्थ—इस प्रकार यह क्षुद्र सर्वतोभद्र तप कर्म की प्रथम परिपाटी तीन महिने और दश दिनों से सूत्रानुसार आराधन करके, दूसरी परिपाटी में उपवास किया और विगयरहित पारणा किया, जैसे रत्नावली में चार परिपाटिया कही गई वैसे यहा पर भी चार परिपाटिया होती है, पारणा उसी प्रकार कहना चाहिए चारों का काल एक वर्ष और एक मास और दश दिन । अंत में सलेखना करके महा सेन कृष्णा भी सिद्ध—बुद्ध—मुक्त हो गयी ॥६॥

॥ इति षष्ठ अध्ययनम् ॥

सूत्र–एवं वीरकण्हा वि, णवरं महालयं सव्वओभद्दं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तंजहा–

अर्थ—इस प्रकार सातवा अध्ययन वीरसेनकृष्णा का भी समझना चाहिए। विशेष–वह महत्सर्वतोभद्र तप को अंगीकार करके विचरने लगी। जैसे—

सूत्र–चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेई, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
वेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र–चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता पढमा लाया ॥१॥

अर्थ—छह करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सात करके सर्वकामगुण पारणा किया।
यह प्रथम लता हुई ॥१॥

सूत्र—दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
छह करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सात करके सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र—छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बीया लया ॥२॥
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—बेला करके सवकामगुण पारणा किया,
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
यह दूसरी लता हुई ।२।
सात करके और सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र—छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
तइया लया ॥३॥

अर्थ—बेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
छह करके सर्वकामगुण पारणा किया,
यह तीसरी लता हुई ॥३॥

सूत्र—अट्ठमं करेइ करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं, करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं, करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
छह करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सत्त करके सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र—चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थी लया ॥४॥
चउद्दसम करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
बेला करके सर्व काम गुण पारणा किया।
यह चौथी लता हुई ॥४॥
छह करके सर्व काम गुण पारणा किया,
सात करके सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र—चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकागुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
पंचमी लया ॥५॥

अर्थ—उपवास करके सर्व काम गुण पारणा किया,
बेला करके सर्व काम गुण पारणा किया,
तेला करके सर्व काम गुण पारणा किया,
चोला करके सर्व काम गुण पारणा किया,
पचोला करके सर्व काम गुण पारणा किया।
यह पाँचवी लता हुई ॥५॥

छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—बेला करके सर्व काम गुण पारणा किया,
तेला करके सर्व काम गुण पारणा किया,
चोला करके सर्व काम गुण पारणा किया,
पचोला करके सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र—चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठीलया ॥६॥

दुवालसमं करेइ, करत्ता सव्वकागुणीयं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—छह करके सर्व काम गुण पारणा किया,
सात करके सर्व काम गुण पारणा किया
उपवास करके सर्व काम गुण पारणा किया,
यह छट्ठी लता हुई ॥६॥
पचोला करके सर्व काम गुण पारणा किया,
छह करके सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र-सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सत्तमी लया ॥७॥

अर्थ—सात करके सर्व काम गुण पारणा किया,
उपवास करके सर्व काम गुण पारणा किया
बेला करके सर्व काम गुण पारणा किया,
तेला करके सर्व काम गुण पारणा किया,
चोला करके सर्व काम गुण पारणा किया,
यह सातवीं लता हुई ॥७॥

सूत्र-एक्काए कालो अट्ठमासा पंच य दिवसा । चउण्हं दो वासा अट्ठमासा, वीसं दिवसा । से सं तहवे जाव सिद्धा ॥७॥

अर्थ—एक परिपाटी का काल आठ महिने और पांच दिन चारों का काल दो वर्ष आठ महीनें और बीस दिन शेष सूत्रानुसार पूर्ण साधना करके अन्त में सलखना कर यह भी सिद्ध हुई ॥७॥

॥इति सप्तम॥

सूत्र—एवं रामकण्हा वि,

णवरं भद्दोतरपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तंजहा—
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—इस प्रकार आठवाँ रामकृष्णा देवी का अध्ययन भी समझना, विशेष में
रामकृष्णा भद्रोत्तर प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगीं। जैसे कि

सूत्र—चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ
पढमा लया ॥१॥

अर्थ—पांच करके सर्व काम गुण पारणा किया,
छह करके सर्व काम गुण पारणा किया,
सात करके सर्व काम गुण पारणा किया,
आठ करके सर्व काम गुण पारणा किया,
नव करके सर्व काम गुण पारणा किया।
यह प्रथम लता हुई ॥१॥

सूत्र—सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—सात करके सर्व काम गुण पारणा किया,
आठ करके सर्व काम गुण पारणा किया,
नव करके सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र—दुवालसमं करेइ, करित्ता, सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं, पारेइ।
वीया लया ॥२॥
वीपइमं करेइ, करित्ता, सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणिया पारेइ, पारित्ता

अर्थ—चोला करके सर्व काम गुण पारणा किया
छह करके सर्व काम गुण पारणा किया,
यह दूसरी लता हुई ॥२॥
नव करके सर्व काम गुण पारणा किया,
पाच करके सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र—चोसद्दमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता।
तइया लया ॥३॥
चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—छः करके सर्व काम गुण पारणा किया,
सात करके सर्व काम गुण पारणा किया,
आठ करके सर्व काम गुण पारणा किया,
यह तीसरी लता हुई ॥३॥
छ करके सर्व काम गुण पारणा किया,
सात करके सर्व काम गुण पारणा किया,

सूत्र—अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थी लया ॥४॥

अर्थ—आठ करके सर्व काम गुण पारणा किया,
नव करके सर्व काम गुण पारणा किया,
पाच करके सर्व काम गुण पारणा किया,
यह चौथी लता हुई ॥४॥

सूत्र—अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
पंचमी लया ॥५॥

अर्थ—आठ करके सर्व काम गुण पारणा किया,
नव करके सर्व काम गुण पारणा किया,
पाच करके सर्व काम गुण पारणा किया,
छ: करके सर्व काम गुण पारणा किया,
सात करके सर्व काम गुण पारणा किया,
यह पाचवी लता हुई ॥५॥

सूत्र—एक्काए कालो छम्मासा वीस य दिवसा, चउण्हं कालो दो वरिसा दो मासा वीस य दिवसा, सेसं तहेव जहा काली जाव सिद्धा ॥१॥

अर्थ—एक परिपाटी का काल छः महीने और बीस दिन, चारों का काल दो वर्ष दो महीने और बीस दिन होते हैं। शेष उसी प्रकार। काली के समान रामकृष्णा भी संलेखना करके यावत् सिद्ध–बुद्ध–मुक्त हो गईं।

इति अष्टम अध्ययनम्

सूत्र–एवं पिउसेणकण्हा वि णवरं मुत्तावली तवोकम्म उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तंजहा–

अर्थ—ऐसे पितृसेन कृष्णा का नवमा अध्ययन भी समझना। विशेष न आर्य चदना की आज्ञा पाकर पितृसेन कृष्णा आर्या 'मुक्तावली' तप को अंगीकार करके विचरने लगी। जो इस प्रकार है—

सूत्र–चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—उपवास करके और सर्वकामगुण पारणा किया,
फिर बेला करके और सर्वकामगुण पारणा किया,
फिर उपवास करके और सर्वकामगुण पारणा किया
और तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र—
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया।
चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया।
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया।
पाच करके सर्वकामगुण पारणा किया।

सूत्र —

चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता सुव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता
चउत्थं करेइ. करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—उपवास किरके सर्वकामगुण पारणा किया।
छह करके सर्वकामगुण पारणा किया।
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया।
सात करके भर्वकामगुण पारणा किया।
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया।

सूत्र—

अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—आठ करके सर्वकामगुण पारणा किया।
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया।
नव करके सर्वकामगुण पारणा किया।
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया।

सूत्र—

बावीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउवीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छव्वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—दश करके सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
ग्यारह करके सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
बारह करके सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र—

चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठाछवीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
तेरह करके सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
चौदह करके सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र—

बत्तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चोत्तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ. करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बत्तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

अर्थ—पंद्रह करके सर्वकामगुण पारणा किया
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया
सोलह करके सर्वकामगुण पारणा किया
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
पंद्रह करके सर्वकामगुण पारणा किया

सूत्र—एवं ओसारेइ जाव चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ । एक्काए कालो एक्कारस मासा पण्णरस य दिवसा । चउण्हं तिण्णि वरिसा दस य मासा । सेसं तहेव जाव सिद्धा ।।६।।

अर्थ—इस प्रकार वैसे ही एक एक उतारते जाना यावत् उपवास करके सर्वकाम गुण पारणा किया । एक परिपाटी का काल ग्यारह महिने और पंद्रह दिन । चारों परिपाटी में तीन वर्ष, दश महिने लगे । शेष उसी प्रकार अन्त में पितृसेन कृष्णा भी संलेखना करके सिद्ध हो गयी ।।६।।

।। इति नवम ।।

सूत्र—एवं महासेणकण्हा वि णवरं आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तंजहा—

अर्थ—इस प्रकार महासेन कृष्णा १० का दशवां अध्ययन भी समझना। विशेष इतना महासेन कृष्णा आयम्बिल व वर्धमान तप को अंगीकार करके विचरने लगी। जो इस प्रकार है—

सूत्र—आयंबिलं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता दो आयंबिलाइं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता तिण्णि आयंबिलाइं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता चत्तारि आयंबिलाइं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता पंच आयंबिलाइं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता छ आयंबिलाइं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता एकोत्तरियाए वड्ढीए आयंबिलाइं वड्ढंति चउत्थंतरियाइं जाव आयंबिलसयं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ ॥१॥

अर्थ—एक आयम्बिल करके उपवास किया।
दो आयम्बिल करके उपवास किया,
तीन आयम्बिल करके उपवास किया,
चार आयम्बिल करके उपवास किया,
पांच आयम्बिल करके उपवास किया,
छह आयम्बिल करके उपवास किया
ऐसे एक एक की वृद्धि से आयम्बिल बढाये बीच-बीच में उपवास किया।
इस प्रकार सो आयम्बिल करके उपवास किया। (इस तरह वर्द्धमान आंयम्बिल तप पूर्ण होता है।)

सूत्र—तएणं सा महासेणकण्हा अज्जा आयंबिलवड्ढमाणं तवो-कम्मं चोद्दसेहिं वासेहिं तिहि य मासेहिं वीसेहि य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेइ जाव आराहित्ता, जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता बहूहिं चउत्थेहिं जाव भावेमाणी विहरइ। तएणं सा महासेणकण्हा अज्जा तेणं ओरालेणं जाव उवसोभेमाणी उवसोभेमाणी चिट्ठइ ॥२॥

अर्थ—इस प्रकार महासेन कृष्णा आर्या आयंबिल वर्द्धमान तप चौदह वर्ष, तीन महिने और बीस अहोरात्र से सूत्रानुसार यावत् विधि पूर्वक स्पर्शन किया और आराधन करके जहा आर्यचंदना आर्या थी वहा आई, और आर्यचंदना को वंदना नमस्कार करके बहुत से उपवास आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी। तब वह महासेन कृष्णा आर्या उस प्रधान तप से यावत् शोभायमान रहने लगी ॥२॥

सूत्र—तएणं तीसे महासेणकण्हाए अज्जाए अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाले चिंता, जहा खंदयस्स जाव अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छइ जाव संलेहणा, कालं अणवकंखमाणी विहरइ।

अर्थ—फिर महासेन कृष्णा आर्या को अन्यदा किसी दिन पिछली रात्रि के समय धर्म चिन्ता हुई। खंदक के समान। उसने आर्यचंदना आर्या को पूछकर यावत् संलेखना की और काल को नहीं चाहती हुई विचरने लगी।

सूत्र—तएणं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडि-पुण्णाइं सत्तरस्स वासाइं परियायं पालइत्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ जाव तमट्ठं आराहेइ चरिम उस्सासणीसासेहिं सिद्धा बुद्धा ।

अर्थ—फिर वह महासेन कृष्णा आर्या आर्य चंदना आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया, पूरे सत्रह वर्ष तक चारित्र धर्म का पालन करके एक मास की संलेखना से आत्मा को भावित करके साठ भक्त अनशन को पूर्ण कर जिस कार्य के लिए संयम लिया, उसको पूर्ण आराधन करके अंतिम श्वास उच्छ्वास से सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हो गयी ।

गाथा—अट्ठ य वासा आदी, एकोत्तरीयाए जाव सत्तरस ।
एसो खलु परियाओ, सेणियभज्जा ण णायव्वो ॥

अर्थ—पहली काली देवी की आठ वर्ष दीक्षा, दूसरी के नव वर्ष, इस प्रकार एक-एक बढ़ते हुए यावत् दशमी रानी का १७ वर्ष दीक्षा काल । यह श्रेणिक राजा की भार्याओं की दीक्षा पर्याय जानना चाहिये ।

॥ इति दशम अध्ययन ॥

सूत्र—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ।

अर्थ—इस प्रकार निश्चय हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर जो धर्म की आदि करने वाले यावत् मुक्ति पधारे हैं उनने आठवें अंग अंतगडदसा का यह अर्थ फरमाया है । ऐसा मैं करता हू ।

सूत्र—अंतगडदसाणं अंगस्स एगो सुयक्खंधो अट्ठ वग्गा अट्ठसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति तत्थ पढमबितिवग्गे दस दस उद्देसगा, तइयवग्गे तेरस उद्देसगा, चउत्थपंचमवग्गे दस दस उद्देसगा, छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा, सत्तमवग्गे तेरस उद्देसगा, अट्ठमवग्गे दस उद्देसगा । सेसं जहा णायाधम्मकहाणं ।

अर्थ—अंतगडदसा अंग का एक श्रुत स्कंध और आठ वर्ग हैं । आठ ही दिनों में इसका उद्देश-वाचन होता है । इसमें प्रथम और दूसरे वर्ग के दश दश अध्ययन हैं । तीसरे वर्ग में तेरह उद्देशक, चौथे, व पाचवे वर्ग में दश दश उद्देश, छठे वर्ग में सोलह उद्देश, सातवें में तेरह उद्देशक और आठवें में दश उद्देश हैं । शेष वर्णन ज्ञाता धर्म कथा के समान जानना ।

॥ अंतगडदसंगसुत्तं समत्तं ॥

श्री अंतकृत दशांग सूत्रम्

शब्दकोष

	शब्द	अ	अर्थ
२	अज्ज जम्बू		आर्य-जंबू स्वामी (सुधर्मा स्वामी के पट्टधर)
२,५	अट्ठमस्स		आठवे अ ग का
२,१६	अयमट्ठे		यह अर्थ
२	अट्ठे		अर्थ, भाव
७	अलकापुरी		कुबरे की नगरी
७	अभिरूवा		सुन्दर
८	अद्धुट्ठाण कुमार कोडीणं		साढे तीन करोड कुमार
८	अणेगाण साहस्सीण		अनेक हजार
८	अण्णेसिं		अन्य
८	अद्धभरहस्स		आधे भारत क्षेत्र का
१०,११, १२, १३,२१,४५,	अण्णया कयाइं		अन्यदा किसी दूसरे दिन
१०	अट्ठण्ह		आठ (कन्याओ) का
११	अम्मा पियरो		माता-पिता
१२	अहिज्जई अहिज्जित्ता		अध्ययन करता है, अध्ययन करके
१२,२७	अप्पाण भावे माणे		आत्मा को भवित करते हुए
१३,२७,५४	अब्भणुण्णाए समाणे		आज्ञा प्राप्त होने पर
१५	अज्झयणस्स		अध्ययन का
२२	अट्ठवास जाय		आठ वर्ष का होने पर
२३	अहापडिसवं उग्गहं		यथोचित अवग्रह (आज्ञा)
२७	अयसिकुसुमप्पगासा		अलसी के कुसुम के समान काति वाले

शब्द	अ	अर्थ
	अण्णाओ अम्मयाओ	दूसरी माता से
	अयमट्ठा समट्ठा	यह बात सत्य है
३८,५९	अणुकपणट्ठाए	अनुकम्पा के लिए
३९,१०९	अणि मिसाए दिट्ठुए	अपलक दृष्टि से
३९	अणुप्पविस्सइ	प्रविष्ठ होती (हुई) है
४१	अभिसरभाणाइं	ससरते हुए
	अधण्णा	अधन्य
४१	अपुण्णा	पुण्यहीन
४२	अण्णया	अन्यदा
४२	अणुभूए	अनुभव-किया
४३,५०,७७	अहण्णं	निश्चय में
४४	अभओ	अभय कुमार
	अट्ठम भत्त	तेला की तपस्या
५२	असुइ	अशुचि अपवित्र
५२	असासया	अशाश्वत, अनित्य
५२	अणुलोभाहिं	अनुकूल (वचनो से)
५४	अहसुहं	जिस प्रकार सुख हो
	अदूरसामतेणं	पास से
५५,६१	अपत्थिय पत्थिए	अप्रार्थनीय (मृत्यु) को चाहने वाला
५५	अदिट्ठदोस	बिना दोष देखे
५६,८५	अवक्कमइ-अववकमित्ता	पीछे हटता है, पीछे हट कर
	अप्पदुस्समाणे	द्वेष नही करते हुए
	अहियासेइ	सहन करता है
५९	अणेगेहिं पुरिससएहिं	अनेको पूरूषो के द्वारा

	शब्द	अर्थ
	अ	
	अपासमाणे	नही देखते हुए
	अप्पणो-अट्ठे	अपना अर्थ (लक्ष्य)
	अणेग भवसयसहस्स संचिय	अनेक लाखो भवो के संचित कर्म
	अहोरत्ता	दिन-रात्रि
	अट्ठमं	तेला
	अट्ठारसमं	(अष्टादश भक्त) आठ उपवास के तप को
	अदिट्ठदोस पइय	अदृष्ट दोष वाली (दोष-रहित)
१३७	अलेवाड	लेप-रहित
६६	अब्भुक्खावेइ	जलछटवाता है
७७	अकयपुण्णे	अकृत पुण्य, पुण्यहीन
७९	अम्मापिइणियगविप्पहूणे	माता, पिता और स्वजन से विहीन
८१	अप्फोडइ	ताल ठोकता है आस्फोटन करता है
८१	अहापवित्त	यथा प्रवृत्त (आवश्यकतानुसार)
८५	अट्ठासएण	एक सौ आठ
८५	अभिसिंचइ	अभिषेक करता है
८५	अग्गमहिसी	पटराणी
८८-१३४	अज्जा	आर्या साध्वी
१३७	अहासुत्त	सूत्र के अनुसार
१३९	अईव	अतीव, अत्यन्त
१४०	अत्थि	है

शब्द	अ	अर्थ
	अज्ज चंदणाय	आर्य चन्दना से
१४०	अणवकखमाणीए	(काल को) नही चाहती हुई
१०७–६३	अन्तिए	पास मे
६३	अ गाइं	अ ग शास्त्रो का
	अदूरसामंते	न अति दूर, न अति-निकट
६५	अज्जय-पज्जय-पिइज्जयागए	दादा परदादा और पितृ परम्परा से चालू
६५	अणेगकुल-पुरिस-परंपरागए	अनेक कुल पुरुपो की परम्परा से प्राप्त
६५	अयोमयं	लोहमय
६६	अग्गाइं	प्रधान
६८	अभिरमयाणा	क्रीडा करते हुए
६८	अण्णमण्ण	परस्पर
६८	अम्हं	हमको
६८	अव ओडयबधणयं	उल्टी मुश्कियो का बन्धन
१००	अय मज्झत्थिए	यह विचार (पैदा हुआ)
१०१	अणुप्पविसइ	प्रवेश किया
१०३	अभिगय जीवा जीवे	जीव अजीव का ज्ञाता
१०६	अकामया	अनिच्छा से
१०६	अब्भणुण्णाए	आज्ञा पाकर
१०७	अभीय	निर्भय, डर रहित
१०७	अतत्थे	अत्रस्त त्रास-रहित
१०७	अणुव्विग्गे	उद्वेग-रहित
१०७	अक्खुभिए	क्षोभ-रहित
१०७	अचलिए	स्थिर
१०७	असभते	सभ्रम-रहित

	शब्द	अर्थ
	अ	
१०७	अहण	यदि मैं
१११	अहमवि	मैं भी
११२	अब्भुट्ठेमि	तत्पर होता हू
११२	अभिग्गह	अभिग्रह
११२	अणिक्खित्तेणं	निरन्तर बीच मे विना छोडे
११२	अवक्कमइ	पीछे हटता है
११२	अडइ	भ्रमण करता है
११३	अप्पेगइया	कई एक
११३	अक्कोसति	आक्रोस-गाली देती है
११३	अण्णयरे	अन्यतर, कोई एक
११४	अप्पउस्समाणे	प्रद्वेष नही करता हुआ
११४	अदीणे	दीनता-रहित
११४	अणाइले	चित्त की मलिनता-रहित
११४	अविसाइ	विषाद-खेद रहित
११४	अविमणे	उदासी रहित
११४	अकलुसे	पाप रहित
११४	अपरितत जोगी	योगो मे थकान रहित
११४	अमुच्छिए	मूर्च्छा भाव रहित
११४	अद्धमासियाए	आधे मास की
१२६	अणसणाए	अनशन से
१२६	अम्मापिउवयणमणुवत्तमाणे	माता पिता के वचन का अनुगमन करता हुआ
१२६	अभिसेओ	अभिषेक किया

शब्द		आ अर्थ
	आइगरे	धर्म की आदि करने वाले
६६	आलोए	दर्शन-करके
१००	आवत्ति	आपत्ति को
१०६–११६	आघवणाहि	युक्तियो से
१२२	आसणाओ	आसन से
१२४	आपुच्छामि	पूछता हूँ
	आसत्थे समाणे	आश्वस्त होकर
८-७१-७५	आहेवच्च	आधिपत्य, स्वामित्व
३१–७५	आयामाए	लम्बी
३८	आराहिए	आराधन किया गया, प्रसन्न
३६	आगयपण्हुआ	(स्नेह के कारण) स्तन से दुग्ध धारा निकल पड़ी
४५	आसासेइ आसासित्ता	आश्वासन दिया आश्वासन देकर
५२	आघवित्तिए	समझाने मे, को
५५	आसुरत्ते	शीघ्र क्रोधित हुआ
६५	अभिसेय	अभिषेक योग्य (हाथी)
८०	आगमिस्साए उस्सपिणीय	आगामी उत्सपिणीकाल मे
८१–८४	आणत्तिय	आज्ञा को
८६	आलित्तेण	आदीप्त-जलते हुए (संसार मे)
१३७	आराहिया	आराधित परिपालित
१३७	आराहित्ता	आराधन करके

शब्द	इ	अर्थ
११	इरियासमिए	ईर्या समिति युक्त
१३	इच्छामि	चाहता हू
५६	इट्टग	ईंट को
२२	इब्भवरकन्नगाण	इभ्य सेठो की कन्याओ का
	इम	यह, इसको
३१-३२-४८	इमीसे	इस (नगरी) के, मे
४१–५५	इमचरण	यह प्रत्यक्ष
४३–४५	इट्ठाहिं कताहिं वग्गूहिं	इष्ट और कात वचनो से
५०	इयाणि	इस समय, अभी
५६	इट्टगरासीओ	ईंटो की राशि से
७६	इसुणा	वाण के द्वारा
७६	इओ	यहा से
८१	इड्ढिसक्कार समुदएण	ऋद्धि-सत्कार-और समारोह से
६३	इमीसे कहाए	इस प्रकार की कथा से
६३	इमोवि	यह भी
६८	इह	यहा
१०१	इत्थिमत्तमे छ पुरिसे	छह पुरुप और सातवी स्त्री को
१०५	इहगए	यहा, रहे हुए
१०५	इह समोसढ	यहा समावसरण किये हुए
११२	इम	यह
११३	इमेणं	इसने
१२१	इदट्ठाणे	क्रीडा स्थान

शब्द	ई	अर्थ
८-८१	ईसर	ऐश्वर्यशाली, या ईसर पद
५४	ईसि	थोड़ा सा

उ

२	उवासगदसाणं	उपासकदशांग का
१३-३६-५४	उवागच्छइ	समीप गई (जाती है)
१३-५४	उवागच्छित्ता	समीप जाकर
१३-५४ ६१-१३४	उवसपज्जित्ताण	ग्रहण करके
२२	उम्मुक्क-बाल भाव	बाल भाव से उन्मुक्त-रहित
२२	उप्पि पासायवरगए	ऊपरी महल मे स्थित
२५-६२	उक्खेवो	प्रारभ
३०	उच्चणीयमज्झिमाइं कुलाइ	ऊचनीच मध्यम कुल
३५	उवट्ठवेति	उपस्थित करते हैं
३६	उल्लपडसाडिया	गीले वस्त्र की साडी पहने
३०-८१	उवट्ठाणसाला	उपस्थान शाला-बैठक
४१-५०	उच्छगे	गोद मे
४४	उम्मुक्क बाल भावे	बाल्यावस्था बीतने पर
४७	उक्किट्ठा	उत्कृष्ट, श्रेष्ठ
५६	उद्धुवमाणीहिं	बिजाते हुए
५४	उच्चारपासवण भूमि	मलमूत्र परठने की भूमि
५७	उज्जला	उज्वल-मिलावट रहित
७६	उववज्जिस्सामि	उत्पन्न होऊगां
७६	उववज्जिहिसि	उत्पन्न होओगे
८७	उव्वहित्ता	निकल कर
८१	उग्घोसेमाणा	उद्‌गोषणा करते हुए
८४	उवट्ठवेह	तैयारी करो

शब्द	उ	अर्थ
९८	उवागया	आये, आयी
१०६	उल्लालेमाणे	घुमाता हुआ, उछालता हुआ
१०७	उवसग्गाओ	उपसर्ग से
११०	उट्ठेइ	उठता है
११२	उत्तरपुरच्छिमे	उत्तर पूर्व (इशाणकोण) में
११२	उग्गिण्हइ	ग्रहण करता है
१२२	उज्जाणे	उद्यान मे
१२३	उग्गह	अवग्रह, आज्ञा
१२६	उववज्जति	उत्पन्न होते है

ऊ

१४६	ऊसारेयव्वं	उतारने चाहिए

ए

१-८	एत्थ	यहा पर
१	एव	इस प्रकार
८	एगवीसं	इक्कीस
१२	एक्कारस अ गाइ	ग्यारह अ गों को
१५	एगगया	एक सरीखे
२२-३२	एयारूव	इस प्रकार के, ऐसे
३०	एगे	एक
३०	एज्जमाणे पासित्ता	आते हुए देखकर
३६	एस ण	यह (णं अलकार है)
४१	एत्तो	इनमें से
५१	एव वुत्ते समाणे	ऐसा कहने पर
४१	एगयरमवि	किसी एक को भी
५४	एगराइयं	एक रात्रि की

शब्द	ए	अर्थ
५६	एगमेगं	एक एक
१०१	एवमाइक्खइ	इस प्रकार कहते है
१२२	एह	आओ
१२६	एगदिवसमवि	एक दिन की भी
१३६	एसा	यह, ऐसी
१३६	एगेणसंवच्छरेण	एक वर्ष से
१४८	एक्केक्क	एक एक
१४८	एगूणपण्णाए	उनपचास
१४८	एगेणय छण्णउएण	एक सौ छियाणवे
१५६	एक्काए	एक (परिपाटी) में
१६५	एकुत्तरियाए	एक एक आगे बढते हुए

ओ

४१	ओहयमणसकप्पा	खिन्न मन, सकल्प-विकल्प करती हुई
४२	ओहय	खिन्न मन
८५	ओमुयइ ओमुइत्ता	उतारती है, उतारकर
११५	ओरालेणं	उदार, प्रधान
	ओसारेइ	उतारती है

अं

२,२७	अ तेवासी	शिष्य, पाम रहने वाला
२,५	अ गस्स	अंग सूत्र का
१०	अ धगवण्ही	अंधक वृष्णि (एक राजा)
११,३६,५०	अ तिए	पास
२६,३८	अ तियाओ	पास से
५६	अ तोगिह	घर के भीतर

[बारह]

	शब्द	अर्थ
१,६	कोणिए	कोणिक (राजा)
२	के	क्या (कौनसा)
५,१६	कइ	कितने
७	कविसीसग	कपिशीर्षक, कगूरे
८,११	कण्हे	कृष्ण वासुदेव
१०	कता	कान्त, सुन्दर
२२	कुलो हितो आणिल्लियाण	कुलो से लाई हुई (कन्याओ से)
२७	करेह	करो
३१	कण्हस्स वासुदेवस्स	कृष्ण वासुदेव की
३८,५१ १०२	कोडुम्बिय पुरिसे	कौटुम्बिक पुरुप (आज्ञाकारी पुरुप)
३६	कल्लाकल्लि	प्रतिदिन प्रात.काल
३८	करयल	करतल, हाथ मे
३६	कंचुयपडिक्खित्तिया	हर्षातिरेक से कचुकी की कसे टूट गई
७६	कोवग्गिदड्ढाए	कोप से जली हुई
४१	कोमलकमलोवमेहि हत्थेहि	कमलवत् कोमल हाथो से
४४	कणीयस	कनिष्ठ, छोटे
६६	कड्ढावित्ता	खिचवाकर, भूमि पर रगडा कर
४८	कणगतिदूसएण	सोने की गेद से
४८	कीलमाणी	खेलती हुई
४८	कहाए	कथा के
	कण्णतेउरसि	कन्या के अन्तःपुर मे
५५	कालवत्तिणी	युवावस्था को प्राप्त
५६	कहल्लेण	फूटे हुए घडे के टुकडे, खप्पर से

शब्द	क	अर्थ
५८,६५	कल्ल	प्रात काल (उषाकाल)
५६	किलत	थके हुए
६०	कहिए	कहा
६३	कहएएां	कैसे
६५	केरणविकुमारेणं	किसी कुमरण से
६६	कड्ढावेइ कड्ढावित्ता	खिचवाते है खिचवाकर
७५	किमूलए	किस कारण से
७६	कालकिच्चा	काल करके (मृत्यु प्राप्त करके)
७६	कहि	कहा पर
७६	कोसबवण काणणे	कोसम्बवन नामि के जगल मे
७६	कोदण्डविप्पमुक्केण	धनुष से छोडे गये
८०	कण्हाइ	हे कृष्ण !
८५	किमग	कोमल आमन्त्रण
१३२	कण्हा	कृष्णादेवी
६३	कुडुम्बे ठवित्ता	कुटुम्ब पर स्थापन करके
६५	कण्हे	कृष्ण वर्ण के, काले
६५	कुसुम-कुसुमिए	पुष्पो से पुष्पित
६६	कयाइं	किसी समय
६७	कल्ल	कल, प्रात
६७	कज्जमितिकट्टु	कार्य है ऐसा करके
६६	कवाडतरेसु	किवाडो के अन्तर मे
१०२	कट्ठे	काष्ट मात्र
	कप्पई	कल्पता है, योग्य है
१२६	काहे	कब
१३४	करेइ करित्ता	करता है, करके

शब्द		अर्थ
	क	
	काली	काली नामा (एक राणी)
८१	कोडुविए	कौटुम्बिक, अनेक कुटुम्ब का नायक (वंश विशेष)
	ख	
५	खलु	निश्चय करके
४८	खुज्जाहि	कुब्जा-दासियो के साथ
५३	खयरगारे	खैर के अङ्गारे
५६-८४	खिप्पामेव	शीघ्र ही
५७	खएणं	क्षय से
१४३	खुड्डाग	(क्षुद्र) लघु
११३	खिसति	खीसते हैं-जाति आदि की हीनता से तिरस्कार करना
	ग	
२	गामाणुगाम	एक ग्राम से दूसरे ग्राम
८	गणिया	गणिका, वेश्या
१३	गुणरयणतवो कम्मं	गुणरत्नतप (देखो आठवा वर्ग)
२०	गिरिकदरमल्लीणेव	पर्वत की गुफा में सुरक्षित
	चपगवर पायवे	चम्पक वृक्ष की तरह
३८	गाहावइणीए	गाथा पत्नी के
३८	गब्भेगिण्हह	गर्भ धारण करती हो
	गब्भेपरिवहह	गर्भ का परिवहन करती हो
४१	गिण्हिऊण	ग्रहण करके
	गयतालुयसमाण	गज तालु के समान सुकोमल
४६	गिण्हह	ग्रहण करो

ग

	शब्द	अर्थ
५५ ५६	गिण्हइ-गिण्हित्ता	ग्रहण किया, ग्रहण करके
५७	गीयगधन्व-णिणाए	गीत और गधर्व के निनाद (ध्वनि)
५६	गहाय	ग्रहण करके
	गुत्तबभयारी	गुप्त ब्रह्मचारी
६७	गोट्ठी	गोष्ठी, मित्रमडली
१०६	गिहाओ	घर से
	गुणसिलए चेइए	गुलशील नाम का चैत्य-उद्यान

घ

६७	घुट्ठो	घोषित हुआ
	घाएइ	मारडाला, मारता है

च

१	चम्पा	चम्पा नगरी
१,२,६३	चेइए	चैत्य. उद्यान
२	चरमाणे	विचरते हुए
६	चेव	और
७	चामीगर-पागारा	सोने के परकोटे वाली
११	चउव्विहा	चार प्रकार के
१२,१३४	चउत्थ	चतुर्थ भक्त (उपवास की संज्ञा)
२३	चोद्दस-पुव्वाइ	चौदह-पूर्व
५६	चियथाओ	चिता से
५७	चेलुक्खेवे	चेल-वस्त्र की वृष्टि
१४०	चरिमुस्सासणी--सासेहिं	अ तिम श्वासो च्छ्वास से
१५४	चउद्दसम	छह उपवास का तप

	शब्द	अर्थ
	च	
	चिट्ठइ	स्थित था, ठहरा हुआ था
७०	चउत्थस्स वग्गस्स	चतुर्थ वर्ग का
७६	चिच्चा	त्यागकर
७८	चइत्ता	त्यागकर
	चरिमुस्सासेहिं	अ तिम उच्छ्वासो से
१३३	चुल्लमाउया	लघुमाता, छोटी माता
	छ	
८	छप्पण्णाए बलवग्ग	छप्पन हजार बलवर्ग का परिवार
	छट्ठ छट्ठेण	वेले वेले की तपस्या से
२६-११३	छट्ठक्खमणपारणगसि	वेले की तपस्या के पारणे मे
१४०	छेदित्ता	छेदन करके
८१	छिन्दइ-छिन्दित्ता	छेदन किया, छेदन करके (तीन पग पीछे हटकर)
	छट्ठमस्स उक्खेवो	छट्ठे वर्ग का प्रारम्भ
	ज	
२	जाव	यावत् (पाठ संकोच के अर्थमे)
	जासिं	जिनकी
२,१३,३०,३६,४५	जेणेव	जिधर, जिस ओर
२,५,६ ६२	जइ, जइण	यदि
१०,११,४३,६३,	जहा	जैसे, जिस प्रकार
६	जोयणायामा	योजन लम्बी
४६	जम्मं, जम्मण	जन्म
४४	जोवणग-गमणुप्पत्ते	यौवनावस्था प्राप्त हुए
११	जाए	जन्म हुआ

शब्द	ज	अर्थ
१२	जणवय-विहारं	जन-पद-विहार, देशान्तर विहार,
९३	जेट्ठ-पुत्तं	ज्येष्ठपुत्र को,
२१०	जेट्ठे	ज्येष्ठ,-बड़े
	जक्खाययणे	यक्षायतन
	जाहे	जब
२२	जाणित्ता	जानकर
२३	जणसद्दं	लोक कोलाहल को
२७	जं दिवसं	जिस दिन
२७	जावज्जीवाए	जीवन पर्यन्त
३१,१२२	जण्णं	जिस कारण, जिसको, जिसलिए
३५	जाणप्पवरं	उत्तम यान, रथ
३६	जाणुपायवडिया	घुटने टिकाकर चरणो मे गिरी
	जासि	जिनकी
४६	जम्हाणं	जिसलिए
४९	जाइत्ता	याचना करके
५९	जुण्ण	जीर्ण, पुराना
५९	जराजज्जरियदेह	वृद्धावस्था के कारण जर्जरित शरीर वाले
६१	जीवियाओ ववरोविए	जीवन से रहित
११६	जस्सट्ठाए	जिस हेतु
१३९	जाया	हुई
१४६	जहेव	जैसे
८७	जक्खिणीए अज्जाए	यक्षिणी नामक साध्वीजी को
७९	जोहिट्ठिलपा मोक्खेणं	युधिष्ठिर प्रमुख
१०६	जाव संपत्ताणं	यावत् मोक्ष प्राप्त-सिद्धो को

	शब्द	अर्थ
	ज	
१०६	जाव संपाविउकामस्स	यावत् मोक्ष प्राप्त करने वाले को
११३	जुवाणा	तरुण
	झ	
४१	झियायइ	ध्यान करने लगी, सोच करना
	ठ	
६३	ठियए	खडा-खडा
	ठिइभेएणं	स्थिति के भेद से (आयु के पूर्ण होने से
	ठवइ	स्थापना करता है, रखता है
१०६	ठिच्चा	खडा होकर, स्थित होकर
	ड	
११४	डहरेहिं	बच्चो के साथ
११३	डहरा	बच्चे
१२१	डिंभएहि	छोटे बच्चो के साथ
	ण	
१,२,६	णामंणयरी	नाम की नगरी
१,८	णयरीए	नगरी के
२,११,२३	णिग्गया	निकली, वदन को गई
६	णव	नौ
	णिम्मिया	निर्मित
११,६२	णवर	विशेप-यह
६३	णिक्खंते	निष्क्रमण किया, दीक्षा को निकले

	शब्द	ण	अर्थ
	णाणा		नाना प्रकार के
११,२२,३६	णिसम्म		सुनकर
११	णिग्गंथं		निग्रन्थ को, साधु को
१२	णद-वणा ओउज्जाणा ओ		नंदन वन नामक उद्यान से
१३	णमंमई		नमस्कार करता है
१३	णमंसित्ता		नमस्कार करके
१४	णिरवसेसं		सब का सब
२०	णागे नाम गाहावई		नाग नामक गाथापति
२७	णिलुप्पल		नील कमल
२७	णल कुब्बर		नल कुब्बर के समान
३१,७८	णो		नही
२७	णीलुप्पलगवल गुलिय अयसि-कुसुमप्पगासा		नीले कमल एवं भैंस के सीग एवं गुली और अलसी के फूल के समान
३२	णागस्सगाहावइस्स		नाग-नामक गाथापति के
३६	णिमित्तिएण		नैमित्तिक ने
३६	णिन्दू		मृत बन्ध्या
१३१	णेयव्वाओ		ले जाना चाहिए
१४२	निक्खता		निष्क्रमण किया, दीक्षा ली
१४६	णेयव्वं		ले जाना चाहिए, कहना चाहिए
१६७	णाया-धम्मकहाण		ज्ञाता धर्म कथा के
१६५	णायव्वो		जानना चाहिए
३६	ण्हाया		स्नान करके
३६	णीहारेइ		नीहरण करती, शौच से निवृत्त होती है।

	शब्द	अर्थ
	ण	
३८,४६	णवण्ह मासाण	नव-महीने
३६	णिरिक्खइ	देखती है
४०,८१	णिसीयइ	बैठो, बैठे
४१	णियगकुच्छिसभूयाइ	अपनी कुक्षि से उत्पन्न
४१	णिवेसियाइ	बैठाये जाने पर
४१	पुणो पुण	पुन: पुनः, बारम्बार
४२	ण्हाए	स्नान किये हुए
४६	णाम धेज्जे	नाम
४७	णिगच्छमाणे	निकलते हुए
५०	णिवेसइ	बैठाया
५२,८१	णिक्खमण	निष्क्रमण, दीक्षा
५७	णिवाइए	गिराए
	णायमेय	(यह बात) जानी हुई जानली है
६४	ण णज्जइ	नही जानते
७७	णियाणकडा	नियाणा-निदान करने वाले
	णग्गोहवर पायवस्स अहे	वट वृक्ष के नीचे
८३	णिग्गथ पावयण	निर्ग्रन्थ प्रवचन को
८४	णिक्खमणाभिसेय	दीक्षा-महोत्सव, दीक्षाभिषेक
१३०	णामाइ	नाम
१३१	णिक्खेवओ	निक्षेप-समाप्ति का उपसहार,
६६	णिलुक्कति	छिपते हैं
६६	णिच्चला	निश्चल
६६	णिप्फदा	स्पदनराहित
१००	णत्थि	नही है
१०३	ण्हाए	स्नान की

शब्द	ण	अर्थ
१०९	णिरिक्खइ	देखता है
११०	णिवडिए	नीचे गिर पड़ा
११०	णिरूवसग्गम्मि	उवसर्ग रहित हुआ
११२	णिसम्म	सुनकर
१२६	णेरइयतिरिक्ख जोणिय मणुस्स देवेसु	नरक तिर्यंच और मनुष्य देवो से
	णयरस्स परिपेरंतेणं	नगर के चारो ओर (बाहरी सीमा मे)

त

१,२,६	तेणं कालेणं	उस काल मे
१	तेणं समएणं	उस समय मे
१८,६,२०,४७,१३३	तत्थ	वहां
३१	तच्चे	तीसरे
१,८	तीसे णयरीए	उस नगरी मे
२,१३,४५	तेणेव	उसी ओर
५	तंजहा	वह इस प्रकार
१०,११,१२,६३,१२७	तएणं	तदनन्तर,उसके बाद
१०,४५	तसितारि सगसि	उस वैसे-पुण्यवान् के योग्य।
११	तहा	उसी प्रकार
१२	तहारूवाणं	गुणसम्पन्न, तथारूप
१३,५४	तुब्भेहिं	तुम्हारी
१६	तच्चस्स वग्गस्स	तीसरे वर्ग के
१६	तेरस	तेरह
२०	तस्सणं-(णयरस्स)	उस (नगर) के
२३,६३	तहेव	उसी प्रकार

शब्द	त	अर्थ
२६	तिहिं सघाडएहिं	तीन संघाडो से
३०	तत्थणं	वहा, उस नगरी मे
३१	तयाणंतर	उसके बाद,तदनंतर
३१	ताइ चेवकुलाइ	उनहीं कुलो मे
३६,५७	तग्रोपच्छा	तत्पश्चात्
३८	तुब्भेदोवि	तुम दोनो ही
४१	ताओ अम्माओ	वे माताए
४२	तुब्भे	तुम
४३	तहावहत्तिस्सामि	वैसा व्यवहार करूंगा
५१	तुसिणीए सचिट्ठइ	मौन स्थित रही
५२	तमाणाए	उसकी आज्ञा से
५५	तओ	वहाँ से, बाद
५७	तयावरणिज्जाणं कम्माण	उन आवरणीय (गुण घातक) कर्मों के
६४,८५	तण्ण	उसको
७६	तिक्खेण	तीक्ष्ण (बाण) से
७६	तच्चाए बालुयप्पभाए	तीसरी बालुका प्रभा (पृथ्वी) मे
८१	तिवइ	त्रिपदी, तीन कदम
८१	तलवरे	तलवर (एक प्रकार के राज्य मान्य पुरुष) राजवल्लभ या राजसभा
१०२	तणस्स	घास के लिये
१११	तीसे	उस-सभा को
११२	तज्जेंति	तर्जना करते हैं

शब्द	त	अर्थ
११६	तालेन्ति	(लकडी आदि से) ताडना करते है
११३	तितिक्खइ	सहन करता है
१२६	ताव	तब तक
१३७	तच्चाए	तीसरी
१३६	तवतेयसिरीए	तपस्तेज की शोभा से
१४२	तिसु ठाणेसु	तीन स्थानों पर,
१४८	तिण्णि	तीन
१६२	तहेव	तथैव, उसी प्रकार
१६७	तइयवग्गे	तृतीय वर्ग मे
	तिकट्टु	ऐसा करके

थ

१०७	थूलए	स्थूल, बडा
	थेरे	स्थविर (स्थिर आत्मा वाले वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, दीक्षावृद्ध)
११	थेराण अ तिए	स्थविर साधुओं के पास
४१	थणदुद्धलुद्धयाइं	स्तन पान के लोभी (बालक)
४१	थणमूलकक्खदेसभागं	स्तनमूल से काख के भाग मे
५४	थण्डिलं	वाह्यभूमि को, स्थण्डिल भूमि

शब्द	द	अर्थ
१,८	दिसिभाए	दिशाभाग मे
२	दूइज्जमाणे	विहार करते हुए
६,३१	दुवालस	बारह
११	देवलोगभूया	देवलोक के समान
७	दरिसिणिज्जा	देखने योग्य
८	दसण्ह	दस
८	दसाराण	दशार्ह, उत्तम पुरुष
१०,२४	दाओ	दाय भाग (दात्तियां, देय द्रव्य का भाग)
११	देवाणुप्पिया	देवो का प्रिय
१५,२६,६५,८१	दुरुहइ	चढता है
१७	दोच्चस्स	दूसरे वर्ग का
२१	दढपइन्ने	दृढप्रतिज्ञकुमार
२२	दलयइ	देता है
३०	दोच्चे	दूसरा
३२,४५,५२	दोच्चं तच्चंपिस्	दूसरी तीसरी बार भी
३३	दिस	दिशा
३६	दारिया	कन्या
३८	दारए पयायहि	बालको को जन्म देती हो
३६	दरियवलयबाहा	हर्षातिरेक से जिसकी बाहु के वलय टूट गये
४१	दंतिसमुल्लावए	अपनी तुतली बोली मे जो बच्चे बोलते हैं।
४४	देवलोयचुए	देवलोक से चवकर (च्युत) आया हुआ
४६	दिवायरसमप्पभं	सूर्य के समान प्रभा वाले
४४	दारय	पुत्र को

द

	शब्द	अर्थ
५७	दुबरहियासा	दुःसह्य (दुख पूर्वक सहने योग्य)
	दसद्धवण्णे कुसुमे	पाच वर्ण के फूल
६२	दिण्णे	दिया है
७६	दाहिणवेयालिअभिमुहे	समुद्र के दक्षिणी तट के अभिमुख
८५	दुरूहावेइत्ता	चढाकर, आरुढ करके
८५	दलयामि	देता हूँ
८५	दसद्ध	दस के आधे
९६	दवदवस्स	जल्दी जल्दी
१०६	दिट्ठीए	दृष्टि से
१२१	दारएहिं	दारक-लडको के साथ
१२१	दारियाहिं	लड़कियो के साथ
१३७	दोच्चाए	दूसरी
	दाति	दात-देय द्रव्य का भाग
१५०	दोहिय अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं	दोसो अठासी दातियो से
१५४	दसमं	चोला, चार उपवास
१५४	दुवालसमं	पाचोला-पाच उपवास

ध

७	धणवईमइ णिम्मिया	कुबेर देव की बुद्धि से निर्मित
२१	धाई	धायमाता
३९	धाराहयकलंबपुप्फगं	वर्षा की धारा से आहत कदंब पुष्प
३९,८२	धम्मिय जाणप्पवरं	धार्मिक रथ
४७	धूया	पुत्री

शब्द	ध	अर्थ
६६	धरणितलसि	पृथ्वी तल पर
१३६	धमणिसतया	प्रगट नसो के जाल वाली
	धिइ	धैर्य
६८	निक्खेवो	निक्षेप (समाप्ति सूचक)
११०	धसत्ति धरणियलसि	धस ऐसी ध्वनि के साथ पृथ्वी तल पर
१२३	धम्मायरिए	धर्माचार्य
१२३	धम्मोवएसए	धर्मोपदेशक
१२४	धम्मकहा	धर्मकथा

प

२,८	पुरत्थिमे	पूर्व दिशा मे
	पुणो, पुणो	पुन. पुन., वारवार
१,२	पुण्णभद्द चेइए	पूर्णभद्र उद्यान
२	पर्चाहि सएहि	पाच सौ के साथ
२	पुव्वाणुपुव्वि	पूर्व परम्परा के अनुसार
२.२३	परिसा	परिपद्-सभा
२	पडिगया	लौट गई
२	पज्जुवासमाणे	सेवा करते हुए
२,७०,६२	पण्णत्ते	कहे हैं
८,१०	परिवसइ	वसते थे
८	पामोक्खाण	प्रमुख
८	पंचण्ह	पाच
८	पज्जुण्ण पामोक्खाण	प्रद्युम्न कुमार आदि

प

शब्द		अर्थ
१०	पासाय	प्रासाद, महल
१०,२२	पाणि गिण्हावेंति	पाणिग्रहण कराते है
११	पव्वयामि	प्रव्रजित होता हू
११	पावयणं	प्रवचन
११	पुरओ	सम्मुख, सामने
१२,२६	पडिणिक्खमित्ता	निकल कर
१२,४३,४५,५४	पडिणिक्खमइ	निकले
१४,१३०	परियाए	दीक्षा पर्याय–दीक्षा काल
२०	पुत्ते	पुत्र
२१	परिक्खित्ते	घिरा हुआ
२१	पायवे	वृक्ष
२१	परिवड्ढई	वृद्धि पाने लगा, बढ रहा था
२२	पीइदाण	प्रीतिदान
२५	पढमे	प्रथम (अध्ययन मे)
२५	पण्णासओ दाओ	पचास करोड का दहेज
२७,५३	पव्वइया	प्रव्रजित हुए
२७	पडिबंधं	प्रतिबन्ध–विलम्ब
२६	पढमाए पोरिसीए	प्रथम प्रहर मे
२६	पडिणिक्खमंति	निकले, रवाना हुए
३०	पीइमणा	प्रसन्न मनवाली
३०	परमसोमणस्सिया	अत्यन्त हर्षयुक्त
३०	पडिलाभेइ	प्रतिलाभित किया, बहराया
३०	पडिविसज्जेइ	विसर्जित किया
१३६	पुव्वरत्तावरत्तकाले	पूर्वापर रात्रि अर्थात् मध्य रात्रि के पश्चात् का समय
५७	पाउब्भूआ	उत्पन्न हुई–प्रकट हुई

	शब्द	प	अर्थ
५७	पसत्थज्झवसाणेणं		शुभ विचार से, प्रशस्त अध्यवसाय से
५८	पाउप्पभायाए		प्रभात निकलने पर
५६-६५	पहारेत्थ		प्रस्थान किया
५६	पुरिसं		पुरुष को
६२	पग्रोसमावज्जाहि		प्रद्वेष-रोप करना, प्रद्वेष करो
८१	पुरत्थाभिमुहे		पूर्वाभिमुख,
८१	पच्छाउरस्स		पीछे रहे आतुर का
८३	पउमावइदेवी		पद्मावती देवी
८५	पट्टयं		पाट पर
८५	पासणयाए		देखने के लिए
८५	पडिच्छंतु		स्वीकार करो-ग्रहण करो
८७	पव्वावेइ		दीक्षित करते हैं
६१	पुत्तए		पुत्र
६५	पुरग्रो		सम्मुख
६६	पाणेहि		चण्डालो के द्वारा
६८	पण्णास		पच्चास
६८	परियाग्रो		अवस्था, दीक्षाकाल
६८,७२	पिया		पिता
७६	परिभाइत्ता		भाग करके
७७	पव्वइत्तए		प्रव्रजित होना
७८	पुव्वभवे		पूर्वभव मे
७६	पडुमहुरं		पांडु मथुरा को
७६	पुढविसिलापट्टए		पृथ्वी शिला पट्ट पर

शब्द	प	अर्थ
७६	पीयवत्थपच्छाइयसरीरे	पीत वस्त्र से ढके शरीर वाले
८०	पुंडेसुजणवएसु	पुण्ड्र नामक जनपद मे
८०,८८,१४०	पाउणिता	पालन करके
३१,३४,७५	पच्चक्खं	प्रत्यक्ष, साक्षात्
३२	पुत्ता	पुत्र
	पाउब्भूए	प्रगट हुए
३३,४१	पडिगए	लौट गये
३४	पयाइस्ससि	जन्म देगी
३६	पडिमा	प्रतिमा–मूर्ति
३६	पायच्छित्ता	दु.स्वप्न का–प्रायश्चित्त करके
३६	पुप्फच्चरण करेइ	फूलो का पुंज चढाती है
३८	पसवसि	जन्म दिया
३६	पप्फुयलोयणा	विकसित नेत्र वाली
३६	पेहमाणी	देखती हुई
४०,८१,८४	पच्चोरुहइ	उतरी
४१	पत्थिए	प्रार्थित
४१,४२,४६	पयाया	जन्म दिये
४१,४२	पायवदिए	चरण वदन के लिये
४२,५६,४८	पासइ	देखती है।
४४	पगिण्हइ	ग्रहण करता है।
४५	पव्वइस्सइ	प्रव्रजित होगे
४५	पायग्गहण	चरण वन्दन
४५	पासित्ता	देखकर
४५	पडिबुद्धा	जागृत हुई

शब्द	प	अर्थ
४५	परिवहइ	वहन करती है।
४८	परिक्खित्ता	घिरी हुई
४६	पक्खिवह	प्रक्षिप्त करो–पहुँचा दो
४६	पच्चप्पिणंति	आज्ञा वापिस करते हैं।
५२	पासित्तए	देखना
४३	पुव्वावरण्हकालसमयंसि	दिन के चौथे पहर मे
५४	पडिलेहेइ	प्रतिलेखना करते है।
५४	पब्भारगएण	झुकाए हुए,
५४	पाए	पैरो को
५५	पुव्वणिग्गए	पहले निकले हैं
५५	पत्तामोडय	अग्रभाग मे मोड़े हुए पत्र
५५	पडिणिवत्तइ	लौट रहा था
५५	पविरलमणुस्संसि	मनुष्यो के आवागमन से रहित
५५	पक्खिवइ	प्रक्षिप्त करता है
६३	पुरिससहस्स वाहिणीए	हजार मनुष्यो से वहन करने योग्य
६५	पुप्फारामे	पुष्पोद्यान, फुलवाडी
६५	पासाईए	प्रमोद उत्पन्न करने वाला।
१०८	पडिम	प्रतिमा–अभिग्रह को
१०१	पलसहस्स	हजार पल (भार) का
६६	पच्छिपिडगाइ	वास की छाबडी को
	पडिवज्जइ	ग्रहण करना है
६६	पुप्फुच्चय	पुष्प चयन
६७	पमोए	प्रमोद मनाने का पर्व

शब्द	प	अर्थ
९७	पभूयतरएहिं	बहुत अधिक
९७	पच्चूसकालसमयसि	प्रभातकाल के समय
९९	पडिसुणेति	सुनते है
९९	पच्छण्णा	प्रच्छन्न-छिपे हुए
१००	पावेज्जमाण	प्राप्त करते हुए
१०२	पच्चप्पिणह	पीछे अर्पण करो
१०५	पुत्ता	हे पुत्र !
१०५	पत्तं	पधारे, प्राप्त
१०६	पायविहार चारेण	पाद विहार की गति से
१०६	पहारेत्थ गमणाए	जाने को प्रस्थान किया
१०७	पमज्जइ	परिमार्जन किया
	पूव्वि	पहले
१०९	परिघोलेमाणे	चारो ओर घूमता हुआ।
१०९	पुरओ	समक्ष
१०९	पाउब्भूए	प्रगट हुआ
१०९	पडिगए	लौट गया
११२	पावयण	प्रवचन
११२	पचमुट्ठिय	पच्च मौष्टिक (लोच)
११४	पडिदसेइ, पडिदसिता	दिखाते है, दिखाकर
११५	पयत्तेण	प्रयत्नपूर्वक
११५	परियागं	पर्याय
११६	पाउणइ	पालन करता है
१२०	पण्णत्तीए	भगवती सूत्रानुसार
१२२	पविसह	रहते हो

	शब्द	अर्थ
	प	
	पव्वइत्तए	दीक्षित होने को
१३५	पारेइ	पारणा करती है
१३५	पारित्ता	पारणा करके
१३६	पढमा	प्रथम
१३६,१३७	परिवाडी	परिपाटी शैली
१३६,१६५	पुव्वरत्तावरतकाले	पिछली-रात्रि मे
१४०	पुरिसक्कार	पुरुषार्थ
१४०	परक्कमे	पराक्रम
१४०	पडिपुण्ण	प्रतिपूर्ण
१४८	पडिगाहेइ	ग्रहण की
१४८	पाणगस्स	पानी की
१६२	पण्णरस	पन्द्रह
	पढमबितियवग्गे	प्रथम और द्वितीय वर्ग मे
	फ	
१३	फासेइ	स्पर्श करता है
१२	फासित्ता	स्पर्श करके
	फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहि	वजती हुई मृदगो से
५६	फुल्लियकिसुयसमाणे	खिले हुए किसुक फूल के समान

शब्द	ब	अर्थ
८	बलवग्ग	सैनिक दल
१०	बालत्तणं	बाल्यकाल, बचपन
११	बहूहिं	बहुत से
२२	बहिया	बाहर
२२	बत्तीसाए	बत्तीस
२२	बत्तीस हिरण्ण कोडीओ	बत्तीस करोड का धन
३४,३६	बालत्तणे	बचपन मे
३६	बालप्पभिइ	बाल्यकाल से लेकर
४०,८१	बाहिरिया	बाहर की (बैठक)
४१	बालत्तणए	बाल चेष्ठा
६३	बहुकम्मणिज्जरट्ठं	बहुत कर्मों की निर्जरा के लियें
७३	बारसगो	बारह अंगो के ज्ञाता
९६	बालप्पभिइ	बाल्यकाल से
११३	बहवे	बहुत
१३०	बोधव्वा	जानने चाहिये
१५८	बीसइमं	नव उपवास का तप
१६७	बेमि	कहता हूँ

भ

२,५	भते	हे भगवन्
२	भगवया	भगवान ने
१३	भिक्खुपडिमं	भिक्षुप्रतिमा को
२०	भारिया	पत्नी
२२	भुंजमाणे	भोगते हुए
२७	भायरा	भाई
२७	भद्दलया	भद्र, सुन्दर

शब्द	भ	अर्थ
३०	भत्तघरे	रसोईघर, पाकशाला
३१	भत्तपाण	आहार-पानी
३१	भुज्जो-भुज्जो	वार वार
३४	भरहेवासे	भरत क्षेत्र में
३६	भविस्सइ	होगी
३६	भत्ता	भक्त-भोजन
३८	भत्तिबहुमाणसुस्सूसाए	भक्ति-बहुमान पूर्वक सेवासे
५६,६५	भीए	भयभीत
४६	भडचडगरपहकरवदपरिक्खित्ते	अनेक योधा समूह से घिरे हुए
६३	भगव	भगवान्
६६	भत्ते	भक्त
१०५	भविस्सइ	होगी
११२	भावेमाणस्स	भावित करते हुए
११३	भाया	भाई
११३	भगिणी	बहिन
११३	भज्जा	भार्या-पत्नी
१२२	भिक्ख	भिक्षा को

म

२,१०	महया	महान्
२१	मेहे	मेघकुमार
२३	मासिय	एक मास की
२६,६८,७२	माया	माता
२७	मुंडा भवित्ता	मुंडित होकर
२७	मा	मत

म

	शब्द	अर्थ
३४	मिच्छा	मिथ्या, असत्य
६६	महरिह	बहुमूल्य
४१	मण्णे	मानती हूँ
४१	महुर	मधुर
४१	मंम्मणपजंपियाइं	मम्मण शब्द की बोली
४१	मुद्धयाइ	मुग्ध, भोले
"	मजुलप्पभणिए	मधुर बोलता है
४७	माहणे	ब्राह्मण
४७	माहणी	ब्राह्मणी
४८,५६	मज्झमज्झेणं	मध्य मध्य से
५०	महिलिया वज्ज	स्त्री परिवार को छोड कर,
५२	माणुस्सया कामा	मनुष्य सबधी काम भोग
५४	महाकालंसि सुसाणंसि	महाकाल श्मशान मे
५६	मट्टिय	मिट्टी
५६	मत्थए	मस्तक पर
५६	महई महालयाओ	बहुत बडी ईंट की राशि से
८५	मणुण्णा	मनोज्ञ-सुन्दर
८५	मणामा	मन के अनुकूल
६५	मालागारे	माली
६५	मह	बडा
६५	मोग्गरपाणिस्स	मुद्गर पाणि यक्ष का
८१	माडबिए	माडम्बिक, मडम्ब सन्निवेश विशेष का स्वामी

	शब्द	अर्थ
	म	
१०१	महापहेसु	राजमागा पर
१०७	मए	मेरे द्वारा
१०७	मुच्चिस्सामि	मुक्त होऊ गा
११०	मुहुत्त तरेण	मुहुर्त भर के बाद
११३	महल्ला	बडे, वृद्ध
११३	माया	माता
१५६	महालय	महान्
	य	
१२१	य	और
	र	
८,८५	रेवयए	रैवतक (पर्वत)
८	रुप्पिणी	रुक्मिणी
१०,१२०	रण्णो	राजा के
१०	रायवरकन्नाण	श्रेष्ठ राज कन्याओ का
२०	रिद्धत्थिमिय समिद्धे	धनधान्य युक्त, निर्भय एवं समृद्ध था
४७	रिउव्वेय जाव	ऋग्वेद यावत्
४८	रायमग्गे	राजमार्ग मे
५१	रायाभिसेएणं अभिसिंचिस्सामि	राज्याभिषेक से अभिषिक्त करूंगा
५२	रज्जसिरि	राज्य लक्ष्मी को
५९	रत्थापहाओ	रथ्या मार्ग से
७७	रज्जे	राज्य मे

र

	शब्द	अर्थ
९२	रायगिहे	राजगृह नगर मे
९३	राया	राजा
९५	रायगिहस्स	राजगृह के
९६	रायमग्गसि	राजमार्ग पर
१२६	रायसिरिं	राज्य लक्ष्मी को
	राइंदिएहिं	रात दिनो से

ल

३५	लहुकरण	छोटे कान वाला
४८	लद्धट्ठे समाणे	अर्थ प्राप्त करने पर
११२	लोय	लोच
१५६	लया	लता

व

१,८,१०,२०	वण्णओ	वर्णित–वर्णन किया हुआ
१	वणसडे	वनखण्डे, वन प्रदेश
२	विहरमाणे	विहार करते हुए
२,१३,२७,४४	वयासी	बोले
५	वग्गा	वर्ग
६	बारवई	द्वारिका
११	वि	भी
१२,१६	बारवईओणयरीओ	द्वारिका नगरी से
१३	विहरित्तए	विहार करने
१६,१२९	वगस्स	वर्ग का
१६	वण्हीपिया	अंधक वृष्णि पिता
१६,१३०	वासाइ	वर्ष

शब्द		अर्थ
	व	
२२,१३०	वीस	बीस
३०	बारवईएणयरीए	द्वारिका नगरी में
३२,७५	वित्थिण्णाए	विस्तृत-चौड़ी
३३	वयइ वइत्ता	बोले, कहकर
३४,३५	वागरिया	कहा था
३८	विणिहायमावण्णे	मरे हुए बालक,
३९	विव	तरह
४४	विदिएण	दिया
४८	विम्हिए	चकित हुए
५०	वज्ज	छोड़कर
५२	वतासवा	वमन गिरने वाला
५२	विप्पजहियव्वा	त्यागने योग्य
५५	वीइवयमाणे	जाते हुए
५५	विप्पजहित्ता	त्याग कर
५६	वेरणिज्जायणं	वैर का बदला
५७	वेयणा	वेदना
५७	वुट्ठे	वृष्टि हुई
६५	विण्णायमेय	अच्छी तरह जान लिया
७८	वुच्चइ	बोले
७९	वामेपाए विद्धे	बाये पाव मे विध जाने पर
८१	वग्गइ	वल्गना करते-शब्द करते
८१	वयह	कहो
९३	विहरइ	विचरण करता है
९५,	वण्ण	वर्ण
९६	वराइ	श्रेष्ठ

व

	शब्द	अर्थ
९६	वित्ति	वृति
९८	विउलाइ	विपुल
१०१	वियाणित्ता	जानकर
१०२	वावन्नी	आपत्ति, हानि
१०१	वीइवयमाण	जाते हुए
१०७	वत्थ	वस्त्र
१०६	विप्पजहइ विप्पजहित्ता	छोडता है, छोडकर
११०	विप्पमुक्के समाणे	विप्रमुक्त होने पर
११५	विउलेणं	विपुल
११७	विपुले पव्वए	विपुल पर्वत पर
१२०	वण्णओ	वर्णन के योग्य
१२८	वाणारसीए नयरे	बनारसी नगरी में
१३७	विगइवज्ज	विगय-रहित
१६२	वुड्ढीए	वृद्धि से
१६३	वड्ढति	वढती है

स

२	सुहम्मे	सुधर्मास्वामी
२,१४	सद्धि	साथ
२	संपरिवुडे	परिवृत, घिरे हुए
२,२१,४५	सुहमुहेण	सुखपूर्वक
२	समोसरिए	पधारे
२	सुहम्मस्स	सुधर्मा स्वामी के
२,५,६	समणेण	श्रमण (भगवान महावीर)

स

	शब्द	अर्थ
८	सट्ठीए साहस्सीण	साठ हजार
८	सोलसण्ह साहस्सीण	सोलह हजार
८	सत्थवाह	सार्थवाह
८	समत्तस्स	समस्त, सपूर्ण
१०	सयणिज्जसि	शय्या पर
१०	सुमिणदसण	स्वप्न दर्शन
११,३२,७५	सोच्चा	सुनकर
११	सामाइयमाइयाइं	सामायिक आदि
१४,२७	सेत्तु जे	शत्रुजय पर्वत पर
१५	संपत्तेण	मोक्ष को प्राप्त (भगवान महावीर के द्वारा)
१५	सेसा	शेष
१६	सव्वे	सर्व
२०	समिद्धे	समृद्धिशाली
२०,२२	सिरीवणे उज्जाणे	श्रीवन नामका बगीचा
२०	सुरुवा	सुरूपवती
२०	सुकुमाला	सुकुमार, कोमल
२२	साइरेग	कुछ अधिक
२२	सरिसियाणं	समान
२२,२७	सरिसव्वयाण	समान उम्र वाले
२२,२७	सरित्तयाण	समान त्वचा वाले
२२	सरिसलावण्णरूवजोवण्णा गुणोववेयाणं	समान सौन्दर्य रूप यौवन आदि गुणो से युक्त
२२	सरिसेहितो	सरीखे, सदृश
२२,४८,७५	समोसढे	पधारे

स

	शब्द	अर्थ
२३	सेत्तु ंजे पव्वए	शत्रु ंजय पर्वत पर
२४	समत्तं	समाप्त
८५	सीय ठवेइ	शिविका (पालखी) स्थापन करता है रखता हैं
२५,४५	सीहोसुमिणे	सिह का स्वप्न
२७	सहोयरा	सहोदर, सगे भाई
२७	सिरिवच्छं	श्री वत्स चिन्ह
२७	समाणा	समान
२६	सज्झायं	स्वाध्याय
२६	सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ	सहस्राबवन उद्यान से
३०	समुदाणस्स भिक्खायरियाए	सामूहिक भिक्षा के लिये
३०	सत्तट्ठपयाइ	सात आठ कदम
३१	सीहकेसराणमोयगाणं	सिह केशरी लड्डुओ का
३२	ससारभउव्विग्गाभीया	संसार के भय से उद्विग्न भयभीत हुई
३४,४१,७६,१००	समुप्पएणो	उत्पन्न हुआ
३५,५६,१०३	सपेहेइ	विचार किया
३५,४६,८१,१०२	सद्दावेइ	बुलाता है
३४,४१,७६	समुप्पण्णो	उत्पन्न हुआ
३५,५६	सपेहेइ	विचार किया
३६	समुप्पज्जित्था	उत्पन्न हुआ
३८	समउउयाओ करेइ	एक ही समय मे ऋतुमतो करता है ।
३८	सममेव	एक साथ ही
३८	सपुडेण गिण्हइ	कर सपुट मे ग्रहण करता है

शब्द	स	अर्थ
३८	साहरइ	हरण करता है
३९	समूसियरोमकूवा	पुलकित, रोमवाली
३९	सुचिरं	बहुत काल तक
३९	सए	अपने
४०	सयणिज्जे	शय्या पर
४०	सयंसि सयणिज्जसि	अपनी शय्या पर
४१	सकप्पे	संकल्प
४१,८९	सरिसए	एक समान
४१	समुल्लावयाइं	आलाप
४३	सहोयरे भाउए	सहोदर भाई
४३	समासासेइ	सान्त्वना दी
४५	सव्वणयणकतं	सब के नेत्रो को कात
४७	सुपरिणिट्ठिए	सम्यग्ज्ञाता, सुपरिनिष्ठित
४८	सयाओ गिहाओ	अपने घर से
४८,७१	सद्धि	साथ मे
४८,५६	सकोरट मल्ल दामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेणं	कोरट के फूल की माल से युक्त छत्र को धारण करते हुए
५६	सेयवरचामराहिं	श्वेत चामरो से
५२,१६६	सचाएइ	समर्थ हुए
५२	सजमित्तए	सयम ग्रहण करने को
५४	साहट्टु	सकुचाकर
५५	सामिधेयस्स अट्ठाए	स मिधायज्ञ की लकडी के लिये

शब्द	स	अर्थ
५५	सरइ	स्मरण किया
५५	सरित्ता	स्मरण करके
५६,१४०	सेय	श्रेय, उचित
४६	सरसं	गीली
५७	सणिहिएहिंदेवेहिं	समीपवर्ती देवो के। द्वारा
५७,१४४	सम्म	अच्छी नरह
५८	सुरभिगधोदए	सुगधित जल
६०	साहिए	सिद्ध कर लिया
६२	साहिज्जे	सहायता
६५,१०६	सपक्खि	समान पक्ति मे
६६	सपडिदिसं	सम्मुख, प्रति दिशा मे
६६	सण्णिवडिए	गिर पडा
६८	सुमुहे	सुमुख नामक राजकुमार
	सिविच्छकियवच्छा	श्रीवत्स से अंकित वक्षस्थल वाली
७५	सुरग्गि दीवायणमूलाए	मदिरा, अग्नि और द्वैपायन ऋषि के कारण
७७	संचाएमि	समर्थ हूं
७७	समट्ठे	समर्थ
८०	सयदारे	शतद्वार नगर में
८०	सिज्झिहिसि	सिद्ध होगे
८१	सीहणाय	सिंहनाद
८३,११२	सद्दहामि	श्रद्धा करता हूं
८५	सोवण्णकलसेण	सोने के कलश से
८६	सवणयाए	सुनने को
८५	सिस्सिणी भिक्ख	शिष्या रूप भिक्षा

स

	शब्द	अर्थ
८५,११२	सयमेव	स्वयमेव, अपने हाथो से (स्वय ही)
८८	सामण्णपरियागं	साधु पर्याय
९२,९३०	सेणिए	राजा श्रेणिक
९३	समणे	श्रमण
९३	से	वह, उसका
९३	सीयाए	शिविका से
९३	सामाइयमाइयाइं	सामायिक आदि
९३	सेस	शेष
९५	सुकुमालपाणिपाया	सुकुमार हाथ पैर वाले
८८,९७	सद्धिं	साथ
९७,१०६	सयाओ	अपने
९८	सेय	श्रेय है
१००	सण्णिहिए	समीपस्थ
१००	सुव्वत्तं	सुस्पष्ट
१०१	सिंघाडग	सिंघाडे के आकार का मार्ग
१०३	समणोवाससए	श्रमणोपासक, श्रावक
१०५	सरीरयस्स	शरीर को
१०६	सेट्ठिं	सेठ को
१०६	संचायंति	समर्थ होते हैं
१०६	सुद्धप्पवेसाइं	शुद्ध वस्त्र धारण किये
१०७	सागार	आगार सहित
१०९	सव्वओसमंताओ	चारो ओर से
१०९	सपडिदिसिं	विरुद्ध दिशा मे
१०९	सुचिरं	बहुत देर तक

स

	शब्द	अर्थ
११३	सुण्हा	पुत्र वधू
११३	सयण सबंधि परियणे	स्वजन सबधी और परिजन को
१२१	सपरिवुडे	घिरा हुआ
१२२	सएगिहे	अपना घर
१२६	सएहिंकम्मायणेहि	अपने कर्म यतनो से (कर्मों के अनुसार)
	समभिपडित्तए	मुकाबले मे गिराने मे, हराने मे
१३४	सव्वकामगुणिय	इच्छाऽनुकूल, विगय-सहित
१३६	संवच्छरेणं	वर्ष से
१४०	सपेहेइ	विचार किया
१४०	सामण्ण परियांग	श्रमण पर्याय
१६४	सोलसम	सात उपवास का तप
१६५	सेणियभज्जाण	राजा श्रेणिक की रानियो के
१६७	सुयक्खधो	श्रुतस्कन्ध
	सइरं	स्वेच्छानुसार
१३६	सुहुयहुयासणे	अच्छी तरह हवन की गई अग्नि

ह

	शब्द	अर्थ
१,६,१०,२०	होत्था	था
१,१०	हिमवंत	हिमवान पर्वत
६	होइ	है

ह

	शब्द	अर्थ
३०	हरिसवसविसप्पमाणहियया	हर्ष के कारण बढते हुए हृदय वाली
३६	हव्वमागया	जल्दी आई
३६	हरिणगमेसिस्स	हरिण गनेषी देव की
३९,४५	हट्ठतुट्ठ	हृष्ट-तुष्ट, प्रसन्न
४१,४२	हव्वमागच्छइ	शीघ्र आती है, जल्दी आयी
४४,४५	होहिइ	होगा
४६	होऊण	होकर
४८,५९	हत्थिखधवर गए	हाथी के स्कध पर आरूढ
११३	हीलंति	हीलना करते है

❀ समाप्त ❀

शुद्धि-पत्र

अशुद्ध शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध शब्द
सुरघिए	६	६	सूरघिए
दुद्द त माहस्सींण	७	४	दुद्द तसाहस्सोण
रायवर कन्नाण	८	१४	रायवरकन्नाण
	१२	१०	इति प्रथम वर्ग
अट्ठ वास-जाय	१७	१६	अट्ठास-जाय
सेत्तु जे	२०	२	सेत्तुजे
सीहोसुमिणे	२०	१२	सीहो सुमिणे
जतेवा सी	२१	१०	अ तेवासी
पव्वनइया	२१	१५	पव्वइया
सहस्सव वणाओ	२३	४	सहस्सववणाओ
पोईमणा	२३	१७	पीइमणा
वदित्ताण मंमित्ता	२६	१८	वंदित्ता णमसित्ता
अरिठ्ठणे मि	२६	१८	अरिट्ठणेमि-
पयायिस्सति	२८	५	पयाइस्सति
सरिसए	२८	७	सरिसए
करइ	३०	१	करेइ
भक्ति-बहुमाणसुस्ससाए	३०	६	भत्ति-बहुमाणसुस्सूसाए
गेण्णित्तातव	३१	२	गिण्हित्ता तव

अशुद्ध शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध शब्द
चरण	३१	३	च रण
वदिता	३२	७	वदित्ता
समूसियरोमकून्वा	३२	३	समूसियरोमकूवा
उवागच्छत्ता	३३	२	उवागच्छित्ता
सत्तपुत्ते	३३	१२	सत्त पुत्ते
दोव	३५	२०	देवि
सहोयदरे	३६	१	सहोयरे
देवइ	३६	२	देवई
पडिणिक्ख मित्ता	३६	७	पडिणिक्खमित्ता
अट्ट मत्त	३६	९	अट्ठमभत्त
वयार्सी	३६	१०	वयासी
देवाणप्पिया	३६	१७	देवाणुप्पिया
जोव्वणगमणप्पत्ते	३६	१८	जोव्वणगमणुप्पत्ते
मुन्डे	३६	१९	मु डे
जीवयलक्खरस	३८	२	जीवय-लक्खरस
परिविखत्ता	३९	९	परिक्खित्ता
णयरीएमज्झमज्झेण	४०	३	णयरीए मज्झ मज्झेण
गयसुकुमालस्स । भारिया	४०	१६	गयसुकुमालस्स कुमारस्स । भारिया
उद्द् वमाणाहिं	४०	३	उद्ध् वमाणेहिं
वड्ढ्य कुने	४१	१२	वड्ढ्यकुले
महिलया	४१	१२	महिलिया

अशुद्ध शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध शब्द
थण्डिलपडिलेहेइ पडिलेहित्ता उच्चारपासवरण भूमि	४५	१	थण्डिल उच्चारपासवरण भूमि पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता
अहा सरिगहिएहि	४७	१६	अहासरिगहिएहि।
भडचडगरपहु-कर-वदपरिक्खित्ते	४८	४	भडचडगर पहुकर-वदपरिक्खित्ते
जाव वदित्ता	४९	१४	जाव वदइ रगमसइ, वदित्ता
वदइ	५०	१५	वदइ
अप्पत्थिय पत्थए	५१	६	अप्पत्थियपत्थए
तण्णा	५३	८	तएरग
वासाव	५६	७	वासाइ
सोलस्स	६०	१	सोलस
एव	६	३०	एव
वगस्स	६०	१४	वग्गस्स
सेसजहा	६०	१	सेस जहा
भत्ते	६१	१	भते
अरटठरोमी	६२	८	अरिट्ठरोमी
वासदेवे	६३	१	वासुदेवे
केण्ट्ठेरा	६५	१२	केरगट्ठेरग
त्तिक्खेरणं	६६	१२	तिक्खेरग
सएगिहे	६८	६	सए गिहे
अरिट्ठरोमिस्म	६९	६	अरिट्ठरोमिस्स
अरणुजारगइ	६९	८	अरगुजारगइ
इड्ढमक्कारसमुदएरगा	६९	८	इड्ढिसक्कार समुदएरग

अशुद्ध शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध शब्द
अ ग्रो	७१	१	अन्हओ
उवट्ठवेह	७१	१०	उवट्ठवेह
[illegible]त्ता	७२	१५	वत्तित्ता
ईरियाम[illegible]मिया	७४	४	इरियामभिया
सट्ठि भत्ताइ	७५	३	सट्ठिभत्ताइ
[illegible]	७७	१२	नवम्मा
अहाण०	७७	४	अहीण० ।
वितिघर	७८	६	वितिघरे
मरण भो ।	७८	१७	मरण भंते ?
ईरियामभिए	७६	१५	इरियामभिए
पासाईए	८१	१७	पासाइए
परिवाई	८३	१२	परिवनइ
मोगर पाणिअक्खाययणे	८६	२	मोग्गरपाणि जक्खाययणे
मोगर पाणि जक्ख	८७	७	मोग्गरपाणिजक्खे
अणुप्पविसिता	८०	६	अणुप्पविसित्ता
परिरक्खेण	८७	१७	परिरक्खेण
पाणमाणे	८८	४	पायमाणं
[illegible]	८८	१७	[illegible]
मोट्ठि	६२	८	मोट्ठि ?
[illegible]मोवाए	६२	४	पमरोवागए
[illegible]गामि	६४	६	गच्छगामि
[illegible]	६५	८	मयोमय

अशुद्ध शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध शब्द
सु-दसणस्य	९६	१	सुदसणस्य
त्रिकट्ट	९६	१४	तिकट्ट
उठिता	९७	२	उट्ठित्ता
तएग	९९	१	तएग
अणिक्खेत्तेण	९९	१०	अणिक्खित्तेण
अयमेवारूव	९९	१२	अयमेयारूव
इत्याओ	१००	७	इत्थीओ
उच्चणाय	१००	६	उच्चणीय
अणसणाए	१०३	२	अणसणाइ
वणियगामे	१०५	१३	वाणियगामे
पोलासपुर	१०७	५	पोलासपुरे
अइमुत्त	१०८	१	अइमुत्ते
डिमियाहि कुमारएहि	१०८	६	डिभियाहि य कुमारएहि
अदूरसामतेण	१०८	१४	अदूरसामतेणं
अब्मुट्ठेइ	१०९	१६	अब्भुट्ठेइ
वहियासिखिणे	११०	५	वहिया सिखिणे
गोयमेण	१११	१	गोयमेण
तुमपुत्ता	११२	४	तुम पुत्ता
सुमरुयामहमरुया	११७	४	सुमरुया महमरुया
ूत्र	११७	१५	सूत्र
तहेव य ॥	११८	१५	तहेव य ॥१॥
कोणियस्य	१२०	८	कोणियस्स

अशुद्ध शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध शब्द
भावेमाणे	१२०	११	भावेमाणी ?
तारित्ता	१२४	५	पारित्ता
अट्ठछट्ठाइ	१२५	१	अट्ठ छट्ठाइं
उवागच्छित्ता	१२६	१६	उवागच्छित्ता
अज्जचदगे	१२६	१६	अज्ज चदणा
वदिइ	१२६	१६	वदइ
सद्धाघिई	१२८	२	सद्धा घिई
वा	१२८	२	जाव
जावविहरित्तए	१२८	१८	जाव विहरित्तए
अप्पाणझूसिता	१२८	८	अप्पाण झूसिता
खुड्डाग	१३२	१	खुड्डाग
सव्वकामगुणमि	१३२	७	सव्वकामगुणिय
सव्वकामगुणय	१३२	१४	सव्वकामगुणिय
चउद्दसम	१३२	२	चउद्दसम
सव्वकायगुणिय	१३३	५	सव्वकामगुणिय
सव्वकागुणिय	१३३	६	सव्वकामगुणिय
सव्वकामगणिय	१३३	१६	सव्वकामगुणिय
सलमम	१३४	२	सोलमम
चउत्थ	१३४	११	चउत्थ
चउत्थ	१३४	१३	चउत्थ
दति	१३८	१	दत्तिं
एक्केक्का	१३८	?	एक्केक्का

अशुद्ध शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध शब्द
तवोकम्महि	१३८	१८	तवोकम्मेहिं
करिता	१४०	७	करित्ता
सव्वकागुणिय	१४१	३	सव्वकामगुणिय
करत्ता	१४४	८	करित्ता
छट्ठ	१४४	६	छट्ठ
सव्वकामगुणिय	१४४	१६	सव्वकामगुणिय
पारित्त	१४५	१५	पारित्ता
चउद्दसम	१४७	४	चउद्दसन
सव्वकामगणिय	१४७	५	सव्वकामगुणिय
सव्वकागुणिय	१४७	१२	सव्वकामगुणिय
करइ	१४८	१	करेइ
करत्ता	१४८	१३	करित्ता
सव्वकागुणीय	१४८	१३	सव्वकामगुणिय
से स तहवे	१४६	१४	सेस तहेव
भद्दोतरपडिम	१५०	२	भद्दोत्तर पडिम
उवसपज्जित्तण	१५०	२	उवसपज्जित्ताण
पारिता	१५०	१६	पारित्ता
सव्वकामगुणिया	१५१	५	सव्वकामगुणिय
चौसददम	१५१	११	चौद्दसम
गरेइ	१५२	२	करेइ
सव्वफामगुणिय	१५२	१०	सव्वकामगुणिय
तवोकम्म	१५४	१	तवोकम्म

अशुद्ध शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध शब्द
तलहा	१५४	२	तंजहा
सव्वकामगुणिय	१५४	१५	सव्वकामगुणिय
सुव्वकामगुणिय	१५५	४	सव्वकामगुणिया
अट्ठाउवीसइम	१५६	१२	अट्ठावीसइम
वड्ढीए	१५८	११	वुड्ढीए
आयविलड्ढमाण	१५६	१	आयविलवड्ढमाण
सत्तरस्त	१६०	३	सत्तरस
एकात्तरीयाए	१६०	१३	एकोतरियाए
सेणियभज्जा ण	१६०	१४	सेणियभज्जाण
षष्टम् वर्ग अ ३]	१११	सबसे ऊपर	षष्टम वर्ग अ १५]
पडिवध	१११	१८	मा पडिबध
वदइ ।	१३६	१८	वदइ णमसइ,
ओरालेण	१३६	१	ओरालेण जाव सिद्धा ॥५॥
सूत्र—२	६४	१	सूत्र—
जावज्जीवाए, ३	६४	२	जावज्जीवाए,

[illegible] पांचवें [illegible] वर्ग के [illegible] उद्देश वाचनान्तर की अपेक्षा [illegible] । [illegible] एवं दूसरे वर्ग के ८ उद्देश होते हैं।